ललित साहित्य माला का प्रथम पुष्प—

☆

गीतकार—

उपाध्याय श्री० अमरचन्द्र जी महाराज "कविरत्न"

☆

स्वरकार—

पं० विश्वम्भरनाथ भट्ट, एम ए, एल-एल. बी
(संगीत विशारद)

☆

प्रकाशक—

सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा
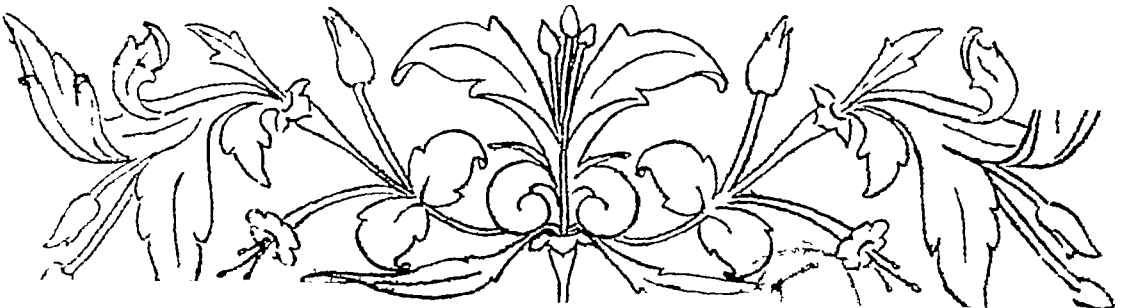
☆

वीर सम्वत् २५०६

प्रथम संस्करण   अगस्त १९४९

प्रकाशक—
सेठ रतनलाल जैन मीतल
मंत्री श्री सन्मति ज्ञानपीठ
लोहामंडी आगरा।

मूल्य
राज संस्करण [illegible]
साधारण संस्करण [illegible]

मुद्रक—
प्रभुलाल गर्ग
संगीत प्रेस, हाथरस।
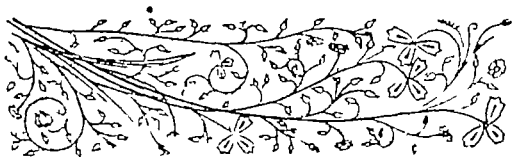
दो शब्द !

सगीत को छोड़कर कला-जगत में अन्य कोई ऐसा साधन नहीं है, जो मानव को आत्म-विस्मृति के सुरम्य क्षेत्र में लेजा कर एक अपूर्व एव अवर्णनीय शान्ति प्रदान करा सके।

सगीत के माध्यम से प्रेरित गभीर से गभीर दार्शनिक विचार धारा भी मानव हृदय पर सहसा एव चिरस्थायी प्रभाव डालती है। मैं कोई अत्युक्ति नहीं करूँगा, यदि यह कह दूँ कि इस दृष्टि से गीतों की भावनाओं का महत्व बहुत अधिक बढ़ जाता है।

आजकल सिनेमा के गीतों का प्रचार अत्यधिक हो रहा है, परन्तु सगीत के इस तामसी प्रचार ने आत्मकल्याण की अमर प्रेरणा प्रदान करने की अपेक्षा, जिन विनाशकारी दुर्भावनाओं को प्रोत्साहन दिया है, वह किस विचारशील व्यक्ति से छिपा हुआ है? सिनेमा के अधिकांश गीत नीतिशून्य नग्न श्रृङ्गारिक भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। दुर्भाग्य से ये ही गीत आजकल हमारे भविष्यकालीन देश निर्माता बालक, बालिकाओं और युवक—युवतियों के कण्ठहार हो रहे हैं। मानव जीवन के इस आवेश काल में मन स्वभावत: ही चंचल होता है, और ये सिनेमा गीत तो सचमुच उसे इतना विचलित कर देते हैं कि किसी साधारण प्रलोभन का त्याग भी ऐसे निर्बल मन के लिये दुष्कर हो जाता है।

इन्हीं भावनाओं से प्रेरित होकर मैंने अपने परम स्नेही मित्र श्री० विश्वम्भर नाथ भट्ट से, श्रद्धेय कविरत्न उपाध्याय श्री अमर चन्द्र जी महाराज के आध्यात्मिक
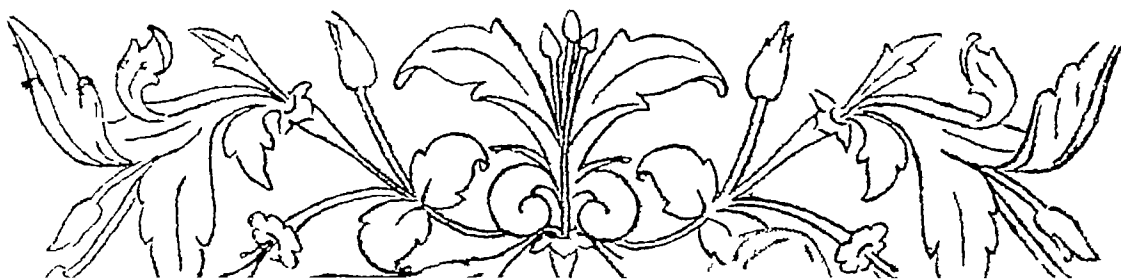
गीतों की स्वरलिपियाँ तैयार करने का आग्रह किया। मुझे हर्ष है कि कार्य भार अधिक होने पर भी समय निकाल कर जिस लगन, उत्साह और शीघ्रता से भाई जी ने इस कार्य को पूर्ण किया है वह अवश्य ही सराहनीय है परन्तु इसके लिये धन्यवाद देना तो साधारण शिष्टाचार की बात होगी। मेरे और उनके बीच आत्मीयता की जो धारा इतने वर्षों से प्रवाहित हो रही है उसके कारण यह उचित भी प्रतीत नहीं होता। मेरी हृदय से यह शुभकामना है कि वे अपने क्षेत्र में और भी अधिक यशस्वी बनें।

मेरा अनुमान है कि 'संगीतिका' के गीतों की स्वरलिपियाँ जैन-समाज के द्वारा अवश्य ही समादरित होंगी। आशा है उत्तम भावपूर्ण गीतों को परिचित 'धुनों' (तर्जों) में ढल कर हमारा नवयुवक समाज उन गीतों की उपेक्षा नहीं करेगा। हमारे बालक और बालिकाओं के संगीत के अध्ययन में इन गीतों को स्थान मिलने से निश्चय ही उनके हृदय में आत्म-कल्याण की अमर भावना जागृत होगी। संक्षेप में 'संगीतिका' का यही मूल उद्देश्य है और यही इसके जन्म की कहानी भी है। अधिक क्या?

'रतन निवास'
लोहामंडी
आगरा
१ जून १९५४

(सेठ) रतनलाल जैन मीतल
प्रधान—मन्त्री—
'सन्मति ज्ञान पीठ'
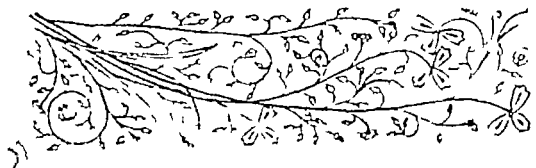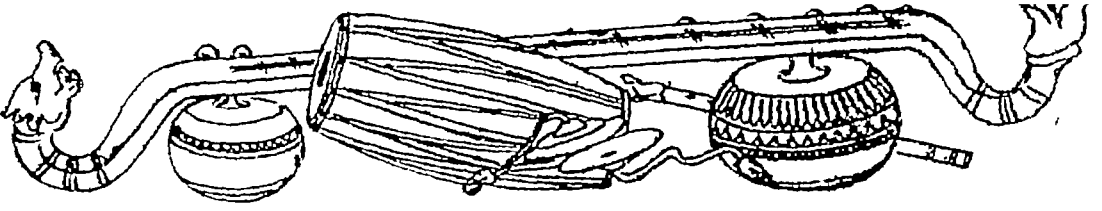
अपनी बात !

'संगीतिका' की सृष्टि में ऐसी कोई विशेष बात नहीं है, जिसे मैं अपनी कह सकूँ। गीत श्रद्धेय उपाध्याय कविरत्न श्री० अमरचन्द्र जी महाराज द्वारा प्रणीत है और इन गीतों को स्वरलिपि का रूप देने की मधुर प्रेरणा मिली है मुझे समादरणीय श्री रतनलालजी जैन (मीतल) की ओर से। उन्हीं के आग्रह से मैंने कवि श्रीजी के गीतों को परिचित धुनों, अथवा रागों में लिपिबद्ध करने का यह लघुतम प्रयास किया है। अब ये स्वरलिपियां जैसी भी हैं, आपके समक्ष हैं, इनकी रोचकता, सरसता और शास्त्रीयता का निर्णय आप सहृदय पाठक यथावसर कर ही लेंगे।

इन स्वरलिपियों में से आधी से अधिक स्वरलिपिया ऐसी हैं जिनकी रचना लोकप्रिय 'सिनेमा-गीतों' के आधार पर हुई हैं। कुछ गीत ऐसे भी हैं, जिन्हें शास्त्रीय संगीत के दरबारी, गौड़मल्हार, शंकरा, आसावरी इत्यादि प्रचलित रागों के स्वरों में तालबद्ध कर दिया गया है। शेष गीत या तो गजल अथवा भजन इत्यादि की उस साधारण शैली के अनुरूप लिपिबद्ध हुए हैं जिनमें उन गीतों को गाए जाने का पहले से ही प्रचार होगया है अथवा रागदारी संगीत एवं प्रचलित 'सिनेता गीतों' के समन्वय से उन्हें किसी नवीन धुन का रूप दे दिया गया है। इस प्रकार मैंने इन गीतों को विभिन्न पाठकों की रुचि के अनुकूल बनाने की चेष्टा की है। प्रस्तुत संग्रह में उन लोगों की रुचि के अनुकूल भी गीत हैं, जिन्हें केवल रागदारी ही प्रिय है, साथ ही उन लोगों के मनोरंजन का भी ध्यान रखा गया है, जो केवल 'सिनेमा गीतों' या चलती हुई धुनों को पसन्द करते है। जिस गीत की स्वरलिपि किसी राग विशेष के आधार पर निर्मित है, उस स्वरलिपि पर उस राग का नाम दे दिया गया है तथा जो गीत 'सिनेमा गीतों' के आधार पर लिपिबद्ध हुए हैं उन्हें पाठक पहिचान ही लेंगे कि इसकी धुन कोनसे फिल्म गीत से मिलती है। जिन गीतों के आरम्भ या अन्त में कोई संकेत नहीं है, वे गीत या तो उन स्वरों की बन्दिश में है जिनमें उन्हें गाये जाने का प्रचार हो गया है, अथवा उन्हें किसी मिश्रित नवीन धुन का रूप दे दिया गया है।
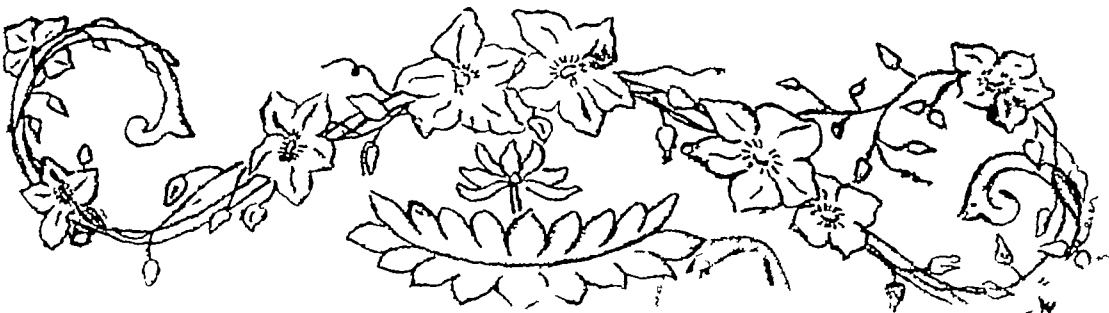
'संगीतिका' के गीतों में आध्यात्मिक पक्ष का प्राधान्य है। कहीं-कहीं सामाजिक भावना भी इन गीतों का अङ्ग बन गई है परन्तु इसका स्थान गौण ही रहा है। आध्यात्मिक भावना के अनुसार ये गीत दया क्षमा सन्तोष शीलसत्य तथा परमात्म तत्व के अमूर्त स्वरूप को स्वीकार करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं तथा सामाजिक भावना के अनुसार इन गीतों में समष्टि तथा वैयक्तिक साधना का कल्याणकारी उपयोग निहित है। गीति काव्य वस्तुतः ऐसी रचना है जो प्रायः आकार में छोटी और कवि के आत्मगत भावों से ओत-प्रोत होती है। गीति काव्य अन्तर्जगत का काव्य है इसी कारण यह भावात्मक व्यक्ति प्रधान अथवा पूर्णतया आत्माभिव्यञ्जक होता है। विज्ञ पाठकों को कवि श्रीजी के सभी गीतों में ये विशेषतायें दृष्टिगोचर होंगी।

स्वरलिपियाँ बनाते समय मैंने मूल गीतों की भाषा में कहीं-कहीं थोड़ा सा परिवर्तन कर दिया है। अपनी इस धृष्टता के लिये मैं कवि श्रीजी से क्षमा प्रार्थी हूँ। स्वरलिपियों में प्रत्येक अक्षर को स्वर और ताल के साँचे में ढालते समय कहीं-कहीं ऐसा करना अतीव आवश्यक हो गया था इसीलिये यह मार्ग अपनाया गया है।

इन स्वरलिपियों की पांडुलिपि तैयार करने में मुझे चि० सोहनलाल नागर (सं० विशारद) चि० गजानन नागर (सं० विशारद) तथा चि० मदन पाठक ने बड़ी सहायता दी है अतः मेरा उन्हें हृदय से आशीर्वाद है।

संगीत-निकेतन
बल्काबस्ती आगरा
१ जून १९५९

विश्वम्भरनाथ भट्ट
(सम्पादक 'संगीत' हाथरस)
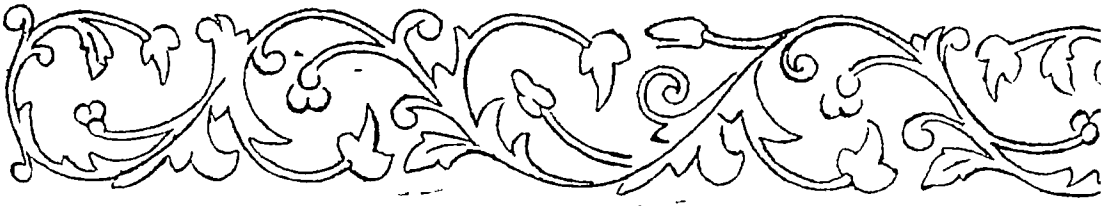
मं
ग
ल
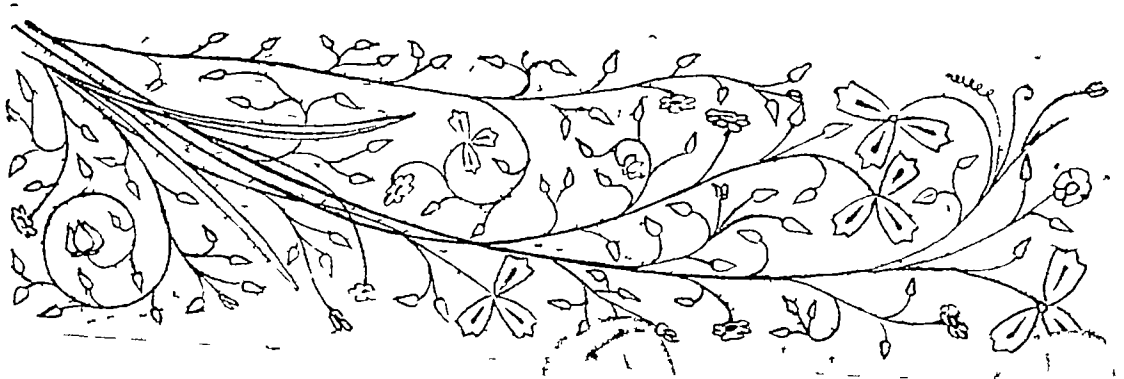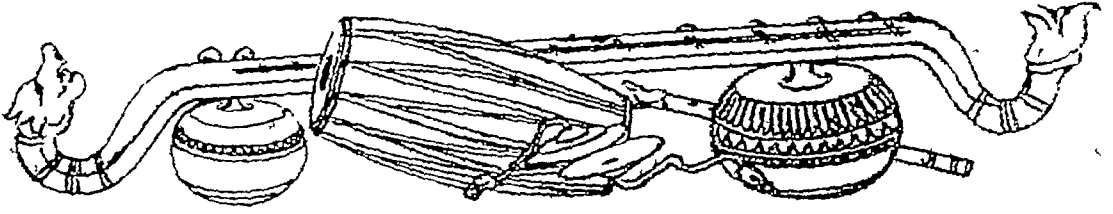
स्वरलिपियों का चिन्ह परिचय

प	जिन स्वरों के ऊपर नीचे कोई चिन्ह न हो, वे मध्य (बीचकी) सप्तक के शुद्ध स्वर हैं।
ध	जिस स्वर के नीचे पड़ी लकीर हो वे कोमल स्वर हैं। किन्तु कोमल मध्यम पर कोई चिन्ह नहीं होगा, क्योंकि कोमल 'म' शुद्ध माना गया है।
मं	तीव्र मध्यम इस प्रकार होगा।
नि	जिसके नीचे बिन्दी हो, वे मन्द्र (पहिली) सप्तक के स्वर हैं।
सं	ऊपर बिन्दी वाले स्वर तार सप्तक के हैं।
प -	जिस स्वर के आगे-जितनी लकीर हों, उसे उतनी ही मात्रा तक और बजाइये।
रा ऽ	जिस अक्षर के आगे ऽ चिन्ह जितने हों, उसे उतनी ही मात्रा तक और गाइये।
धप	इस प्रकार से जहा २ या ३ स्वर मिले हुए (सटेहुए) हों वे एक मात्रा में बजेंगे।
×।०	× सम, ० खाली, । ताली के चिन्ह हैं।
,	यह चिन्ह स्वरलिपियों में या तानों में अलग-अलग टुकड़े दिखाता है।
*	ऐसा फूल जहां हो, वहां पर १ मात्रा चुप रहना चाहिए।
⌒	स्वरों के ऊपर यह चिन्ह मींड़ देने के लिये होता है।
नि स	इस प्रकार किसी स्वर के ऊपर कोई स्वर हो, तो ऊपर वाले स्वर को जरा छूते हुए नीचे स्वर को बजाइये। इसे कण कहते है।
(म)	इस प्रकार कोई स्वर ब्रैकिट में बन्द हो, तो उसके आगे का स्वर और वह स्वर और पहिले का स्वर तथा फिर वही स्वर लेकर एक मात्रा में ही पमगम इस तरह बजाइए।
~~	यह चिन्ह स्वरों के ऊपर जमजमा देने के लिये होता है, अर्थात् स्वरों को हिलाना चाहिये।

राग पीलू मिश्र (कहरवा) स्थायी

×				×				×				×		प	प
														व	न्दे
–	ग	म	प	गम	गर	स	र	न	स	ग	म	प	–,	प	प
ऽ	व	र	सु	वीऽ	ऽऽ	र	सु	धी	ऽ	र	व	र	ऽ,	शा	न्त
–	ग	म	प	गम	गर	स	र	न	स	ग	म	प	–,	प	प
ऽ	दा	न्त	म	हाऽ	ऽऽ	न्त	स	दा	ऽ	प्त	त	र	ऽ,	व	न्दे

ऽ वीर सुवीर सुधीर वरम् (यह पक्ति प्रथम पक्ति के समान दुहराई जायगी)

अन्तरा (ठेका बन्द)

म	–	प	न	–	न	–	स	–	न	स	स	स	–	न	–	न	न	–
ये	ऽ	न	हिं	ऽ	सा	ऽ	मू	ऽ	क	प	शु	स	ऽ	हा	ऽ	रि	का	ऽ
न	न	पन	सर	न	ध	प	–	न	–	न	न	–	न	–	न	–	ध	न
वि	ल	यीऽ	ऽऽ	कृ	ता	ऽ	ऽ	शा	ऽ	न्ति	दा	ऽ	दे	ऽ	वी	ऽ	द	या
–	प	–	प	–	म	प	–	ग	स	सग	मप	म	प	–	–			
ऽ	स	ऽ	र्व	ऽ	त्र	स	ऽ	प्र	ति	साऽ	ऽऽ	रि	ता	ऽ	ऽ			

ठेका शुरू—

														प	प
														वी	त
–	ग	म	प	गम	गर	स	र	न	स	ग	म	प	–,	प	प
ऽ	द्वै	त	त	मीऽ	ऽऽ	हे	द	या	ऽ	सा	ग	र	ऽ,	व	न्दे
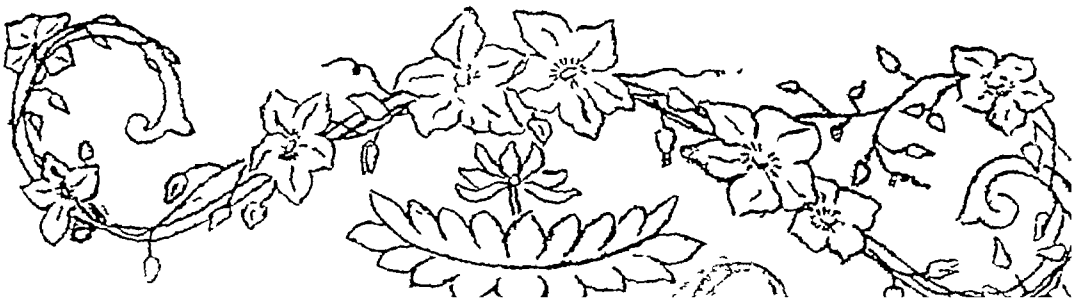
ऽ वीर सुवीर सुवीर वरम्, शान्त दान्त महान्त सदाप्त तरम् (इन पक्तियों को पहले की तरह दुहराइये) शेष अन्तरे इसी अन्तरा के समान बजाइये।
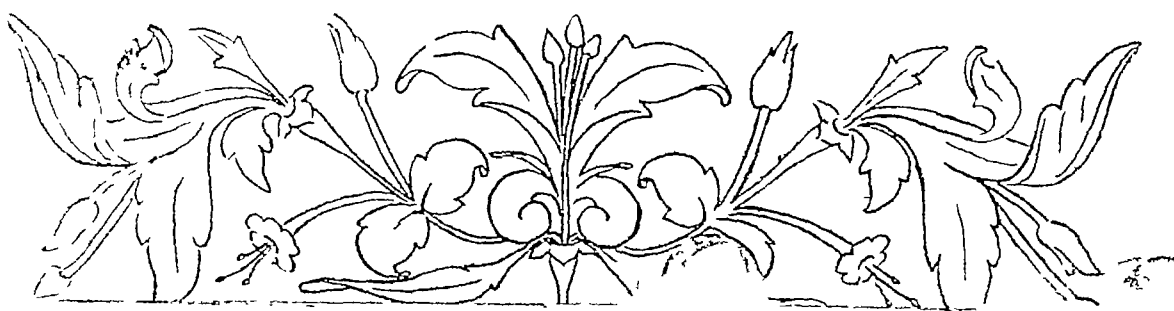
परमेष्ठी-महिमा

जय-जय-जय जयकार परमेष्ठी।

जय-जय भविजन-बोध-विधाता जय-जय आतम शुद्धि विधाता
जय भवभञ्जनहार परमेष्ठी। जय ---॥

जय सब संकट चूरण कर्त्ता जय सब आशा पूरण कर्त्ता
जय जय मंगलकार परमेष्ठी। जय — ॥

तेरा जाप जिन्होंने कीना परमानन्द उन्होंने लीना
कर गये बेड़ा पार परमेष्ठी। जय — ॥

लीना शरणा सेठ सुदर्शन शूली से बनगया सिंहासन
जय-जय करें नर नार परमेष्ठी। जय —॥

द्रोपदी चीर सभा में हरना तब तेरा ही लीना शरना
बढ़ गया चीर अपार, परमेष्ठी। जय —

'सोमा' ने तुम सुमरण कीना सर्प फूल माल कर दीना
वर्तें मङ्गलाचार परमेष्ठी। जय — ॥

'अमर' शरण में सम्मति आया कर्मों के दुःख से घबराया
शीघ्र करो उद्धार, परमेष्ठी। जय — ॥

जय जय जय जयकार.....!

राग आसावरी–त्रिताल (मध्यलय) स्थाई

०				३				×				२			
र				सं				प				म			
म	म	प	स	ध॒	प	पध॒	मप	ग॒	–	र	स	र	म	प	–
ज	य	ज़	य	ज	य	जऽ	यऽ	का	ऽ	र	पर	मे	ऽ	छी	ऽ
				स		प		म							
म	म	प	स	ध॒	प	ध॒	म	प	–	–	–	–	–	–	प
ज	य	ज	य	ज	य	ज	य	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र

अन्तरा—

				न॒	न॒	न॒	न॒	ध॒				सं	र		
म	म	प	प	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	स	–	स	स	र	न॒	स	–
ज	य	ज	य	भ	व	ज	न	बो	ऽ	ध	वि	धा	ऽ	ता	ऽ
न॒	न॒	न॒	न॒									स	सं		
ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	स	–	स	स	सर	ग॒ं	र	स	र	न॒	ध॒	प
ज	य	ज	य	आ	ऽ	त	म	शुऽ	ऽ	द्धि	वि	धा	ऽ	ता	ऽ
		प		स						सं		न॒			
प	प	ग॒ं	ग॒ं	र	–	स	स	स	र	न॒	न॒	ध॒	ध॒	प	प
ज	य	भ	व	भ	ऽ	ज	न	हा	ऽ	र	पर	मे	ऽ	छी	ऽ
म								स							
र	र	म	म	प	प	प	स	ध॒	–	प	–	–	–	–	–
ज	य	ज	य	ज	य	ज	य	का	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

मन्त्रराज-परमेष्ठी !

जय परमेष्ठी परमपददाता मतिदाता मङ्गल करतार !
वीतराग सर्वज्ञ दयामय गुणसागर अविकार ।
सत्पथहितकर शिवमगनेता जय अर्हन् अवतार ॥ जय --॥
अजरामर जगदीश निरंजन तर्कातीत अपार ।
लोकालोक चराचर ज्ञाता जय सिद्ध सिद्धिदातार ॥ जय --॥
पंचाचार प्रपालक गत-मद पतित उद्धारनहार ।
पूज्यपितासम गण प्रतिपालक जय गणी गुणभंडार ॥ जय --॥
शिष्यसुप्रेमी अतुलित ज्ञानी मिथ्यातम दिनकार ।
सतसिद्धान्तप्रसारी विजयी जय पाठक पदधार ॥ जय --॥
पंचमहाव्रत धार तपस्वी निर्मम निरहंकार ।
शान्त सुदान्त दया के सागर जयमुनि जगदाधार ॥ जय -- ॥
अमर अनन्तगुणौघविकासी कर्म-करीर-कुठार ।
अघभयहारी पावनकारी जयकारी नवकार ॥ जय -- ॥

—•—
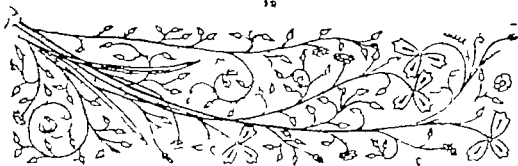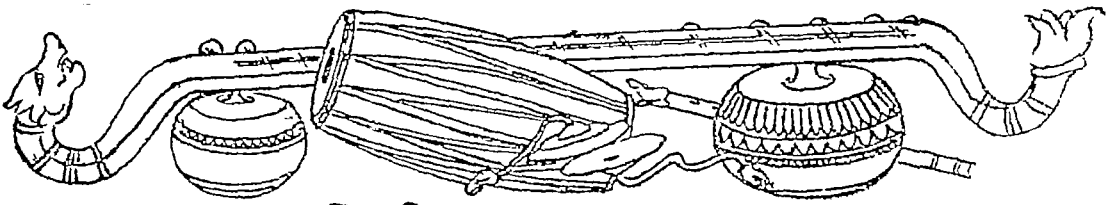
जय परमेष्ठी परम पद......!

राग भैरवी (कहरवा)

स्थायी

×				०				×				०			
स	म	म	म	म	-	म	म	ग	प	म	प	ग	र	ग	-
ज	य	प	र	मे	ऽ	ष्ठी	प	र	म	प	द	दा	ऽ	ता	ऽ
ग	ग	रे	स	स	रे	ग	म	रे	ग	स	रे	स	-	-	स
म	ति	दा	ऽ	ता	ऽ	म	ऽ	ग	ल	क	र	ता	ऽ	ऽ	र

अन्तरा

ध	-	ध	ध	-	म	ध	न	स	-	स	न	नस	रे	स	स
वी	ऽ	त	रा	ऽ	ग	स	र	व	ऽ	ज्ञ	द	याऽ	ऽ	म	य
न	रे	स	न	ध	स	न	ध	प	न	ध	प	-	-	-	-
गु	ण	सा	ऽ	ग	र	अ	वि	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
म	-	म	म	म	-	प	म	ग	ग	र	स	स	र	सर	ग
स	ऽ	त्य	हि	त	ऽ	क	र	शि	व	म	ग	ने	ऽ	ताऽ	ऽ
स	म	म	म	र	ग	स	रे	स	-	-	-	-	-	-	-
ज	य	अ	र	ह	न	अ	व	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र

जय परमेष्ठी परमपददाता मतिदाता मङ्गलकरतार।

फिर शेष अन्तरे इसी अन्तरे के समान।

प्रभो महावीर !

प्रभो महावीर जी ! प्रभो महावीर जी !!
प्रभो महावीर जी ! प्रभो महावीर जी !!
धर्म विश्वास था सब उठा जा रहा ।
पाप का वेग दिन दिन बढ़ा जा रहा ।
नाश के गर्त में था जगत जा रहा ।
तू ने बदली नई फिर से तसवीर जी ।
धर्म-पन्थों के संघर्ष का ज़ोर था ।
मैं व तू का शरारत भरा शोर था ।
एक कट्टरता-राज्य चहुँ ओर था ।
तू ने स्याद्वाद जैसी दी अकसीर जी ।
धर्म के नाम पर घोर हिंसा चली ।
मूक पशुओं के कंठों पै छुरियाँ चलीं ।
धर्म गुरुओं ने भी भोली जनता छली ।
तू ने तोड़ी यह पाखण्ड-जंजीर जी ।
भोग की वासना थी भयङ्कर बला ।
मांस-मदिरा का था खूब दौरा चला ।
भारते हिन्द का था हृदय हा जला ।
तू ने दीक्षा दया का पिला नीर जी ।
वीर भगवन् ! बड़ा तेरा उपकार है ।
प्राणपण से सुखी सर्व संसार है ।
तू दया का अमर पूर्ण अवतार है ।
तू ने सारे जगत की हरी पीर जी ।

ओ महावीर जी ओ महावीर जी !

कहरवा—मध्यलय स्थायी															
														रे॒	स
×				०				×				०		ओ	म
ग॒	रे॒	–	स	ऩ॒	स	–	स	सर	ग॒	–	र	ग॒	–	रे॒	स
हा	वी	ऽ	र	जी	ओ	ऽ	म	हाऽ	वी	ऽ	र	जी	ऽ	ओ	म
ग॒	रे॒	–	स	ऩ॒	स	–	स	सर	ग॒	–	र	ग॒	–	र	ग॒
हा	वी	ऽ	र	जी	ओ	ऽ	म	हाऽ	वी	ऽ	र	जी	ऽ	ध	र्म
अन्तरा															
म	म	–	ग॒	मप	म	म	ग॒	र	स	–	र	ग॒	–	र	ग॒
वि	श्वा	ऽ	स	थाऽ	स	ब	उ	ठा	जा	ऽ	र	हा	ऽ	पा	प
म	म	–	ग॒	प–	म–	–	ग॒	र	स	–	र	ग॒	–	ध॒	ध॒
का	वे	ऽ	ग	दिन	दिन	ऽ	व	ढा	जा	ऽ	र	हा	ऽ	ना	श
ध॒	ध॒	–	म	प	प	–	ग॒	र–	स	–	र	ग॒	–	रे॒	स
के	ग	ऽ	र्त	में	था	ऽ	ज	गत	जा	ऽ	र	हा	ऽ	तू	ने
ग॒–	रे॒	–	स	ऩ॒	स–	–	स	सर	ग॒	–	र	ग॒	–	रे॒	स
वद	ली	ऽ	न	ई	फिर	ऽ	से	तस	वी	ऽ	र	जी	ऽ	ओ	म

हा वीर जी ओ महावीर जी। ओ महावीर जी ओ महावीर।

सूचना.—मध्यम को षड्ज मान कर इसे गाइये।

भ० महावीर ने क्या किया ?

वीर जिनेश्वर सोई दुनिया जगाई तूने।
प्राण की मधुर सुरीली बंसी बजाई तूने॥
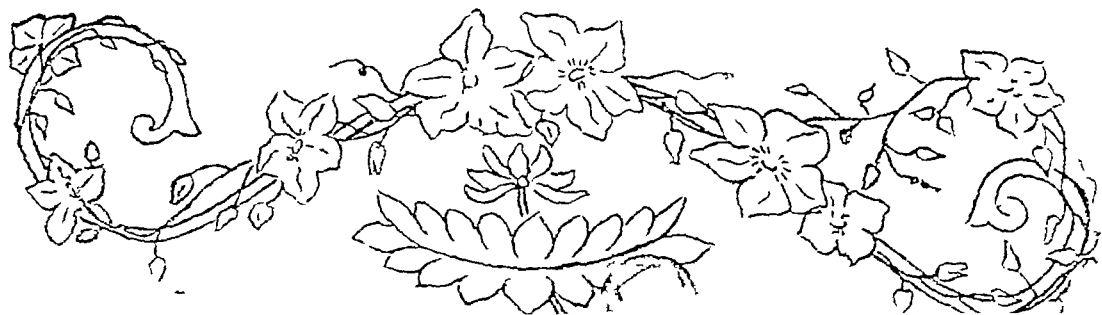
भारत की नैया डोली
मृत्यु था सिर पर बोली
स्वर्ग से आकर भगवन्! पार लगाई तूने!

पशुओं पै छुरियां चलतीं
रक्त की नदियां बहतीं
करुणा के सागर करुणा-गङ्गा बहाई तूने!

देवों की करना पूजा
बस काम था और न दूजा
मानव की अटल प्रतिष्ठा जग में जमाई तूने!

पंथों का झूँठा झगड़ा
जनता का मानस बिगड़ा
भेद-सहिष्णुता की रश्मी सजाई तूने!

पाप का पंक धोना
नर से नारायण होना
'अमर' अमर पद की राह दिखाई तूने!
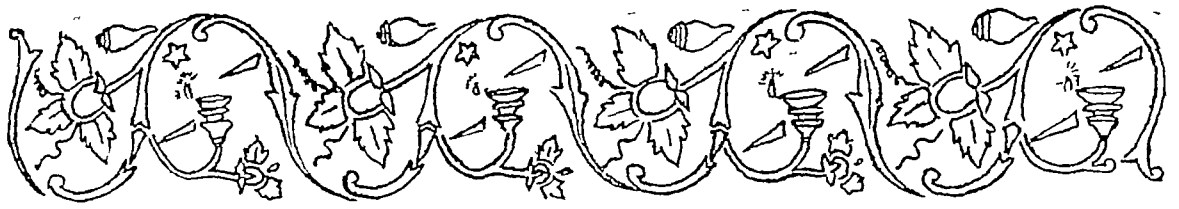
वीर जिनेश्वर ! सोई दुनियाँ···!

स्थायी (कहरवा)

×	o	×	o
* प प पम	पध ध- प म	* रग ग स	र ग म प
* वी र जिऽ	नेऽ श्वर सो ई	* दुनि या ज	गा ई तू ने
* प प पम	पध धध प म	* रग ग स	र ग म प
* ज्ञा न कीऽ	मधु रसु री ली	* बऽ शी व	जा ई तू ने

अन्तरा—

* ग प- प	धन नध नर स	* न न धप	पध धन ध प
* भा रत की	नैऽ याऽ डोऽ ली	* मृ त्यु आऽ	शिर पर बो ली
* प प पम	पध धध पप म-	* रग ग स	र ग म प
* स्व र्ग सेऽ	आऽ कर भग वन्	* पाऽ र ल	गा ई तू ने

वीर जिनेश्वर सोई दुनियां जगाई तूने ।
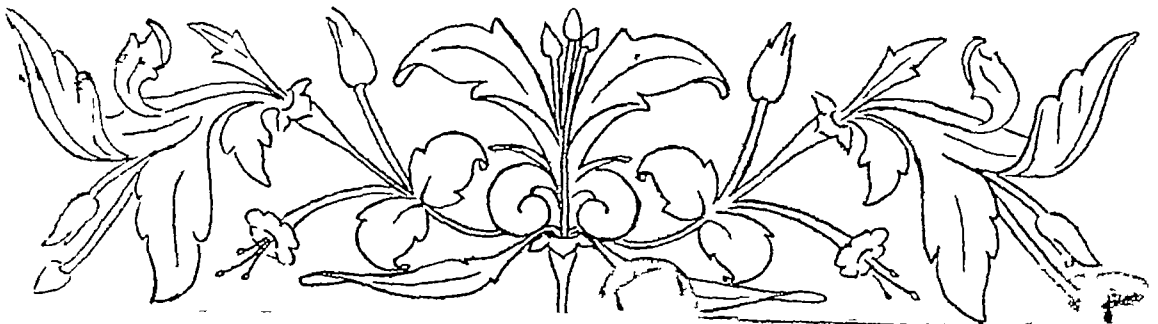
जिन स्तवन !

रसना ! रट लेना सदा सुखद शुभ नाम !

ऋषभ अजित सम्भव भवहारी अभिनन्दन मन्दमता–हारी।

सुमति सदा अभिराम ॥ रसने–॥

पद्म सुपार्श्व दया के सागर चन्दा प्रभु तिहुँ अमल उजागर।

पुष्प दन्त निष्काम ॥ रसने–॥

श्री शीतल श्रयांस मुनीश्वर वासु पूज्य गम्भीर गुणीश्वर।

विमल–विमल गुणधाम । रसने–॥

नाथ अनन्त श्री अविचल स्वामी धर्म शांति वर–केवल ज्ञानी।

हो दुख दूर तमाम ॥ रसने–॥

कुंथु अरह मल्लि जिन स्वामी मुनि सुव्रत नमि नेमि सुनामी।

घर घर के सुख धाम ॥ रसने–॥

पार्श्वनाथ श्री नाग बचैया वीर अहिंसा नाद बजैया।

भजले आठों याम ॥ रसने–॥

सीधे मग पर अब तो होले पाप कालिमा अपनी धोले।

बनले विश्व गुलाम ॥ रसने–॥

अन्ध–कूप में भटका मेरे लगा अमर मन्दिर में डेरे।

मुझे मृत्यु से थाम ॥ रसने–॥

—•—
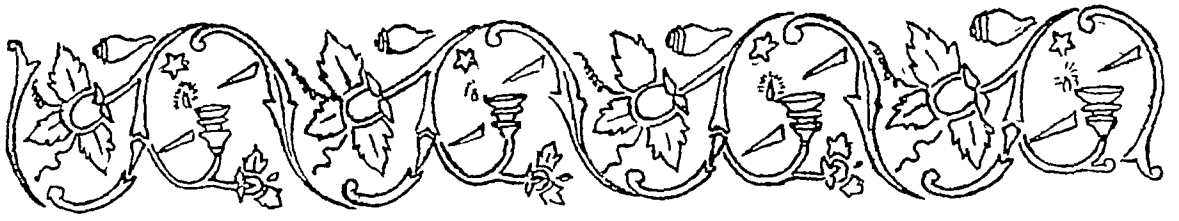
रसने रट लेना

राग भीमपलासी-मिश्र, (कहरवा) स्थायी

×				०				×				०			
प	नि	ध	प	म	मप	ग	म	प	–	–	–	नि	नि	–	स
र	स	ने	ऽ	ऽ	रट	ले	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	स	दा	ऽ	सु
ग	ग	म	ग	प	–	–	म	प	नि	ध	प	म	मप	ग	म
ख	द	शु	भ	ना	ऽ	ऽ	म	र	स	ने	ऽ	ऽ	रट	ले	ऽ
प	–	–	–	नि	नि	–	स	ग	ग	म	ग	प	–	–	म
ना	ऽ	ऽ	ऽ	स	दा	ऽ	सु	ख	द	शु	भ	ना	ऽ	ऽ	म

अन्तरा—

स	म	म	म	म	म	म	–	स	ग	म	प	म ग	मग	र	स
ऋ	ष	भ	अ	जि	त	स	ऽ	भ	व	भ	व	हा	ऽऽ	री	ऽ
प	प	प	म	प	नि	ध	प	प	ध	म	प	गम	मग	म	प
अ	भि	न	ऽ	द	न	न	ऽ	द	न	ता	ऽ	काऽ	ऽऽ	री	ऽ
प	नि	नि	नि	स	नि	स	गं	र	स	नि	ध	प	नि	ध	प
सु	म	ति	स	दा	ऽ	अ	भि	रा	ऽ	ऽ	म	र	स	ने	ऽ

रट लेना, सदा सुखद सुख धाम।

महावीर जग स्वामी..............!

स्थायी (कहरवा)

×				०				×				०			
स	रे॒	स	न॒	स	प	प	प	प	ध॒	प	म	प	ध॒	स	–
म	हा	ऽ	वी	ऽ	र	ज	ग	स्वा	ऽ	मी	ऽ	तु	म	को	ऽ
–	–	प	ध॒	–	म	–	ग॒	र	–	–	म	ग॒	म	र	ग॒
ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ	खों	ऽ	प्र	णा	ऽ	ऽ	म	तु	म	को	ऽ
–	–	र	ग॒	–	स	–	रे॒	ग॒	स	–	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ	खों	ऽ	प्र	णा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म

अन्तरा—

ग॒	–	म	म	ध॒	–	न॒	न॒	स	स	स	न॒	स	रे॒	स	–
अ	ऽ	न्त	र	में	ऽ	व	र	क	रु	णा	ऽ	जा	ऽ	गी	ऽ
न॒	–	न॒	–	स	–	स	स	न॒	रे॒	स	न॒	प	ध॒	प	–
दे	ऽ	खा	ऽ	भा	ऽ	र	त	अ	ति-	दु	ख	भा	ऽ	गी	ऽ
*	*	प	–	प	प	प	–	म	ध॒	प	म	र	म	ग॒	–
*	*	वै	ऽ	भ	व	की	ऽ	दु	नि	यां	ऽ	त्या	ऽ	गी	ऽ
*	*	प	–	–	म	–	ग॒	र	–	–	म	ग॒	म	र	ग॒
*	*	ला	ऽ	ऽ	खों	ऽ	प्र	णा	ऽ	ऽ	म	तु	म	को	ऽ
*	*	र	ग॒	–	स	–	रे॒	ग॒	स	–	–	–	–	–	–
*	*	ला	ऽ	ऽ	खों	ऽ	प्र	णा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म

दिल की चाह !

वीर जिनेश्वर आपका सच्चा भगत बन जाऊँ मैं।
पाप भरी जग—वासना दिल से समस्त हटाऊँ मैं॥

शान्त हृदय में द्वेष की धधकें न कभी चिनगारियाँ।
शत्रुओं पै भी सदा प्रेम की गंगा बहाऊँ मैं॥

दीन-दुखी को देख कर आँसू बहाऊँ गो रहूँ।
जैसे बने सर्वस्व भी देकर सुखी बनाऊँ मैं॥

कैसा भी भीषण कष्ट हो, मग से न तिलभर भी डिगूँ।
हँसता रहूँ कर्तव्य की वेदी पै शीश चढ़ाऊँ मैं॥

छोटे बड़े का भेद तज सेवक बनूँ मैं विश्व का।
अपने बिराने की विष भरी दिल से दुई मिटाऊँ मैं॥

धर्म की लेके आड़ मैं मत पक्ष करूँ न कभी जरा।
सत्य जहाँ भी मिले वहीं पूर्णतया झुक जाऊँ मैं॥

स्वर्ग तथैव न मोक्ष की इच्छा नहीं कुछ भी 'अमर'।
अब तो यही है कामना सफल जन्म बनाऊँ मैं॥

वीर जिनेश्वर आपका............!

स्थाई (दादरा)

×			o			×			o		
स	र	ग	म	म	ग	म	प	म	ग़	–	–
वी	र	जि	ने	श्व	र	आ	ऽ	प	का	ऽ	ऽ
र	स	ऩ	सर	र	र	र	ग़	र	स	–	–
स	ध्या	भ	गत	व	न	जा	ऽ	ऊँ	मैं	ऽ	ऽ
स	र	ग	म	म	ग	म	प	म	ग़	–	–
पा	प	भ	री	ज	ग	वा	ऽ	स	ना	ऽ	ऽ
र	स	ऩ	सर	र	र	र	ग़	र	स	–	–
दिल	से	स	मस्	त	ह	टा	ऽ	ऊँ	मैं	ऽ	ऽ

अन्तरा

स	ग	म	प	प	प	ग़	–	स	ग़	प	–
शा	त	हृ	द	य	में	हो	ऽ	प	की	ऽ	ऽ
म	म	ग	म	ध	प	ग़	म	ग़	स	–	–
धध	कें	न	क	भी	चिन	गा	ऽ	रि	यां	ऽ	ऽ
स	र	. ग	म	–	ग	म	प	म	ग़	–	–
श	त्रु	ज	नों	ऽ	पै	भी	ऽ	स	दा	ऽ	ऽ
र	स	ऩ	सर	र	र	र	ग़	र	स	–	–
प्रे	ऽ	की	गऽ	गा	व	हा	ऽ	ऊँ	मैं	ऽ	ऽ

दिल की चाह !

वीर जिनेश्वर आपका सच्चा भगत बन जाऊँ मैं।
पाप भरी जग—वासना दिल से समस्त हटाऊँ मैं॥

शान्त हृदय में द्वेष की धधकें न कभी चिनगारियाँ।
शत्रुओं पै भी सदा प्रेम की गंगा बहाऊँ मैं॥

दीन-दुखी को देख कर आँसू बहाऊँ मैं रहूँ।
जैसे बन सर्वस्व भी दे सुखी बनाऊँ मैं॥

कैसा भी भीषण कष्ट हो, मग से न तिलभर भी डिगूँ।
हँसता रहूँ कर्तव्य की वेदी पै शीश चढ़ाऊँ मैं॥

छोड़े मद का भेष तज सेवक बनूँ मैं विश्व का।
अपने बिगाने की फिर भरी दिल से दुई मिटाऊँ मैं॥

धर्म की लेके आड़ में मत पक्ष करूँ न कभी जरा।
सत्य जहाँ भी मिले वहीं पूर्णतया झुक जाऊँ मैं॥

स्वर्ग तथैव व मोक्ष की इच्छा नहीं कुछ भी 'अमर'।
अब तो यही है कामना सरल सुजन्म बनाऊँ मैं॥

भगवान तुम्हारा इस जग में.....!

स्थायी (कहरवा)

														प	प
×				०				×				०		भ	ग
पध	नु	ध	प	प	ध	म	प	ग	म	ग	स	ग	म	प	–
वाऽ	ऽ	न	तु	म्हा	ऽ	रा	ऽ	इ	स	ज	ग	में	ऽ	मैं	ऽ
प	धु	प	म	गु	गु	र	गु	सर	गुर	स	–	–	–	प	प
स	ऽ	घा	ऽ	भ	ग	त	क	हाऽ	ऽऽ	ऊँ	ऽ	ऽ	ऽ	भ	ग
पध	नु	ध	प	प	ध	म	प	ग	म	ग	स	ग	म	प	–
वाऽ	ऽ	न	तु	म्हा	ऽ	रा	ऽ	इ	स	ज	ग	में	ऽ	मैं	ऽ
प	धु	प	म	गु	गु	र	गु	सर	गुर	स	–	–	–	–	–
स	ऽ	घा	ऽ	भ	ग	त	क	हाऽ	ऽऽ	ऊँ	ऽ	ऽ	ऽ ऽ		ऽ

अन्तरा—

म	–	म	म	प	प	प	ध	न	–	स	–	न	र	स	–
को	ऽ	ध	नि	क	ट	न	हिं	आ	ऽ	ने	ऽ	दे	ऽ	ऊँ	ऽ
गं	–	गं	गं	र	म	गं	र	स	र	नु	ध	प	ध	स	–
शा	ऽ	स्त्र	श्र	चू	ऽ	क	त्त	मा	ऽ	का	ऽ	ले	ऽ	ऊँ	ऽ
स	–	स	र	नु	–	ध	प	ग	म	ग	स	ग	म	प	–
दू	ऽ	र	हि	मा	ऽ	र	भं	गा	ऽ	ऊँ	ऽ	ऽ	ऽ	मैं	ऽ
प	धु	प	म	गु	गु	र	गु	सर	गुर	स	–	–	–	प	प
स	ऽ	घा	ऽ	भ	ग	त	क	हाऽ	ऽऽ	ऊँ	ऽ	ऽ	ऽ	भ	ग
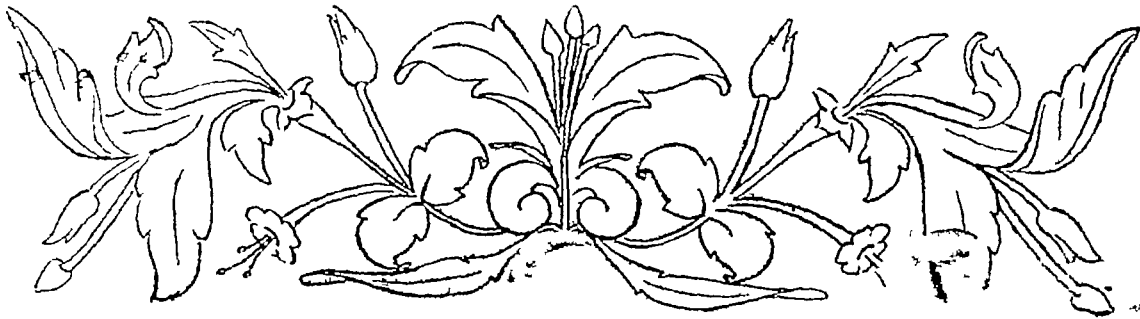
अमर अभिलाषा !

भगवान् तुम्हारा इस जग में मैं सच्चा भक्त कहाऊँ।
क्रोध निकट नहिं आने देऊँ शान्त मधुर वाणी का सेऊँ।
दूर ही मार भगाऊँ मैं सच्चा भक्त कहाऊँ। भगवान् —— ।
संत गुणी-जन जब मिल जावें मद मत्सर नहिं मनमें आवें।
सादर शीश झुकाऊँ मैं सच्चा भक्त कहाऊँ। भगवान् ——— ।
सत्य शील का नाद बजाके व्यसन-पुञ्ज की क्रान्ति मचाके।
सोता जगत जगाऊँ मैं सच्चा भक्त कहाऊँ। भगवान् —— ।
न्याय मार्ग से मुख नहीं मोड़ूँ स्वीकृत प्रण की मेंड़ न तोड़ूँ।
कर्तव्य पथ बलि जाऊँ मैं सच्चा भक्त कहाऊँ। भगवान् ——— ।
प्राणिमात्र को अपना भाई मानूँ सबकी चाहूँ भलाई।
सेवा-धर्म बजाऊँ मैं सच्चा भक्त कहाऊँ। भगवान् ——— ।
ऊँच-नीच का भेद न मानूँ गुण पूजा का महत्व पिछानूँ।
व्यक्ति न व्योम चढ़ाऊँ मैं सच्चा भक्त कहाऊँ। भगवान् ———— ।
करुणानिधि! यह करुणा कीजे आत्मिकबल कुछ ऐसा दीजे।
'अमर' अमर हो जाऊँ मैं सच्चा भक्त कहाऊँ। भगवान् ———— ।

नाम प्रभू का प्यारा..........!

राग भैरव+भैरवी मिश्र, ताल कहरवा, (मध्यलय) स्थायी

×				×				×				×			
प	–	–	म	ग	रे	ग	रे	स	–	स	–	ग	म	प	–
ना	ऽ	म	प्र	भू	ऽ	का	ऽ	प्या	ऽ	रा	ऽ	व	ऽ	दे	ऽ
प	–	–	म	ग	रे	ग	रे	स	–	स	–	–	–	–	–
ना	ऽ	म	प्र	भू	ऽ	का	ऽ	प्या	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

स	म	म	म	म	–	ग	म	प	ध	प	म	ग	म	प	–
श	ऽ	क्क	र	मी	ऽ	ठी	ऽ	मि'	स	री	ऽ	मी	ऽ	ठी	ऽ
प	ध	नि	स	गं	रे	स	रे	नि	रे	स	–	–	–	–	–
ना	ऽ	म	सु	धा	ऽ	की	ऽ	धा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
#	ध	ध	ध	ध	ध	ध	–	प	नि	ध	प	म	ध	प	–
#	भ	व	सा	ग	र	में	ऽ	ड्रू	ऽ	बी	ऽ	नै	ऽ	या	ऽ
#	ग	–प	म	ग	रे	ग	रे	स	–	स	–	ग	म	प	–
#	ना	ऽम	ही	प	ऽ	क	स	हा	ऽ	रा	ऽ	व	ऽ	दे	ऽ

नाम प्रभू का प्यारा · · ।

प्रभु नाम कैसा है ?

नाम प्रभु का प्यारा बन्दे।

शक्कर मीठी मिसरी मीठी
नाम सुधा की धारा।
भवसागर में डूबी नैया
नाम ही एक सहारा बन्दे।

जब भी भीर पड़ी भक्तों पर
नाम का मन्त्र उचारा।
सच्चा है बस नाम प्रभु का
झूठा है जग सारा बन्दे।

माया की उलझन में फँसकर
क्यों प्रभु-नाम बिसारा ?
नाम मन्त्र के ध्यान पल में
काम क्रोध मद हारा बन्दे।

'भक्त' जिधर भी देखा जग में
नाम ही नाम निहारा बन्दे।

नाम प्रभू का प्यारा.........!

राग भैरव + भैरवी मिश्र, ताल कहरवा, (मध्यलय) स्थायी

×				×				×				×			
प	–	–	म	ग	रे॒	ग	रे॒	स	–	स	–	ग	म	प	–
ना	ऽ	म	प्र	भू	ऽ	का	ऽ	प्या	ऽ	रा	ऽ	व	ऽ	दे	ऽ
प	–	–	म	ग	रे॒	ग	रे॒	स	–	स	–	–	–	–	–
ना	ऽ	म	प्र	भू	ऽ	का	ऽ	प्या	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

स	म	म	म	म	–	ग	म	प	ध॒	प	म	ग	म	प	–
श	ऽ	क	र	मी	ऽ	ठी	ऽ	मि॰	स	री	ऽ	मी	ऽ	ठी	ऽ
प	ध॒	नि॒	स	गं॒	रे॒	स	रे॒	नि॒	रे॒	स	–	–	–	–	–
ना	ऽ	म	सु	धा	ऽ	की	ऽ	धा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
*	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	–	प	नि॒	ध॒	प	म	ध॒	प	–
*	भ	व	सा	ग	र	में	ऽ	इ	ऽ	वी	ऽ	नै	ऽ	या	ऽ
*	ग	–प	म	ग	रे॒	ग	रे॒	स	–	स	–	ग	म	प	–
*	ना	ऽम	ही	प	ऽ	फ	स	हा	ऽ	रा	ऽ	व	ऽ	दे	ऽ

नाम प्रभू का प्यारा ।

———

भ० पार्श्वनाथ के चरणों में

प्रभो पार्श्व ! तेरा जिसे ध्यान होगा
जगत में भला क्यों वह हैरान होगा ?
क्षमा सत्य करुणा के सद्गुण से ऊँचा
उठेगा वह इतना कि हिमवान होगा ॥
न भूकंपी सिर पर कभी दुख चढ़ाये
सभी भाँति नित पूर्ण कल्याण होगा ।
झुकेंगे स्वयं देव चरणों में आके
चरण-रज का अमृत सा सम्मान होगा ॥
बनाते हैं पारस ही लोहे से सोना
बने जो न सोना वह नादान होगा ।
अँधेरा अविद्या का जड़ से मिटेगा
प्रगट सूर्य ज्यों केवल-ज्ञान होगा ॥
फँसेगा न चक्कर में आवागमन के
'अमर' हो अमर मोक्ष स्थान होगा ।

प्रभो पार्श्व ! तेरा जिसे……।

राग भीमपलासी मिश्र, ताल—कहरवा, स्थायी—

×		२			०		३		प / प्र
प	ऩि	ध	–	प	म	प	ग	–	म
भो	ऽ	पा	ऽ	र्श्व	ते	ऽ	रा	ऽ	जि

प	–	ग॒	–	म	रे	–	सा	–	रे
से	ऽ	ध्या	ऽ	न	हो	ऽ	गा	ऽ	अ
नि॒	सा	ग॒	म	प	प	नि॒	सां	–	सां
ग	त	में	ऽ	भ	ला	ऽ	क्यों	ऽ	बो
नि॒	–	ध	–	म	प	नि॒	ध	–	प
है	ऽ	रा	ऽ	न	हो	ऽ	गा	ऽ	प्र

अन्तरा—

									प
									द
प	–	ग॒	–	म	प	नि॒	सां	–	सां
मा	ऽ	स	ऽ	त्य	क	रु	णा	ऽ	के
नि॒	सा	मैं	गं॒	गं॒	रे	–	सां	–	सां
स	द	गु	ण	से	ऊँ	ऽ	चा	ऽ	उ
सा	–	नि॒	ध	प	ग॒	म	ग॒	रे	सा
ठे	ऽ	गा	ऽ	च	इ	त	ना	ऽ	कि
नि॒	सा	ग॒	म	प	प	–	ग॒	–	म
हि	म	वा	ऽ	न	हो	ऽ	गा	ऽ	प्र

सन्त-महिमा !

जगत के तारने वाले जगत में सन्त-जन ही हैं
उन्हें उपमा कहो क्या दें अपन से वे अपन ही हैं।
सकल सुख भोग तज करके जगत कल्याण को निकले
मनोहर महल जिनके फिर भयंकर शून्य वन ही हैं।
अटल संयम सुमेरु के शिखर पर सन्त बैठे हैं
जिधर देखो उधर उनके शमन के गुलचमन ही हैं।
सुधा की खोज में दुनियाँ बनी फिरती है क्यों पागल
सुधा तो संत लोगों के सदा मधुर वचन ही हैं।
कुल्हाड़ी से कोई काटे कोई या फूल बरसाये
छुरी से दें दुआ एकसां अजब सारे चलन ही हैं।
स्वयं पर वज्र भी टूटे तो हँसते ही रहेंगे हाँ
दुखी को देख रो उठने कृपा के तो सदन ही हैं।
हृदय की हूक से हर दम हजारों बार वन्दन हो
'अमर' अमरत्व के दाता संत के पावन चरन ही हैं।

जगत के तारने वाले जगत में······!

राग दुर्गा, ताल-रूपक

स्थायी—

२	३	×	२	३	× ज
					म
ध प	प प	म - प	म -	र -	स - र
ज त	के ऽ	ता ऽ र	ने ऽ	वा ऽ	ले ऽ ज
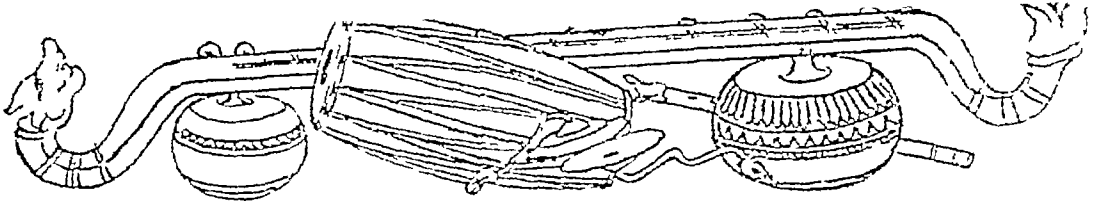
स	स	ध	-	स	-	र	म	म	प	-	ध	-	ध
ग	त	मे	ऽ	स	ऽ	त	ज	न	ही	ऽ	हैं	ऽ	उ
ध	-	ध	स	ध	-	प	म	-	प	-	र	-	र
न्हे	ऽ	उ	प	मा	ऽ	फ	हो	ऽ	क्या	ऽ	दें	ऽ	अ
ध	ध	स	-	र	-	म	म	म	प	-	ध	-	ध
प	न	से	ऽ	वे	ऽ	अ	प	न	ही	ऽ	हैं	ऽ	ज

गत के तारने वाले । | प स

अन्तरा—

म	म	प	प	ध	-	ध	स	स	ध	ध	स	-	ध
क	ल	सु	ख	भो	ऽ	ग	त	ज	क	र	के	ऽ	ज
स	स	र	-	म	-	र	स	-	र	र	स	-	स
ग	त	क	ऽ	त्या	ऽ	ग	को	ऽ	नि	क	ले	ऽ	म
म	-	र	रं	स	स	रं	ध	ध	स	-	ध	ध	प
नो	ऽ	ह	र	म	ह	ल	जि	न	के	ऽ	फि	र	भ
म	-	प	प	म	-	र	स	र	म	प	ध	-	ध
य	ऽ	फ	र	शू	ऽ	न्य	व	न	ही	ऽ	हैं	ऽ	ज

गत के तारने वाले । *(शेष अन्तरे भी इसी प्रकार कहे जाँयगे)*

वीर वन्दना !

प्रभो वीर ! तेरा ही केवल सहारा।
जगत में न कोई हितंकर हमारा ॥ १ ॥
सभी ओर कर्मों का है घेरा डाला।
कृपा कर दो ऐसी लखें पारा पारा ॥ २ ॥
जला ज्ञान दीपक दिखा मार्ग सत्पथ्।
भटकते फिरें घोर पुन्य पसारा ॥ ३ ॥
निकट शीघ्र से शीघ्र अपने बुलालो।
पड़े ताकि जगमें न आना दुबारा ॥ ४ ॥

—•—

प्रभो वीर ! तेरा ही ......!

राग दरबारी मिश्र, ताल—झपताल

		स्थायी—							स
×		२			०		३		प्र
र	म	र	र	स	ध़	स	प	ध़	स
भो	ऽ	वी	ऽ	र	ते	ऽ	रा	ऽ	ही
र	म	पध़	मप	म	ग़	म	र	–	स
के	ऽ	वल	ऽऽ	स	हा	ऽ	रा	ऽ	प्र

भो ऽ वी ऽ र इसको इसी प्रकार कहिये।

									म
									ज
प	ध॒	स	–	न॒प	र	म	र	–	स
ग	त	में	ऽ	नऽ	को	ऽ	ई	ऽ	शि
र	म	पध॒	मप	म	र	म	र	–	स
व	ऽ	कऽ	रऽ	ह	मा	ऽ	रा	ऽ	प्र

भो ऽ वी ऽ र · फिर कहिये।

अन्तरा—

									म
									स
म	प	ध॒	–	न॒	स	–	स	–	स
भी	ऽ	ओ	ऽ	र	क	ऽ	मों	ऽ	का
न॒	स	नस	र	स	न॒	सं	ध॒	न॒	प
है	ऽ	वेऽ	ऽ	रा	डा	ऽ	ला	ऽ	कु
ग॒	म	र	–	स	न॒	स	ध॒	न॒	प
पा	ऽ	क	र	दो	ऐ	ऽ	सी	ऽ	उ
स	–	न॒	–	प	र	म	र	–	स
ड़े	ऽ	पा	ऽ	रा	पा	ऽ	रा	ऽ	प्र

भो ऽ वी ऽ र फिर इसको स्थायी की भांति कहिये।

नोटः—शेष अन्तरे भी इसी अन्तरे की तरह कहे जायेंगे।

भव्य-भावना ।

प्रभो प्रेम सागर में तेरे नहाऊँ मैं ।
भ्रमर तेरे चरणों का हर दम रहूँ मैं ।
हटूँ एक पग भी अपनी न राह से ।
कभी भी न गन्दा करूँ कंठ आह से ।
करूँ पूरा जो कुछ कि मुख से कहूँ मैं ॥
दुखी दुर्बलों का बनूँ मैं सहारा ।
कभी स्वप्न में भी करूँ ना किनारा ।
सदा लोक-सेवा का दृढ़ व्रत गहूँ मैं ।
सताया किसी से मैं कैसा ही जाऊँ ।
न माथे पै बल अपने मैं बैर लाऊँ ।
बुराई के बदले भलाई चहूँ मैं ।
चढ़ा जाऊँ मैं धर्म-वेदी पै तन मन ।
करूँ काम ऐसा करें याद सब जन ।
'अमर' धर्म हित लाख मुश्किल सहूँ मैं ।

राग बिहाग, झपताल

स्थायी—									स
×		२			०		३		प्र
न	–	प	म	स	ग	–	(र) स	स	स
मो	ऽ	प्रे	ऽ	म	सा	ऽ	ग	र	में
प	र्म	प	–	म	ग	–	स	–	स
ते	ऽ	रे	ऽ	न	हूँ	ऽ	मैं	ऽ	प्र

म	ग	प	–	प	न	न	प	–	प
म	र	ते	ऽ	रे	च	र	णों	ऽ	का
प	मं	ग	ग	म	गम	पध	गम	ग	स
ह	र	द	म	र	हूँऽ	ऽऽ	मैंऽ	ऽ	ऽ

भो ऽ प्रेम ''।

अन्तरा—

									प
									ह
प	–	स	–	स	स	–	र	स	–
हूँ	ऽ	प	ऽ	क	इं	ऽ	च	भी	ऽ
स	स	ग	–	म	ग	ग	स	–	स
अ	प	नी	ऽ	न	रा	ह	से	ऽ	क
ग	–	स	–	स	न	–	प	–	प
भी	ऽ	भी	ऽ	न	ग	ऽ	दा	ऽ	क
न	–	प	–	ध	ग	म	ग	स	स
रू	ऽ	क	ऽ	ठ	आ	ह	से	ऽ	क
ग	म	प	न	स	नस	ग	र	र	स
रूँ	ऽ	पू	ऽ	रा	जोऽ	ऽ	कु	छ	कि
न	ध	प	–	मं	ग	म	ग	स	स
मु	ख	से	ऽ	क	हूँ	ऽ	मैं	ऽ	प्र

भो ऽ प्रेम ।
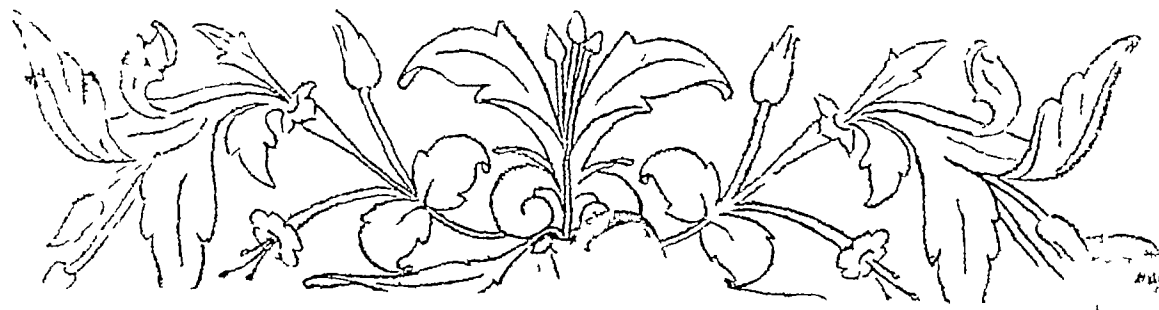
सफल जीवन की माग !

जीवन सफल बनाना हो बनाना प्रभो।
हृदय मन्दिर में घुप है अँधेरा
ज्ञान की ज्योति जगाना हो ! जीवन ———।।
धधक रहा है द्वेष दावानल
प्रेम पयोधि बहाना हो ! जीवन ——।।
मोह वासना जला रही है
अन्तर ताप बुझाना हो ! जीवन ———।
बीच भँवर में नैया फँसी है
झट—पट पार लगाना हो ! जीवन ——।।
न्याय मार्ग का पथ न छोड़ूँ
दुश्मन हो सारा ज़माना हो ! जीवन ———।
उत्कट संकट हँस—हँस झेलूँ
अविचल धैर्य बँधाना हो ! जीवन ——।
प्राणी-मात्र को सुख उपजाऊँ
चाहे न चित्त दुखाना हो ! जीवन ———।
मैं भी तुमसा जिन बन जाऊँ
परदा दुई का हटाना हो ! जीवन ——।
'अमर' निरन्तर आगे बढ़ूँ मैं
कर्तव्य वीर बनाना हो ! जीवन ———।

ताल—कहरवा (मध्यलय)

स्थायी—

	×			×				×				×			
•	ध़	स	स	र	म	म	म	प	मं	प	प	–	–	–	–
•	जी	व	न	स	फ	ल	ब	ना	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
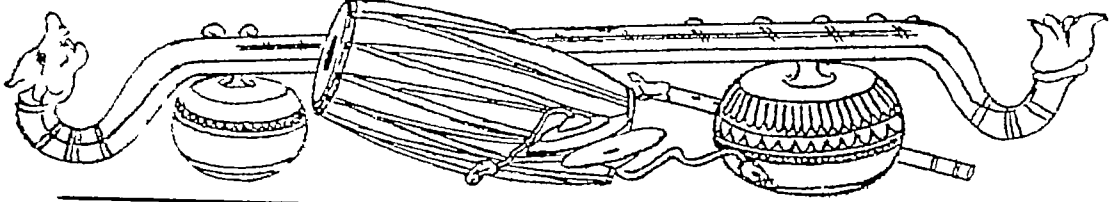
*	प	–	प	प	मं	प	ध	म	–	–	–	–	–	–	–
*	हां	ऽ	व	ना	ऽ	ना	प्र	भो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग॒	ग॒	–	ग॒	र	र	स	–	स	र	म	र	म	–	प	–
हृ	दय	ऽ	म	दि	र	में	ऽ	घु	प	है	अँ-	धे	ऽ	रा	ऽ
*	प	प	प	प	मं	प	ध	ध	प	म	म	(मं)	–	(प)	–
*	ज्ञा	न	की	ज्यो	ऽ	ति	ज	गा	ऽ	ना	ज	गा	ऽ	ना	ऽ
*	प	प	प	प	मं	प	ध	ध	–	म	–	–	–	–	–
*	ज्ञा	न	की	ज्यो	ऽ	ति	ज	गा	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

ध	ध	सं	स	र	–	स	–	र	म	र	स	ध	ध	प	प
ध	ध	क	र	हा	ऽ	है	ऽ	ह्रे	ऽ	प	दा	वा	ऽ	न	ल
*	प	प	प	प	मं	प	ध	ध	प	म	म	(मं)	–	(प)	–
*	प्रे	म	प	यो	ऽ	धि	व	हा	ऽ	ना	व	हा	ऽ	ना	ऽ
*	प	प	प	प	मं	प	ध	ध	–	म	–	–	–	–	–
*	प्रे	म	प	यो	ऽ	धि	व	हा	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
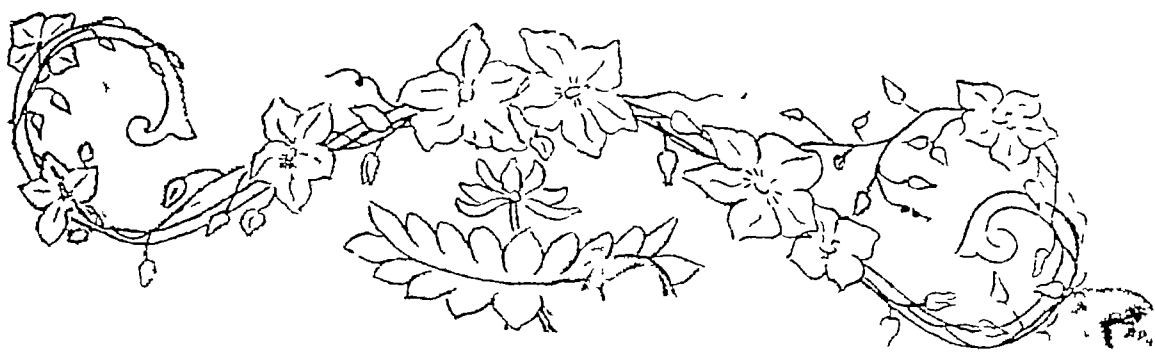
मंगल प्रार्थना !

दयामय दीनों के भगवान !
हम दीनों पर कृपया अपना रखते रहना ध्यान ॥
तुम पूर्ण सिन्धु हम तुच्छ बिन्दु हैं नहीं कुछ अपना मान ।
योगिराज के द्वारा प्रभुजी करदो आप समान ॥ दयामय…॥
पतितों की पत राखनहारे भवसागर-जलयान ।
विश्व हितंकर करो सभी को उन्नति सदय प्रदान ॥ दयामय…॥
दया दान सन्तोष हो हम में प्रभुजी एक समान ।
काम क्रोध मद लोभ मोह का हो जड़ से अवसान ॥ दयामय…॥
भेद भाव हो दूर परस्पर, कर बन्धुत्व विधान ।
हों स्वतन्त्र सब कहीं दास्य का रहे न नाम निशान ॥ दयामय…॥
धर्म पथ पर बढ़ें अडिग हम हँस-हँस हों बलिदान ।
पाप पथ को ल न स्वप्न में वीर बन शुभवान ॥ दयामय…॥
बढ़ें अदम्य अगम्य निरन्तर हम भारत सन्तान ।
तन सकल भूमण्डल पर हों सित नव कीर्ति वितान ॥ दयामय…॥
नसै अविद्या तिमिर नष्ट कर विद्या-स्पर्श-विहान ।
प्रभो ! रमो हम रोम-रोम में नाम 'अमर' सत्यवान ॥ दयामय…॥

—•—

दयामय दीनों के भगवान…………!

मिश्रक खमाजी–

३				०				१				×			ग
															द
रग	मग	र	म	०	म	र	स	सग	धप	प	र	म	-	स	प
या	ऽऽ	म	य	०	दी	ऽ	नों	के	ऽऽ	भ	ग	वा	ऽ	न	द
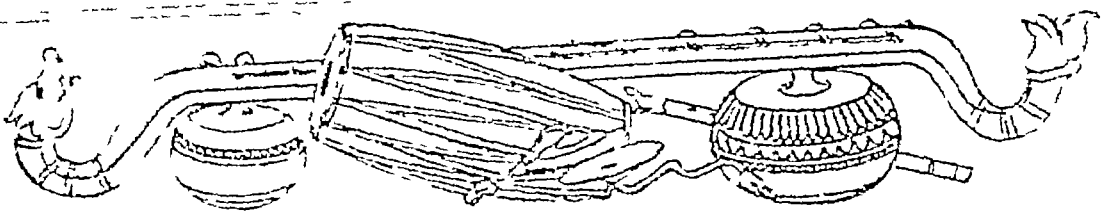
रग	मग	र	स	*	ग	र	स	सन	धप	ध	र	स	–	–	स
याऽ	ऽऽ	म	य	*	दी	ऽ	नों	केऽ	ऽऽ	भ	ग	वा	ऽ	ऽ	न
*	ग	ग	ग	र	–	ग	म	ग	र	न	ध	ऩ	र	स	–
*	ह	म	दी	नों	ऽ	प	र	कृ	प	या	ऽ	अ	प	ना	ऽ
*	ग	ग	ग	ग	र	ग	ध	प	मं	ग	म	रग	मग	र	स
*	र	ख	ते	र	ह	ना	ऽ	ध्या	ऽ	न	द	याऽ	ऽऽ	म	य

दीनों के भगवान् ।

							अन्तरा							प	प
०				३				×				२		तु	म
प	–	मं	ग	–	ग	मं	ध	मंध	नस	स	स	–	स	स	–
पू	ऽ	र्ण	सिं	ऽ	धु	ह	म	तुऽ	ऽऽ	च्छ	विं	ऽ	दु	हैं	ऽ
न	न	–	न–	मं	ध	न	ध	मं	ध	प	–	–	–	–	–
न	हीं	ऽ	कुछ	अ	प	ना	ऽ	भा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न
स	–	स	स	–	स	स	र	न	–	न	स	ध	ध	प	–
वो	ऽ	ध	दा	ऽ	न	के	ऽ	द्वा	ऽ	रा	ऽ	प्र	भु	जी	ऽ
मं	ध	प	मं	ग	–	र	र	स	–	स	ग	रग	मग	र	स
क	र	लो	ऽ	आ	ऽ	प	स	मा	ऽ	न	द	याऽ	ऽऽ	म	य

दीनों के भगवान ।
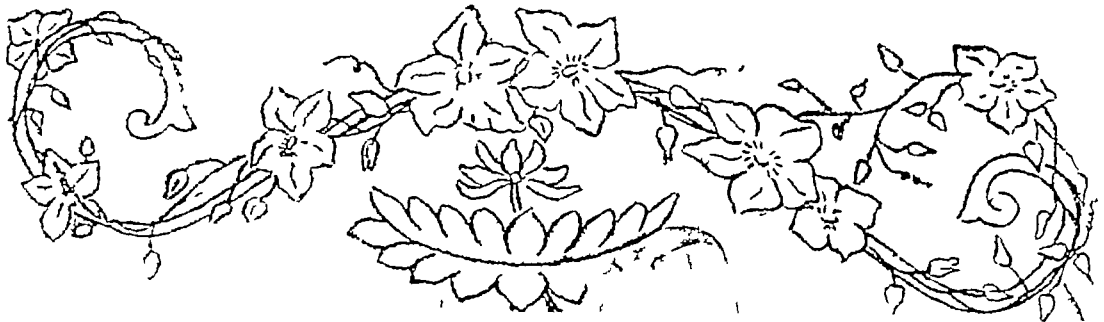
प्रभु से प्रार्थना !

भगवन् दया के सागर हम दास हैं तुम्हारे
सब से भले निराले तुम नाथ हो हमारे।

सबके हितैषी तुम हो आनन्द देने वाले
अतएव दो हमें भी आनन्द दान प्यारे।

खाना वसन बनावें फ़ैशन विलास तजकर
ऐसी दो बुद्धि भगवन् कर दुःख दूर सारे।

आगे खड़ी खड़ी हों, चाहे अड़चनें हज़ारों
फिर भी न हारें हिम्मत हों धीर हम करारे।

पापों से हम डरें नित मन शुद्ध भाव रक्खें
हमसे न दुःख पावें जग के दुखी बिचारे।

करने को देश सेवा, सानन्द मर मिटें हम
हरदम बजें हमारे नित जीत के नक्कारे।

संसार सिन्धुतारक ! तिहुँ लोक के उजागर
करदो 'अमर' हमारा तुम नाम जग में सारे।

कहरवा, मध्यलय—स्थाई—														र	ग
												×		म	प
स	–	–	–	[illegible]	ध	–	[illegible]	स	नृ	स	–	–	–	पृ	स
वन्	ऽ	ऽ	ऽ	द	या	ऽ	के	सा	ऽ	गर	ऽ	ऽ	ऽ	ह	म
प	–	–	–	ग	म	–	म	म	–	र	–	स	–	र	ग
दा	ऽ	ऽ	ऽ	स	हैं	–	तु	म्हा	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	स	ब

स	–	–	–	ऩ	ध	–	ऩ	स	न	स	–	–	–	ध	स
से	ऽ	ऽ	ऽ	भ	ले	ऽ	नि	रा	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	तु	म
ग	–	–	–	ग	म	–	म	ग	–	र	–	स	–	र	ग॒
ना	ऽ	ऽ	ऽ	थ	हो	ऽ	ह	मा	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	भ	ग

वन् दया के सागर, हम दास हैं तुम्हारे (इस पक्ति को फिर से दुहराइये)

अन्तरा														स	न
														स	व
स	ग	–	म	र	ग	–	म	प	म॑	प	–	–	–	म	ग
के	ऽ	ऽ	ऽ	हि	तै	ऽ	षी	तु	म	हो	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ
म	ध	–	प	ध	न॒	–	ध	प	ध	प	–	–	–,	र	ग॒
न	ऽ	ऽ	ऽ	द	हे	ऽ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ,	अ	त
स	–	–	–	ऩ	ध	–	ऩ	स	न	स	–	–	–	ध	स
प	ऽ	ऽ	ऽ	व	दो	ऽ	ह	में	ऽ	भी	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ
ग	–	–	–	ग	म	–	म	ग	–	र	–	स	–	र	ग॒
न	ऽ	ऽ	ऽ	द	रा	ऽ	न	प्या	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	भ	ग

वन् दया के सागर, हम दास हैं तुम्हारे ।

इस गीत को अपने मध्यम को स्वर मान कर गाइये ।
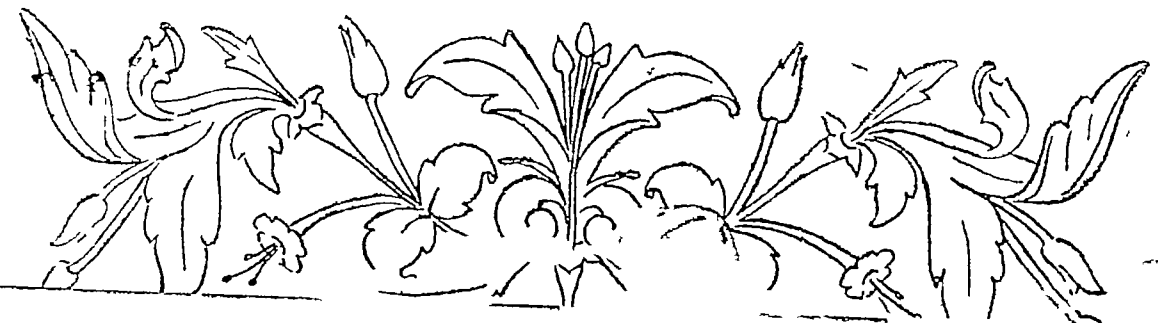
प्रार्थना

दीनबन्धो! ज्ञान सूरज का उजेरा कीजिए।
दूर यह अज्ञान का सारा अँधेरा कीजिए।
छा रही काली घटायें पाप की चारों तरफ।
धर्म की वायु से कलिमल दूर सारा कीजिए॥
देश को बर्बाद करती है अविद्या पापिनी।
दुःखहारी मूल से संहार इसका कीजिए॥
रूढ़ियों को ही धर्म बस मानते हैं आजकल।
नाश जल्दी अब 'अमर' इस मान्यता का कीजिए॥

दीनबन्धो ! ज्ञान सूरज का…!

राग—यमन कल्याण (मिश्र) ताल—तीव्रा (मध्यलय)

स्थायी—

+			२		३		+			२		३	
नि	-	ध	प	-	मं	-	ग	-	म	ग	-	रे	-
दी	ऽ	न	ब	ऽ	न्धो		ज्ञा	ऽ	न	का	ऽ	सू	
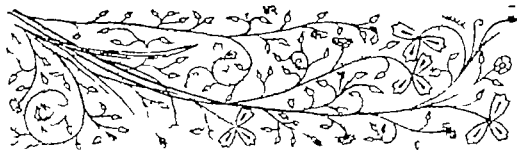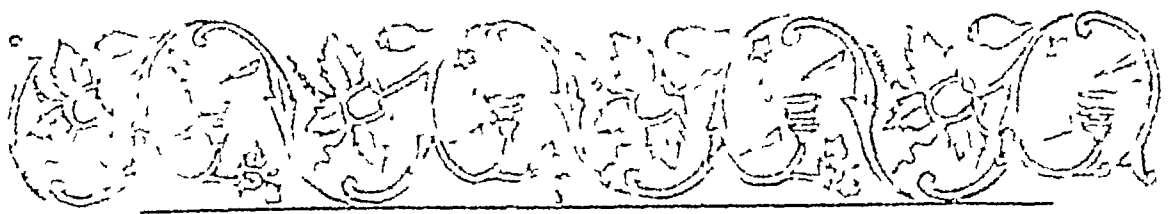
न	ग	र	ग	र	ग	प	ग	-	ग	स	-	-	-
ग	ल	उ	जे	ऽ	ग	ऽ	की	ऽ	जि	ये	ऽ	ऽ	ऽ
म॑	-	ध	प	प	न	-	र	-	न	ध	-	प	-
दू	ऽ	र	य	ह	अ	ऽ	मा	ऽ	न	का	ऽ	सा	ऽ
म॑	-	ग	र	ग	ग	र	प	-	र	स	-	-	-
ग	ऽ	अ	धे	ऽ	रा	ऽ	की	ऽ	जि	ये	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

ग	-	म॑	ध	ध	म॑	ध	स	-	स	स	-	न	न
छा	ऽ	र	ही	ऽ	का	ऽ	ली	ऽ	घ	टा	ऽ	यें	ऽ
ग	-	र	स	-	र	ग	न	-	-	ध	प	प	-
पा	ऽ	प	की	ऽ	चा	ऽ	रों	ऽ	ऽ	त	र	फ	ऽ
ग	-	र्	स	न	ध	प	म	-	ग	र	र	ग	-
ध	ऽ	र्म	की	ऽ	वा	ऽ	यू	ऽ	मे	क	लि	म	ल
ग	-	र	ग	र	ग	प	र	-	र	स	-	-	-
दू	ऽ	र	सा	ऽ	ग	ऽ	की	ऽ	जि	ये	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अन्तरे भी इसी प्रकार कहे जायेंगे।
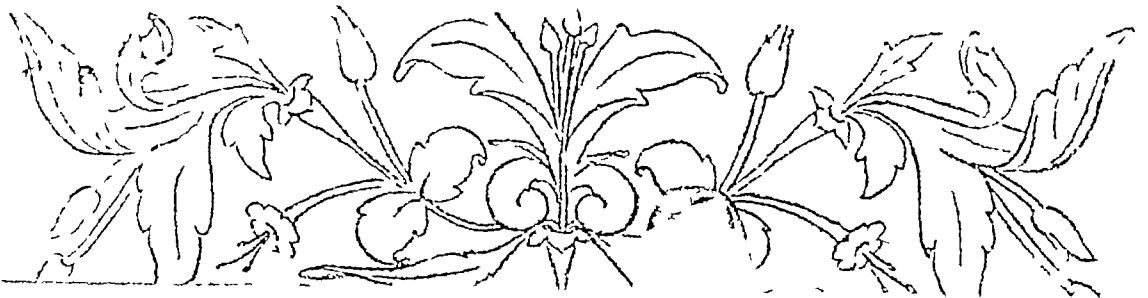
भगवान् महावीर ने क्या किया ?

सद्धर्म का डंका भारत में बजवा दिया वीर जिनेश्वर ने।
और उजड़े भारत को फिर से सरसा दिया वीर जिनेश्वर ने॥
पशुओं जैसा शूद्रों से व्यवहार यहां सब करते थे।
पर प्रेम से सबको एक जगह बिठला दिया वीर जिनेश्वर ने॥
पुरुषों के पैरों की जूती महिलाएँ समझी जाती थीं।
पुरुषों से नहीं हैं कम महिला बतला दिया वीर जिनेश्वर ने॥
देवी देवों के आगे यहां खून के दरिया बहते थे।
सर्वत्र अहिंसा का झण्डा फहरा दिया वीर जिनेश्वर ने॥
एकान्त वाद के झगड़े में पड़ सब मत वाले लड़ते थे।
स्याद्वाद के द्वारा सब झगड़ा मिटवा दिया वीर जिनेश्वर ने॥
पावापुर में यज्ञों की जब धूम मची थी अति भारी।
तब गौतम जैसे पण्डित को समझा दिया वीर जिनेश्वर ने॥
झूँठे रीति रिवाजों में सब धर्म समझ कर बैठे थे।
सद्धर्म का मारग सब जग को दिखला दिया वीर जिनेश्वर ने॥
आत्मा में अनन्ती ताक़त है यह परमातम बन सकती है।
मानव से 'अमर' ईश्वर होना बतला दिया वीर जिनेश्वर ने॥

स्थायी (ताल कहरवा)														स	र
×				•				×						स	त
प़	–	स	स	ग	–	म	–	प	–	प	प	प	–	प	प
ध	ऽ	र्म	का	डं	ऽ	का	ऽ	भा	ऽ	र	त	में	ऽ	ब	ज

म	–	गु	र	गु	प	म	म	गु	–	र	गु	न	–	स	र
वा	ऽ	दि	या	वी	ऽ	र	जि	ने	ऽ	श्व	र	ने	ऽ	औ	र
नु	नु	स	–	गु	–	म	म	प	–	प	प	प	–	प	प
उ	ज	डे	ऽ	भा	ऽ	र	त	को	ऽ	फि	र	से	ऽ	म	र
म	–	गु	र	गु	प	म	म	गु	–	र	गु	म	–	स	र
ना	ऽ	दि	या	वी	ऽ	र	जि	ने	ऽ	श्व	र	ने	ऽ	स	त

धर्म का डका भारत में बजवा दिया वीर जिनेश्वर ने।

अन्तरा

प	प	प	–	म	प	गु	म	प	–	नु	–	स	–	स	स
प	शु	ओं	ऽ	उं	ऽ	सा	ऽ	श	ऽ	द्रो	ऽ	से	ऽ	व्य	व
नु	–	नु	ध	प	ध	म	म	प	धु	नु	धु	प	–	स	र
हा	ऽ	र	य	हा	ऽ	म	व	क	र	ते	ऽ	थे	ऽ	प	र
नु	–	स	स	गु	गु	म	–	प	–	प	प	प	प	प	प
प्रे	ऽ	म	से	स	ब	को	ऽ	प	ऽ	क	ज	ग	ह	वि	ठ
म	–	गु	र	गु	प	म	प	गु	–	र	गु	स	–	स	र
ला	ऽ	दि	या	वी	ऽ	र	जि	ने	ऽ	श्व	र	ने	ऽ	स	त

धर्म का डका भारत में बजवा दिया वीर जिनेश्वर ने।
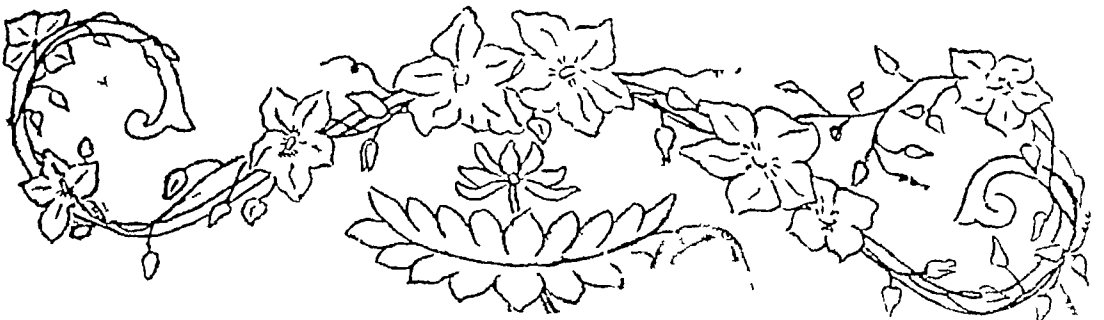
क्या चाहिये ?

विश्वपति ! तेरे चरण में ध्यान मुझको चाहिये
मैं हूँ तेरा भक्त यह अभिमान मुझको चाहिये ।

कर्ण और जिह्वा तेरी ही भक्ति में अर्पण करूँ
दोनों से बस तेरा ही गुण-गान मुझको चाहिये ॥

बेखुदी ऐसी हो जिससे भूलूँ अपने को भी मैं
सिर्फ तेरा ही हृदय में भान मुझको चाहिये ।

स्वर्ग के सौन्दर्य पर सानन्द ठोकर मार दूँ
वासना जग की अनोखी त्याग मुझको चाहिये ॥

शत्रुओं को भी लखूँ शुभ प्रेम भीनी आँख से
हर तरफ बस प्रेम का सामान मुझको चाहिये ।

देवता तुझ से बचाने को न आए मेरे पास
सत्य-व्रत का पारखी शैतान मुझको चाहिये ॥

और कुछ वरदान की बिलकुल 'अमर' इच्छा नहीं
धर्म पर मिटने का इक वरदान मुझको चाहिये ।

विश्व पति तेरे चरण • ।

स्थायी (कहरवा) मध्यलय)

×				•				×				•			
•	सं	–	सं	सं	सं	न	–	•	ध	–	प	ध	ग	ध	–
•	वि	ऽ	श्वप	प	ति	ते	ऽ	•	रे	ऽ	च	र	ण	मैं	ऽ
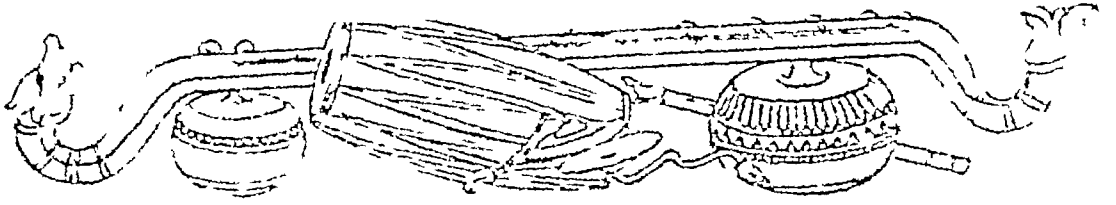
मं	प	–	मं	प	प	म	ग	*	ध	–	प	ध	नु	ध	–
ऽ	ध्या	ऽ	न	मु	झ	को	ऽ	*	चा	ऽ	हि	ये	ऽ	ऽ	ऽ
*	स	–	स	स	–	न	–	*	ध	–	प	ध	नु	ध	ध
*	मैं	ऽ	हूँ	ते	ऽ	रा	ऽ	*	भ	ऽ	क्त	य	ह	अ	भि
मं	प	–	मं	प	प	म	ग	*	ध	–	प	ध	नु	ध	–
ऽ	मा	ऽ	न	मु	झ	को	ऽ	*	चा	ऽ	हि	ये	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

*	ग	–	म	ध	ध	न	–	*	स	–	ध	न	र	स	–
*	फ	ऽ	र्ण	औ	र	जि	ऽ	*	हा	ऽ	ते	री	ऽ	ही	ऽ
*	स	–	स	स	–	स	ध	*	न	न	र	स	न	ध	–
*	भ	ऽ	क्ति	मैं	ऽ	अ	र	*	प	ण	क	रूँ	ऽ	ऽ	ऽ
*	स	–	स	स	–	न	न	*	ध	–	प	ध	नु	ध	–
*	दो	ऽ	नों	पै	ऽ	व	स	*	ते	ऽ	रा	ही	ऽ	ऽ	ऽ
मं-	प	–	मं	प	प	म	ग	*	ध	–	प	ध	नु	ध	–
गुण	गा	ऽ	न	मु	झ	को	ऽ	*	चा	ऽ	हि	ये	ऽ	ऽ	ऽ

दया दुग्ध सिन्धो.......!

(राग भैरव मिश्र) ताल—झपताल (मध्यलय)

स्थायी—

									स
×		२			०		३		द
स	–	ध़	–	प	म	–	रे़	–	स
या	ऽ	दु	ऽ	ग्ध	सि	ऽ	न्धो	ऽ	दु
न	स	ग	–	ग	म	–	म़	–	म
खी	ऽ	दु	ऽ	ख	हा	ऽ	री	ऽ	स्र
म	–	प	–	प	ध़	–	प	–	प
दा	ऽ	नि	ऽ	र्वि	का	ऽ	री	ऽ	भ
म	रे़	गम	प़	प	म	–	रे़	–	स
व	ऽ	भ्राऽ	ऽ	न्ति	हा	ऽ	री	ऽ	ह
न	स	ग	–	ग	म	–	प	–	प
दा	ऽ	गा	ऽ	र	में	ऽ	क्षा	ऽ	न

न	स	रे	–	स	न	स	ध	–	प
मा	ऽ	नें	ऽ	भ	ला	ऽ	ई	ऽ	ह
ग	म	रे	–	स	रे	रे	स	–	स
में	ऽ	स्व	ऽ	प्र	में	ऽ	भी	ऽ	न
ध	–	न	–	स	ध	–	प	–	प
हीं	ऽ	रो	ऽ	प	आ	ऽ	वे	ऽ	भ
प	ध	रे	–	स	ध	–	प	–	प
ला	ऽ	ई	ऽ	न	छो	ऽ	ड़े	ऽ	म
म	रे	गम	प	प	म	–	रे	–	स
ले	ऽ	जाऽ	ऽ	न	जा	ऽ	वे	ऽ	द

या दुग्ध सिन्धो······ ।

———
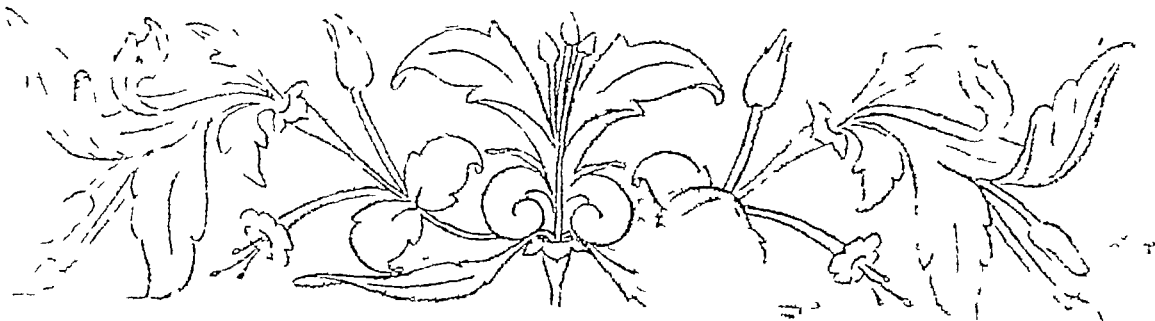
जय जिनेन्द्र !

जय जिनेन्द्र ! विनम्र वन्दन पूर्णतः स्वीकार हो
तीन लोकों के तुम्हीं सर्वस्व सर्वाधार हो।

मोह मद मायादि दोषों से पृथक् हो सर्वदा
शान्ति समता सत्य के गुण सिन्धु अपरम्पार हो।

देखते हस्तामलक-सम ज्ञान से भुवनत्रयी
सूर्य से भी अनन्त ज्योतिर्मय ज्ञानागार हो।

आपकी मङ्गलमयी करुणा सुधा से शीघ्र ही
पूर्ण परमानन्द हो भव दुःख का संहार हो।

धर्म पर मरना सिखाता आपका आदर्श ही
धर्म के और धर्मवीरों के तुम्हीं शृङ्गार हो।

धर्म की जग में ध्वजा लहराय जय-जय नाद से
हम में ऐसा उत्तम बल-बुद्धि का संचार हो।

एकता के सूत्र में गुँथ जाय जैन समाज सब
प्रेम भरत का 'अमर' प्रतिपल अमित विस्तार हो।
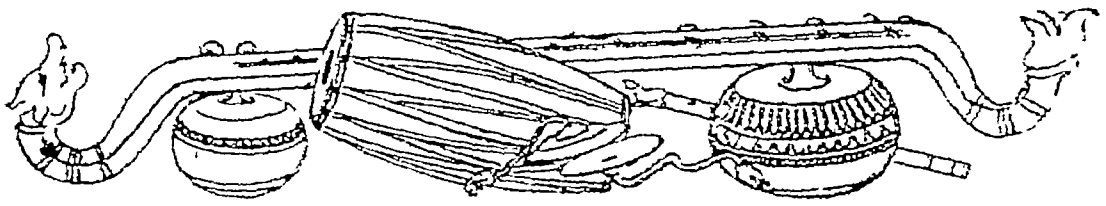
जय जिनेन्द्र विनम्र वन्दन.........!

राग सोहनी, (ताल रूपक) मध्यलय—स्थाई

×			२		३		×			२		३	
ग	ग	ग	मं	–	ध	ध	स	–	स	स	रे	स	स
ज	य	जि	ने	ऽ	द्र	वि	न	ऽ	म्र	व	ऽ	द	न
न	–	ध	मं	ध	न	स	न	ध	न	ध	–	मं	ग
पू	ऽ	र्ण	त	ऽ	स्वी	ऽ	का	ऽ	र	हो	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	ग	मं	ध	न	स	स	–	रे	स	रे	न	स
दी	ऽ	न	भ	ऽ	क्तों	ऽ	के	ऽ	तु	म्हीं	ऽ	स	र
न	–	ध	मं	ध	न	स	न	ध	न	ध	–	मं	ग
व	ऽ	स्व	स	र	वा	ऽ	धा	ऽ	र	हो	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

ग	–	ग	ग	ग	ग	–	मं	ग	रे	स	–	स	–
मो	ऽ	ह	म	द	मा	ऽ	या	ऽ	दि	दो	ऽ	पों	ऽ
नस	नध	ध	मं	ध	न	स	न	ध	न	ध	–	–	–
सेऽ	ऽऽ	पृ	थ	क	हो	ऽ	स	र	व	दा	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	ग	मं	ध	न	स	स	रे	स	रे	न	स	स
शा	ऽ	न्ति	स	म	ता	ऽ	स	ऽ	त्य	के	ऽ	गु	ण
न	–	ध	मं	ध	न	स	न	ध	न	ध	–	मं	ग
सिं	ऽ	धु	अ	प	र	ऽ	पा	ऽ	र	हो	ऽ	ऽ	ऽ
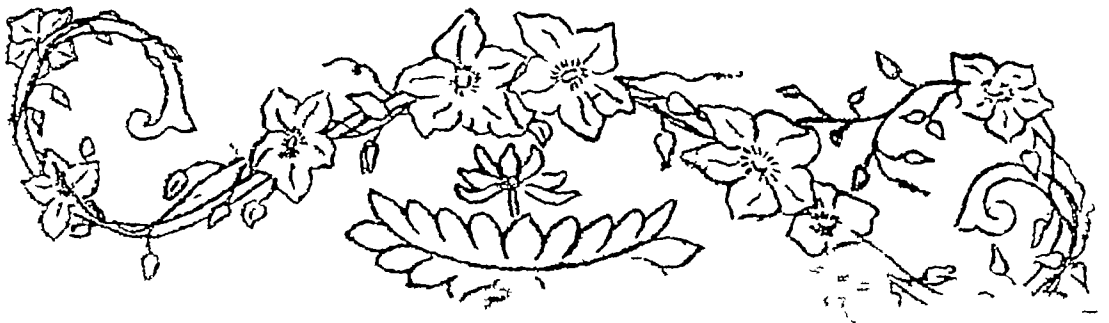
अगर वीर न जगाता !

अगर वीर स्वामी हमें न जगाता
तो भारत में कैसे नया रङ्ग आता !
न होता उदय ज्ञान का सत्य-सूरज
तो कैसे अविद्या-अँधेरा नशाता !
न बचता पशु एक भी पशु_बलि से
अहिंसा का मर्म न जो वह सुनाता !
बने ईश मानव न जो यह बताता
तो पापों के दल पै विजय कौन पाता !
सभी जाति आपस में लड़-लड़के मरतीं
न जो विश्व से प्रेम करना सिखाता !
न करता अगर कर्ता पन का खंडन
तो पुरुषार्थ का फिर किसे ध्यान आता !
अमर हो अमर धाम में जा विराजा
'अमर' धर्म का सत्य डङ्का बजाता !

राग मिश्र, झपताल (मध्यलय)

स्थाई									सं
×		२			०		३		प
प	प	ग	–	म	र	–	स	–	स
ग	र	वी	ऽ	र	स्वा	ऽ	मी	ऽ	ह
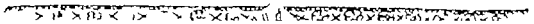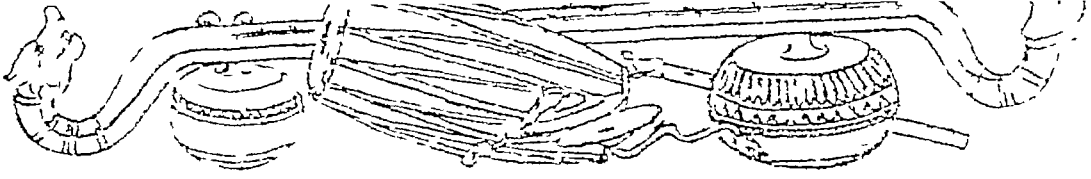
म	—	गम	मंम	ग	म		ध	मध	नस	स
में	ऽ	नाऽ	ऽऽ	ज	गा		ऽ	ताऽ	ऽऽ	तो
न	ध	ध़	ध	स	ग		म	र	स	स
भा	ऽ	र	त	में	कै		ऽ	से	ऽ	न
म	—	गम	मंम	ग	म		ध	मध	नसं	सं
या	ऽ	रऽ	ऽऽ	ग	आ		ऽ	ताऽ	ऽऽ	अ
			अन्तरा							म न
ग	म	ध़	—	ध	स		ध	सं	—	स
हो	ऽ	ता	ऽ	उ	द		य	क्षा	ऽ	न
स	—	ग	रं	स	ध		ध़	ध	स	स
का	ऽ	स	ऽ	त्य	सू		ऽ	र	ज	तो
न	ध	ग	—	म	र		—	स	—	स
कै	ऽ	से	ऽ	अ	वि		ऽ	द्या	ऽ	का
म	म	गम	मंम	ग	म		ध	मध	नस,	स
अँ	धे	राऽ	ऽऽ	न	शा		ऽ	ताऽ	ऽऽ,	अ

गर वीर स्वामी" ।

मेरी ओर

प्रभुजी क्या है देखोगे आप तो मेरी ओर ! (ध्रुव)
ऊबड़ मग भव-विपिन भयंकर चल रही आँधी घोर।
आन दीन असहाय मुझे हा ! सूझ रहा नहिं छोर॥
भूल गया औसान सभी मैं चले न कुछ भी जोर।
आस तुम्हीं हो अब तो मेरे केवल रक्षा ठौर॥
तुम तो पावन हो परमेश्वर मैं पतितन सिरमोर।
दीनबन्धु ! क्यों देर करो कुछ करो स्वपद पै गौर॥
पुत्र-दुःख में होत पिता का करुणा-सिन्धु हिलोर।
किन्तु नाथ क्या कारण मुझ पै बन गये कठिन कठोर॥
अब तो अपने तुल्य करो प्रभु यह जन पामर ढोर।
'भ्रमर' लगा रही लौ तुम ही से जैसे चन्द्रचकोर॥

प्रभू जी क्या है देखोना........!

		स्थायी (कहरवा)												म	–
×				०				×				०		प्र	ऽ
प	–	न॒	–	ध	–	न॒	–	प	ध॒	प	म	ग॒	र	स	–
भू	ऽ	जी	ऽ	क्या	ऽ	है	ऽ	दे	ऽ	खो	ऽ	नो	ऽ	ज	ऽ
र	–	म	–	*	प	न॒	ध॒	प	–	–	–	–	–	म	–
रा	ऽ	तो	ऽ	*	मे	ऽ	री	ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	प्र	ऽ

भू जी क्या है देखोना जरा तो मेरी ओर।

अन्तरा—

प	ध॒	न॒	स	स	स	स	न॒	न॒	र	स	र	न॒	–	न॒	ध
ऊ	ऽ	ज	ड़	भ	ग	भ	व	वि	प	न	भ	य	ऽ	क	र
प	ध	ध	म	म	प	न॒	ध॒	प	–	–	–	–	–	–	–
च	ल	र	ही	आ	ऽ	धी	ऽ	धो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
प	ध॒	न॒	स	र	म	गं॒	र	स	गं॒	र	स	न॒	र	स	न॒
जा	ऽ	न	दी	ऽ	न	अ	स	हा	ऽ	य	मु	झे	ऽ	हा	ऽ
ध	स	न॒	ध॒	प	ध॒	म	ध॒	प	–	–	–	–	–	म	–
लू	ऽ	ट	र	हे	ऽ	हैं	ऽ	चो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	प्र	ऽ

भू जी क्या है देखोना जरा तो मेरी ओर।

मेरी ओर

प्रभुजी क्या है देखोगे ज़रा तो मेरी ओर ! (ध्रुव)
ऊजड़ मग भव-विपिन भयंकर बढ़ रही आँधी घोर ।
आज दीन असहाय मुझे हा ! लूट रहे बनि चोर ॥
भूल गया अभिमान भरी मैं चले न कुछ भी ज़ोर ।
नाथ तुम्हीं हो अब तो मेरे केवल रक्षा ठौर ॥
तुम तो पावन हो परमेश्वर मैं पतितन सिरमौर ।
दीनबन्धु ! क्यों देर करो कुछ करो स्वपद पै गौर ॥
पुत्र-दुःख में लेत पिता का करुणा-सिन्धु हिलोर ।
किन्तु खेद क्या कारण तुम पै बन गये कठिन कठोर ॥
अब तो अपने तुरत करो प्रभु यह जन पामर ढोर ।
'अमर' लग रही लौ तुम ही से जैसे चन्द्रचकोर ॥

प	सं	नु	ध	प	म	ग	प	म	-	ध	प
में	ऽ	स	दा	ऽ	स	मा	ऽ	ना	ऽ	क	लि
गु	गु	र	स	-	र	न	-	स	-	स	र
म	ल	न	सा	ऽ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	द	र

शन प्रभो दिखाना ।

अन्तरा—											
										गु	गु
										ग	ह
गु	-	र	स	-	र	ग	म	म	-	प	धु
रा	ऽ	अँ	धे	ऽ	रा	छा	ऽ	या	ऽ	हूँ	ऽ
न	स	गुं	र	स	र	न	र	स	-	स	र
ढ़ा	ऽ	न	मा	ऽ	र्ग	पा	ऽ	या	ऽ	दी	ऽ
नु	-	ध	प	ध	म	ग	प	म	-	ध	प़
प	ऽक	ज	रा	ऽ	ज	ला	ऽ	ना	ऽ	त	म
गु	-	र	स	-	र	न	-	स	-	स	र
को	ऽ	मि	टा	ऽ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	द	र

शन प्रभो दिखाना ।

प्रशस्त प्रार्थना !

दर्शन प्रभो दिखाना शिवपुर बसाने वाले
दिल में सदा समाना कलिमल नसाने वाले।
गहरा अँधेरा छाया ढूँढ़ा न मार्ग पाया
दीपक ज़रा जलाना तम को मिटाने वाले।
सोये पड़े हैं सब जन आलस्य में है तन मन
इस नींद से जगाना त्रिभुवन जगाने वाले।
भवपाश में फँसे हैं सब ओर से कसे हैं
भ्रम-जाल से छुड़ाना बन्धन छुड़ाने वाले।
माया की मन्त्रणा में पशु हैं कुमन्त्रणा में
मानव 'अमर' बनाना मानव बनाने वाले।

—•—

ताल दादरा, मध्यलय

स्थायी—											
										स	र
×			•			×				द	र
ग़	ग़	स	म	–	म	प	–	प	–	प	प
श	न	प्र	भो	ऽ	दि	खा	ऽ	ना		शि	व
प	ध	प	म	–	प	ग	प	म	–	प	म
पु	र	ब	सा	ऽ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	दि	ल

प	स	न॒	ध	प	म	ग	प	म	–	ध	प
में	ऽ	स	दा	ऽ	स	मा	ऽ	ना	ऽ	क	लि
ग॒	ग॒	र	स	–	र	न	–	स	–	स	र
म	ल	न	सा	ऽ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	द	र

शन प्रभो दिखाना ।

अन्तरा—										ग॒	ग॒
										ग	ह
ग॒	–	र	स	–	र	ग	म	म	–	प	ध॒
रा	ऽ	अँ	धे	ऽ	रा	छा	ऽ	या	ऽ	हूँ	ऽ
न	स	ग॒ं	र	स	र	न	र	स	–	स	र
ढ़ा	ऽ	न	मा	ऽ	र्ग	पा	ऽ	या	ऽ	दी	ऽ
न॒	–	ध	प	ध	म	ग	प	म	–	ध	प़
प	ऽक	ज	रा	ऽ	ज	ला	ऽ	ना	ऽ	त	म
ग॒	–	र	स	–	र	न	–	स	–	स	र
को	ऽ	मि	टा	ऽ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	द	र

शन प्रभो दिखाना ।

प्रतिज्ञा !

प्रभो! बीर तेरा ही सुमरन करूँगा।
जगत में तेरे गीत गाता फिरूँगा॥
चलूँगा सदा तेरे बतलाये पथ पर।
कदम एक तिल भर न पीछे धरूँगा॥
अटल सत्य का मर्म लोगों से कहते।
किसी भी न डर से ज़रा भी डरूँगा॥
रहूँगा अटल धर्म रक्षा की खातिर।
बड़े हर्ष के साथ हँस-हँस मरूँगा॥
तड़पता है कष्टों से सारा ही भारत।
सभी द्वेष क्लेशों की पीड़ा हरूँगा॥
अविद्या के कारण बने नर पशु से।
हृदय में 'अमर' ज्ञान बिजली भरूँगा॥

राग—देस मिश्र, ताल—झपताल

स्थायी—									म
×		२			०		३		प्र
सं	प	ध	ध	प	म	म	ग	—	स
मो	ऽ	भी	ऽ	र	ते	ऽ	रा	ऽ	ही
ग	स	ग	ग	म	प	ध	प	ग	म
सु	म	र	न	क	रूँ	ऽ	गा	ऽ	प्र

ग	ग	स	–	स	ग	म	प	न	स
ग	त	में	ऽ	ते	रे	ऽ	गी	ऽ	त
नस	ग	स	–	स	न॒	–	प	–	म
गाऽ	ऽ	ता	ऽ	फि	रूँ	ऽ	गा	ऽ	प्र

भो ! वीर तेरा ही ~ ।

अन्तरा—

									म
									च
प	न॒	प	–	न	न	स	स	–	स
लूँ	ऽ	गा	ऽ	स	दा	ऽ	ते	ऽ	रे
न	स	ग	–	स	न	स	न॒	प	स
व	त	ला	ऽ	ये	प	थ	प	र	क
ग	म	ग	–	स	न॒	न॒	प	प	पध
द	म	ए	ऽ	क	ति	ल	भ	र	नऽ
र	र	स	–	न॒	प	न॒	प	ग	म
पी	ऽ	छे	ऽ	ध	रूँ	ऽ	गा	ऽ	प्र

भो ! वीर तेरा ही ।
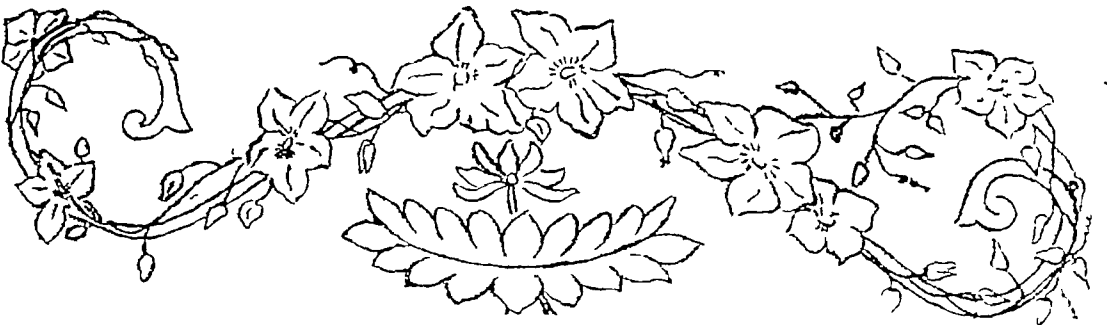
प्रभु-भक्ति

जगदीश के पद पंकजों में नित्य शीश झुकाइये
आनन्द परमानन्द फिर तद्रूप होकर पाइये।
संसार के सुख-भोग तूफ़ानी समन्दर हैं अतः
प्रभु-नाम नौका में मज़े से बैठ कर तर जाइये।
चिरकाल से दुख देते आए हैं अपने कर्मों के दल
भगवद् भजन तलवार से कुहराम इनमें मचाइये।
प्रभु के बताये मार्ग पर चलना ही प्रभु की भक्ति है
अतएव शम दम को हृदय के भाव से अपनाइये।
मत मतान्तर के बखेड़ा में धरा क्या है 'अमर'
आदर्श मत अपना तो केवल ईश-भक्ति बनाइये।

—•—

ताल-रूपक

स्थायी—

×	२	३	×	२	प प १ अ ग
र - र	ग र	ग म	र - ग	र -	स -
जी ऽ श	के ऽ	प द	पं ऽ क	जों ऽ	में ऽ
न - र	सु -	प प	प र	र -	र -
नि ऽ त्य शी	ऽ	श झु	का ऽ इ	ये	आ ऽ
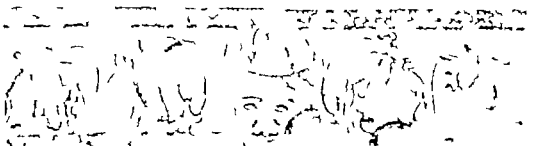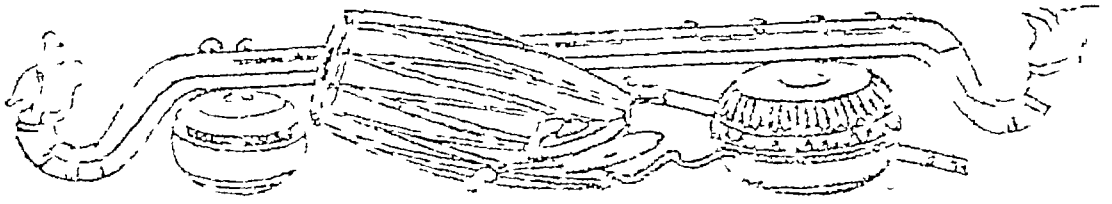
ग	-	र	र	ग	म	प	ग	म	ग	र	ग	र	स
न	ऽ	द	प	र	मा	ऽ	न	ऽ	द	फि	र	त	द्
स	-	र	न	-	ध	प	प	-	र	र	-	प	प
रू	ऽ	प	हो	ऽ	क	र	पा	ऽ	इ	ये	ऽ	ज	ग

दीश के पद   ।

अन्तरा—

												म	-
												स	ऽ
म	-	प	न	-	न	न	न	-	न	स	-	स	-
सा	ऽ	र	के	ऽ	सु	ख	भो	ऽ	ग	तू	ऽ	फा	ऽ
र	गं	र	स	-	स	र	न	स	न	ध	ध	प	प
नी	ऽ	स	म	ऽ	न्द	र	हैं	ऽ	अ	त.	ऽ	प्र	भु
र	-	र	र	गं	र	स	स	-	र	न	-	ध	प
ना	ऽ	म	नौ	ऽ	का	ऽ	मैं	ऽ	म	जे	ऽ	से	ऽ
ग	म	प	ग	म	ग	म	र	ग	र	सा	-	प	प
यै	ऽ	ठ	क	र	त	र	जा	ऽ	इ	ये	ऽ	ज	ग

दीश के पद   ।

सिद्ध-वन्दन !

दयामय सिद्ध प्रभुजी का हृदय में ध्यान लाते हैं,
प्रभव भावों के द्वारा अलौकिक शान्ति पाते हैं।
अचल-सुख विगत-दुख सर्वज्ञानन्द अविनाशी
जरा और मृत्यु के दुखियारी चक्कर में न आते हैं।
मिथ्यातम क्रोध मद माया तथा लोभादि रिपु जीते
जलाकर राग द्वेषांकुर सिद्धात्मा कहाते हैं।
तुम्हारे रूप की तुलना किसी से हो नहीं सकती
बराबर विश्व के सब दृश्य तुमसे मुँह छिपाते हैं।
पहुँच तुम तक नहीं हो सकती मनकी और वाणी की
लगा कर तर्क पर तर्कें विबुध सब हार जाते हैं।
विमल ज्ञान लोचन से तथा दृढ़ ध्यान के बल से
तुम्हारा रूप तो योगीन्द्र ही लखते लखाते हैं।
अमल वन्दन नमन के साथ जीवन मग्न जीवों के
हठीले भक्त को भगवान अपना सा बनाते हैं।
तुम्हीं हो मुक्ति के दाता तुम्हीं हो कर्म के घाता
दया दीनों पै कुछ करना 'अमर' आशा लगाते हैं।

दयामय सिद्ध प्रभुजी का......!

ताल—दादरा

स्थायी—

	x			२		३		x		
ध	स	–	सं	सं	रें	मंरें	गं	सं	–	रें
द	सि	ऽ	द्ध	प्र	भु	जीऽ	ऽ	का	ऽ	ह

नु	नु	ध	प	गु	–	र	रग	म	गु	र	स	–	स
द	य	मैं	ऽ	ध्या	ऽ	न	लाऽ	ऽ	ते	ऽ	हैं	ऽ	अ
र	म	प	ध	नु	–	नु	र	–	नु	ध	प	–	ध
म	ल	आ	ऽ	द	ऽ	र्श	के	ऽ	द्वा	ऽ	रा	ऽ	अ
गु	–	र	र	र	–	र	रग	म	गु	र	स	–	स
लौ	ऽ	कि	क	शा	ऽ	न्ति	पाऽ	ऽ	ते	ऽ	हैं	ऽ	द

या मय सिद्ध ।

अन्तरा —	प ज

प	ध	प	ध	नु	नु	नु	ध	नु	ध	नु	स	स	स
ग	त	भू	ऽ	प	ण	वि	ग	त	दू	ऽ	प	ण	अ
नु	–	ध	–	प	–	प	ध	स	सर	ग	स	–	र
ख	ऽ	डा	ऽ	न	ऽ	न्द	अ	वि	नाऽ	ऽ	शी	ऽ	ज
नु	–	ध	ध	ध	–	ध	ध	नु	प	ध	स	–	नु
रा	ऽ	औ	र	मृ	ऽ	त्यु	के	ऽ	दु	नि	या	ऽ	वि
ध	प	म	गु	र	–	गु	रग	म	गु	र	स	–	स
च	ऽ	क्र	र	में	ऽ	न	आऽ	ऽ	ते	ऽ	हैं	ऽ	द

या मय सिद्ध ।
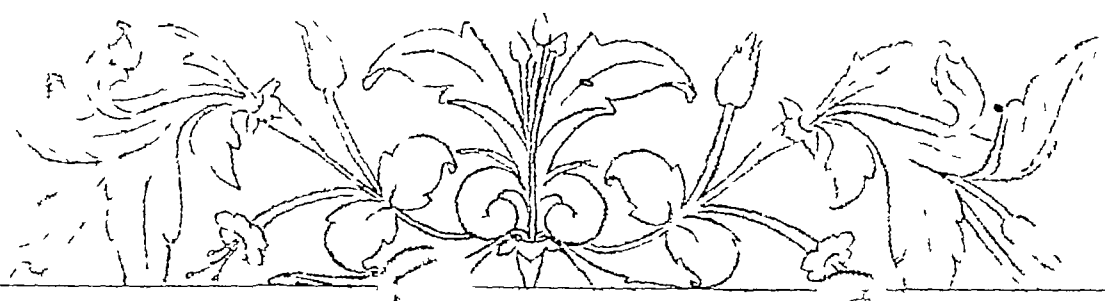
महावीर !

शान्ति सुधारस के वर सागर।
क्लेश कठोर समूल संहारी॥
लोक अलोक विलोक लिये।
जग लोचन केवल ज्ञानक धारी॥
सत्र सुरेश नरेश सभी।
प्रभु मैं पद-पङ्कज वारम्बारी॥
वीर जिनेश्वर धर्म दिनेश्वर।
मङ्गल कीजिये मङ्गल कारी॥

शान्ति-सुधारस के वर……………!

राग मिश्र देशकार, (झपताल—मध्यलय)

स्थायी—

ग	प	ध	ध	प	ग	प	ग	-	स
शां	ऽ	ति	ऽ	सु	धा	ऽ	र	ऽ	स

ध	ध	स	–	स	प	ग	प	प	ध
फे	ऽ	व	ऽ	र	सा	ऽ	ग	ऽ	र
प	ध	स	–	सध	प	ध	प	–	प
फ्ले	ऽ	श	ऽ	अऽ	शे	ऽ	प	ऽ	स
ग	प	ध	–	प	ग	प	रग	–र	स
मू	ऽ	ल	ऽ	स	हा	ऽ	ऽ	ऽऽ	री

अन्तरा—

प	–	स	–	स	स	रं	ध	–	सं
लो	ऽ	क	ऽ	अ	लो	ऽ	क	ऽ	वि
ध	–	स	–	र	स	–	प	–	ध
लो	ऽ	क	ऽ	लि	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	ग	ग	र	स	–	ध	–	प
ज	ग	लो	च	न	के	ऽ	व	ऽ	ल
प	ध	स	–	प	ग	प	ग	–र	स
आ	ऽ	न	ऽ	के	धा	ऽ	ऽ	ऽऽ	री

अन्तिम मंगल !

भगवन् ! भवाब्धि भीषण
तूने बड़े विलक्षण ।
बेड़ा ज़रा लँघा दे बेड़ा लँघाने वाले !
अज्ञान-ध्वान्त फैला
दिखता कहीं न गैला ।
ज्योति ज़रा जगा दे ज्योति जगाने वाले !
आलस भरा पड़ा है
साहस मरा पड़ा है ।
मुर्दे ज़रा जिला दे मुर्दे जिलाने वाले !
दुष्कर्म—शृंखला से
जकड़ा पड़ा सदा है । —
बन्दी ज़रा छुड़ा दे बन्दी छुड़ाने वाले !
मैं पुत्र तू पिता है
संसार जानता है ।
काबिल ज़रा बना दे काबिल बनाने वाले !

भगवन् ! भवाब्धि भीषण ...... !

राग मिश्र भैरवी, दादरा (मध्यलय)

				स्थायी—						सा	रे
×				•		×				म	ग
ध़	ध़	सा	ग॒	-	म	म	प	-	प	प	-
व	न्	भ	वा	ऽ	ब्धि	भी	ऽ	ष	ण	हूँ	ऽ

पधु	नु	धु	प	–	प	गु	म	गु	स	स	रे
वेऽ	ऽ	ष	ड़े	ऽ	वि	च	ऽ	त्र	ग	वे	ऽ
नु	स	गु	म	धु	नु	सरे	गं	स	–	रे	–
डा	ऽ	ज	रा	ऽ	लॅ	धाऽ	ऽ	दे	ऽ	वे	ऽ
नु	–	धु	मं	–	गु	रे	–	स	–	स	रे
ड़ा	ऽ	लॅ	धा	ऽ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	भ	ग

अन्तरा—

										धु	–
										अ	ऽ
धु	–	म	धु	धु	नु	नु	स	स	–	स	स
क्षा	ऽ	न	ध्वा	ऽ	न्त	फै	ऽ	ला	ऽ	दि	ख
सरे	गं	स	(धु)	–	नु	नु	स	स	–	स	रे
ताऽ	ऽ	क	हीं	ऽ	न	गै	ऽ	ला	ऽ	ज्यो	ऽ
म	–	म	गं	–	गं	रे	रे	स	–	रें	रे
ती	ऽ	ज	रा	ऽ	ज	गा	ऽ	दे	ऽ	ज्यो	ऽ
नु	–	धु	मं	–	गु	रे	–	स	–	सा	रे
ती	ऽ	ज	गा	ऽ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	भ	ग

वन् । (शेष अन्तरे भी इसी प्रकार कहे जायेंगे)

ध	ध़	स	–	र	ग	ग	स	र	ग	म	ग	–	स
अ	प	र	ऽ	पा	ऽ	र	हो	ऽ	जा	ऽ	ये	ऽ	स
र	र	प	प	ग	–	म	र	–	ग	–	स	स	र
फ	ल	स	व	ओ	ऽ	र	से	ऽ	पा	ऽ	व	न	म
ध	ध	स	स	र	ग	ग	स	र	ग	म	ग	–	स
नु	ज	अ	व	ता	ऽ	र	हो	ऽ	जा	ऽ	ये	ऽ	प्र

भो मेरा हृदय गुण सिन्धु अपरम्पार हो जाए।

अन्तरा—

र
खु

र	ग	स	–	र	–	र	ग़	–	म	म	प	–	प
शी	ऽ	हो	ऽ	र	ऽ	ज	हो	ऽ	कु	छ	हो	ऽ	र
प	–	प	म	प	ध	ध	प	–	म	म	ग	–	र
हूँ	ऽ	मैं	ऽ	प	ऽ	क	सा	ऽ	ह	र	द	म	हृ
र	र	प	–	ग	–	म	र	र	ग	–	र स	–	स
द	य	के	ऽ	य	ऽ	त्र	प	र	मे	ऽ	रा	ऽ	अ
ध	ध	स	स	र	ग	ग	स	र	ग	म	ग	–	स
ट	ल	अ	धि	का	ऽ	र	हो	ऽ	जा	ऽ	प	ऽ	प्र

भो मेरा हृदय गुण सिन्धु अपरम्पार हो जाए।
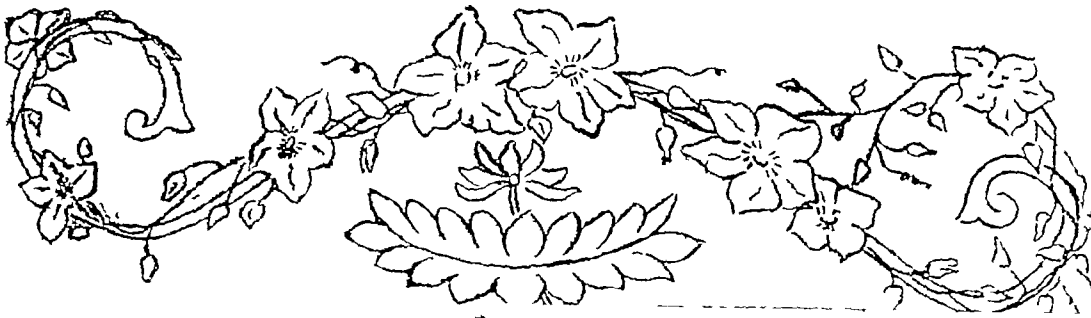
गुरुदेव !

लग गई लग गई लग गई हो
प्रीती लग गई मोरी नाल गुरां दे।

भाग्य अनूठे जगे हमारे
सतगुरु पुर में आन पधारे
दिल की कलियां खिल गई हो !

व्याख्यानों का ठाठ लगा है
मन का सब सन्देह भगा है
ज्ञान की झड़ियां लग गई हो !

राग-द्वेष का भाव हटाया
साम्य भाव का ध्वज फहराया
प्रेम बदरिया भर गई हो !

पूर्ण अहिंसा का व्रत लीना
अभय सर्व जीवों को दीना
करुणा रग-रग बस गई हो !

छोड़ी सब धन कंचन माया
अनासक्ति को कंठ लगाया
तृष्णा-बेल उखड़ गई हो !

दुराचार पाखण्ड हटाते,
सदाचार आदर्श सिखाते
पाप की बेड़ी कट गई हो !

सतगुरु की करुणा है भारी
'अमर' हमारी दशा सुधारी
भाव भँवर से तर गई हो !

———
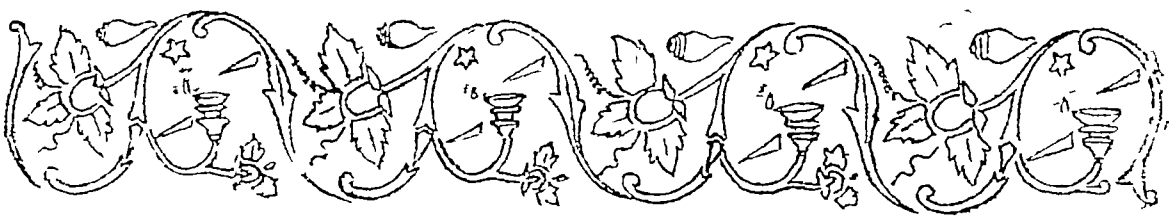
लग गई, लग गई..........!

ताल कहरवा

स्थाई—

×				०				×				०			
स	-	स	-	र	-	स	-	र	-	म	-	प	म	ध	-
ल	ग	ग	ई	ल	ग	ग	ई	ल	ग	ग	ई	हो	ऽ	ऽ	ऽ
-	-	प	ध	-	प	-	म	म	प	प	म	ग	म	र	-
ऽ	ऽ	प्री	ऽ	ऽ	ती	ऽ	ऽ	ल	ग	ग	ई	मो	ऽ	री	ऽ
-	-.	ग	-	-	स	-	स	स	-	-	-	स	-	-	-
ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ल	ऽ	गु	रा	ऽ	ऽ	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

*	स	स	स	न	स	ध	-	*	गप	ध	न	ध	-	(न)प	-
*	भा	ग्य	अ	नू	ऽ	ठे	ऽ	*	जऽ	गे	ह	मा	ऽ	रे	ऽ
*	स-	स	स	न	स	ध	-	*	गप	ध	न	ध	-	(न)प	-
*	सत्	गु	रु	पु	र	में	ऽ	*	आऽ	न	प	धा	ऽ	रे	ऽ
स	-	स	-	र	-	स	-	र	-	म	-	प	म	ध	-
दि	ल	की	ऽ	क	लि	यां	ऽ	खि	ल	ग	ई	हो	ऽ	ऽ	ऽ
-	-	प	ध	-	प	-	म	म	प	प	म	ग	म	र	ग
ऽ	ऽ	प्री	ऽ	ऽ	ती	ऽ	ऽ	ल	ग	ग	ई	मो	ऽ	री	ऽ
स	र	ग	-	-	स	-	स	स	-	-	-	स	-	-	-
ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ल	ऽ	गु	रा	ऽ	ऽ	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ
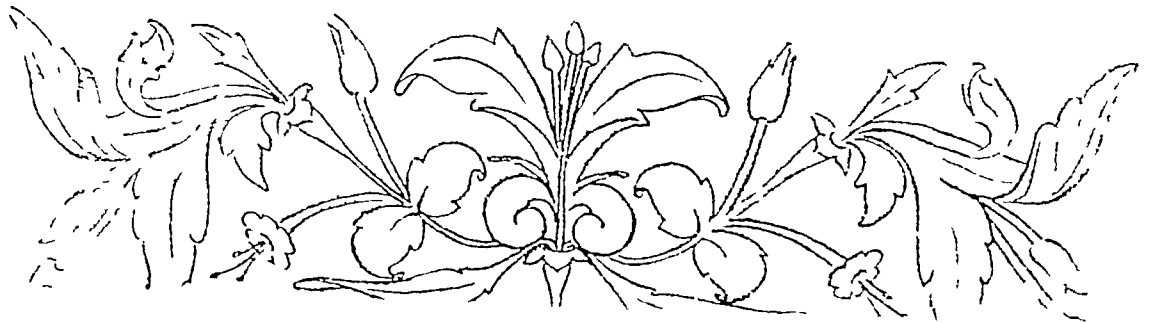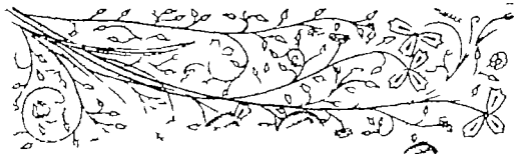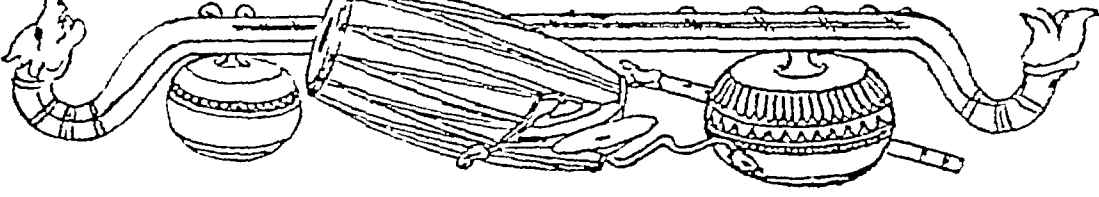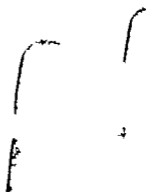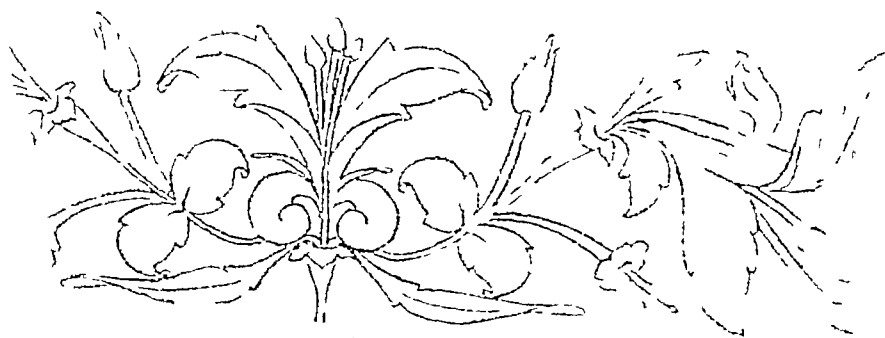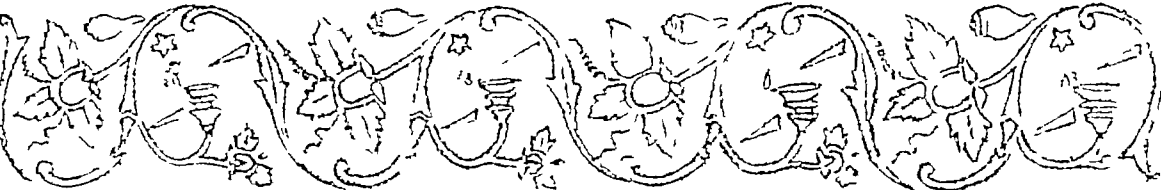
जा ग र ण

अन्तर्जागरण !

हठीले भाई! जाग-जाग अन्तर में!
छाई काली घटा घुमड़ के,
आया अन्धड़ प्रबल उमड़ के।
ज्ञान-दीप बुझने ना पाये सावधान अन्दर में!
सोतों में ही जीवन जाता
समय न अपना तनिक सँभाला।
मानव क्या बनमानुस ही है समझ नहीं अन्दर में!
साथी तेरे गए अगाड़ी
तू क्यों सोता पड़ा अनाड़ी।
देख! पिछड़ना ठीक नहीं है जीवन के संगर में!
कायर बन कर रोता क्या है
'अमर' स्वप्न से होता क्या है!
कमर बांध कर बढ़, छुपा है शंकर इस कंकर में!

हठीले भाई! जाग-जाग·······!

(राग जोगिया मिश्र) ताल—कहरवा

						स्थायी—										स
•				×				•				×				ह
ध	रे	म	म	•	प॒	ध॒	प	~	म	ग	म	रे़	रे़	स	ऽ	
ठी	ले	भा	ई	•	आऽ	ग	जा	ऽ	ग	अं	ऽ	त	र	में		

–	–	–	–	#.	रे	–	रे	रे	–	स	–	रे	म	–	ग
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	#	छा	ऽ	ई	का	ऽ	ली	ऽ	घ	टा	ऽ	घु
रे	रे	स	–	#	स	–	रे	म	–	म	म	प	प	प	धु
म	ड़	के	ऽ	#	आ	ऽ	या	अ	ऽ	न्ध	ड़	प्र	ब	ल	उ
धु	नु	धु	-प	#	प	प	प	धु	धु	न	न	न	स	स	–
म	ड़	के	ऽ	#	क्षा	न	दी	ऽ	प	बु	झ	ने	ऽ	ना	ऽ
रे	–	स	–	न	–	स	धु	–	प	म	–	रे	रे	स	स
पा	ऽ	ये	ऽ	सा	ऽ	व	धा	ऽ	न	अ	ऽ	त	र	में	ह

ठीले भाई · ••।

अन्तरा—

#	प	–	धु	न	–	स	–	–	स	स	स	न	स	स	–
#	भो	ऽ	गों	में	ऽ	ही	ऽ	ऽ	जी	व	न	गा	ऽ	ला	ऽ
#	स	स	रे	ग	ग	म	–	रे	रे	रे	स	न	स	स	–
#	ल	ख	न	अ	प	ना	ऽ	त	नि	क	सॅ	भा	ऽ	ला	ऽ
#	ग	ग	ग	रे	–	स	स	#	न	न	स	धु	–	प	–
#	मा	न	व	क्या ऽ		व	न	#	मा	नु	स	ही	ऽ	है	ऽ
प	नु	धु	प	म	–	ग	म	रे	रे	स	स	स	रे	म	म
स	म	झ	न	हीं	ऽ	व	ऽ	द	र	में	ह	ठी	ले	भा	ई

जाग-जाग अन्तर में · ••।

जीवन-संग्राम !

जीवन का रण-क्षेत्र है उठो करो तैयारियां,
सोते पड़े हो क्यों वृथा ले रहे हो अँगड़ाइयां।
भूलो न सब कुछ है यहीं पर अन्त की भी हो फिकर,
यहाँ कभी सदा नहीं मीठी-मीठी मिठाइयां।
छोड़ो सभी बुराइयां जीवन पवित्र हो बना,
वरना नरक में सड़ना है मुँह पै उड़ेंगी हवाइयां।
आये हो मानव लोक में कुछ तो भलाई कर चलो
जिन्दा रखेंगी मरे पै भी तुमको तुम्हारी भलाइयां।
दीनों की रक्षा के लिए, सर्वस्व को भी भेंट दो
बोलो जमाने ! कब तलक बांधे फिरोगे खामियां ?
पूर्ण मनुष्य आओ बन देव गणों के भी प्रभू
दूर करो सभी 'अमर' जो हैं हृदय की खामियां।

जीवन का रण-क्षेत्र है !

स्थाई—ताल, दादरा (मध्यलय)

×			•			×			•		
ध	स	र	म	ग	र	स	र	स	गप	गप	-
जी	व	न	का	र	ण	क्षे	ऽ	त्र	हैऽ	ऽऽ	ऽ
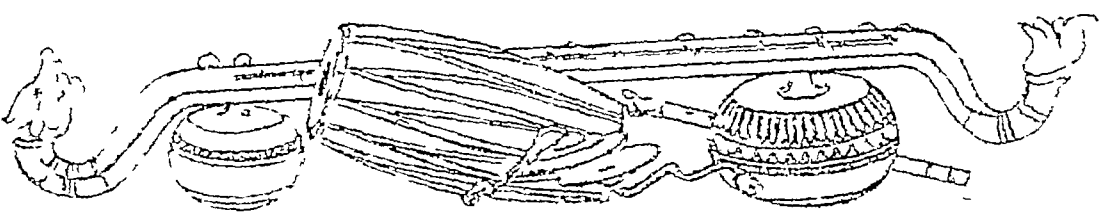
म	म	र	ग	ग	स	र	–	न	स	–	–
उ	ठो	क	रो	तै	ऽ	या	ऽ	रि	यां	ऽ	ऽ
ध	स	र	ग	–	स	र	–	स	नृध	नध	–
सो	ते	प	ड़े	ऽ	हो	क्यों	ऽ	वृ	थाऽ	ऽऽ	ऽ
म	म	र	ग	ग	स	र	–	न	स	–	–
ले	र	हे	हो	अँ	ग	ड़ा	ऽ	इ	या	ऽ	ऽ

अन्तरा—

प	ग	म	प–	प	प	प	–	म	ध	–	–
भू	लो	न	सब	कु	छ	है	ऽ	य	हीं	ऽ	ऽ
ध–	नृ	ध	प	–	म	गम	प	म	ग–	–	–
पर	ज	न्म	की	ऽ	भी	होऽ	ऽ	फि	कर	ऽ	ऽ
ध–	स	र	ग	–	स	र	–	स	नृध	नध	–
रह	ती	क	भी	ऽ	स	दा	ऽ	न	हींऽ	ऽऽ	ऽ
म	म	र	ग	–	स	र	–	न	स	–	–
मी	ठी	मी	ठी	ऽ	मि	ठा	ऽ	इ	या	ऽ	ऽ

जीवन का रणक्षेत्र है…..।

जीवन में मधु घोल !

खोल मन ! अब भी आँखें खोल ।
बड़ा लाभ कुछ मिला हुआ है जीवन अति अनमोल ॥
जग-पति के चरणों में सोजा
प्रेम-सुधा पी पागल होजा ।
अपने पन में आप हि खोजा
प्रेम की मदिरा ढोल ॥
देख दुखी को झट खिल जा तू
सेवा में तिल-तिल पिस जा तू ।
अर्थी बन सह सिल जा तू
बोल न कुछ भी बोल ॥
'अमर' अमर पथ पर पग धर ले
दुस्तर तम भवसागर तर ले ।
अन्दर बाहर सुगन्ध भर ले
जीवन में मधु घोल ॥

खोल मन अब भी आँखें......!

राग बहार मिश्र (त्रिताल) मध्यलय

स्थायी—															ख
२				०				३				×			खो
सं	रें	न	सं	ध	ध	प	–	म	प	ग	म	ध	–	ध	न
ऽ	ख	म	न	अ	ब	भी	ऽ	आँ	ऽ	खें	ऽ	खो	ऽ	ल	खो

स	र	न	स	न॒	न॒	प	-	म	प	ग॒	म	न॒	ध	न	स
ऽ	ल	म	न	अ	व	भी	ऽ	आ	ऽ	खें	ऽ	खो	ऽ	ल	खो
स	र	न	स	न॒	प	-	प	-	प	म	प	ग॒	ग॒	ग॒	म
ऽ	ल	म	न	उ	ठा	ऽ	ला	ऽ	भ	कु	छ	मि	ला	ऽ	हु
र	-	स	-	स	म	म	म	म	प	ग॒	म	न॒	-	ध	न
आ	ऽ	है	ऽ	जी	ऽ	व	न	अ	ति	अ	न	मो	ऽ	ल	खो

अन्तरा—

न॒	न॒	प	प	प	-	म	प	ग॒	-	ग॒	म	र	-	स	-
ज	ग	प	ति	के	ऽ	च	र	णों	ऽ	में	ऽ	सो	ऽ	जा	ऽ
स	म	म	म	म	प	ग॒	म	म	न॒	ध	न	स	र	न	स
प्रे	ऽ	म	सु	धा	ऽ	पी	ऽ	पा	ऽ	ग	ल	हो	ऽ	जा	ऽ
गं॒	गं॒	गं॒	-	गं॒	गं॒	गं॒	-	गं॒	म	र	स	र	न	स	-
अ	प	ने	ऽ	प	न	में	ऽ	अ	थ	इ	ति	खो	ऽ	जा	ऽ
न॒	न॒	प	-	म	प	ग॒	म	न॒	-	ध	न	स	र	न	स
भ्र	म	की	ऽ	म	दि	रा	ऽ	ढो	ऽ	ल	खो	ऽ	ल	म	न

मनुष्य !

मनुज हूँ मैं यहाँ मनुजत्व का उपहार लाया हूँ
हिमालय सा अतुल कर्तव्य का शिर भार लाया हूँ।
मिलेगा जो मुझे आनन्द मद में झूम जाएगा।
हृदय में प्रेम-वीणा की मधुर झनकार लाया हूँ।
सुगंधित पुष्प हूँ खिलकर सुगंधित विश्व करदूँगा।
कभी भी कम न हो वह गन्ध का भंडार लाया हूँ।
सतायेंगे मुझे क्यों कर कुटिल रिपु काम क्रोधादिक।
चमकती ज्ञान की तीक्ष्ण प्रबल तलवार लाया हूँ।
पड़ें आपत्तियों के वज्र शिर पर क्यों न कितने ही।
बढूँगा हट ना पीछे विजय का सार लाया हूँ।
मिटेंगे देश कुल और जाति के सब भेद जग में से।
अखिल भू पर बसा नर जाति का परिवार लाया हूँ।
बदल दूँगा सभी हा-हा भरी यह नर्क की दुनियाँ।
'अमर' सुन्दर शिवं कर स्वर्ग का संसार लाया हूँ।

ताल दीपा (मध्यलय)

					स्थायी—								म
२		३		×			२		३		×		म
र	स	ग	स	र	–	र	र	स	र	प	ग	–	म
मु	न	हूँ	ऽ	मैं	ऽ	य	हाँ	ऽ	म	नु	ज	ऽ	त्व
र	–	म	म	र	म	म	प	म	मप	धप	ग	–	म
का	ऽ	उ	प	हा	ऽ	र	ला	ऽ	याऽ	ऽऽ	हूँ	ऽ	हि

र	स	न	स	र	–	र	र	र	ग	म	र	–	ग॒
मा	ऽ	ल	य	सा	ऽ	अ	तु	ल	क	र	त	ऽ	व्य
स	–	स	स	र	म	म	प	म	मप	धप	ग॒	–	म
का	ऽ	शि	र	भा	ऽ	र	ला	ऽ	याऽ	ऽऽ	हूँ	ऽ	म

नुज हूँ मैं यहां मनुजत्व का उपहार लाया हूँ।

अन्तरा (ठेकाबन्द)

म	म	–	प	–	न	–	न	न	–	न	–	न	–	स	न	स	न	स
मि	ले	ऽ	गा	ऽ	जो	ऽ	मु	भे	ऽ	आ	ऽ	न	ऽ	द	म	द	में	ऽ

–	धस	नध	पध	नस	नस	–	न॒	–	न॒	न॒ध	पम	ग॒र	सर	मप
ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	झ	ऽ	म	जाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ

धस	न॒ध	प-	–	–	न॒ध	पम	ग॒र	सग॒	–	र	–
येऽ	गाऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ

ठेका शुरू—	म
	हृ

र	स	न	स	र	–	र	र	स	र	प	ग॒	–	म
द	य	में	ऽ	प्रे	ऽ	म	वी	ऽ	णा	ऽ	की	ऽ	म
र	र	स	स	र	म	म	प	म	मप	धप	ग॒	–	म
धु	र	झ	न	का	ऽ	र	ला	ऽ	याऽ	ऽऽ	हूँ	ऽ	म

नुज हूँ मैं यहां मनुजत्व का उपहार ' ।

अहिंसा की प्रधानता !

अहिंसा ही दुनियाँ में सबसे प्रखर है
नहीं मित्र ! इसमें ज़रा भी कसर है।

अहिंसा के आगे झुके विश्व सारा
अहिंसा में कैसा विचित्र असर है !

असंभव नहीं कोई वस्तु जगत को
सभी कुछ हो संभव अहिंसा अगर है !

अहिंसा से मिलती है सुख शान्ति सच्ची
अहिंसा ही मुक्ती की सीधी डगर है !

अहिंसा से बस,आत्मा का भला हो
अहिंसक ही दुनियाँ में रहता निडर है !

अहिंसा है भयभीत मन की निशानी'
जो कहते हैं उनको न कुछ भी खबर है !

नहीं है अमर कोई वस्तु जहां में
'अमर' पर अहिंसा तो बेशक अमर है !

—•—
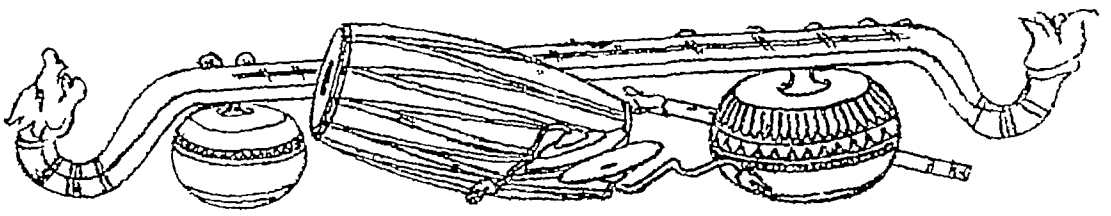
अहिंसा ही दुनियां में............!

स्थायी (कहरवा)																स
×				०				×				०				अ
र	–	म	म	ग॒	ग॒	र	र	न	स	र	र	स	स	ऩ		स
हिं	ऽ	सा	ही	दु	नि	या	में	स	ब	से	प्र	व	र्	है		न
र	–	म	म	ग॒	ग॒	र	र	स	–	ग॒	र	स	स	ऩ		स
हीं	ऽ	मि	त्र	इ	स	में	ज़	रा	ऽ	भी	क	स	र	है		अ

हिंसा ही दुनिया में सबसे प्रवर है ... ।

अन्तरा																स
																अ
र	–	म	म	प	–	प	ध	पध	न॒	ध	प	म	प	ग॒		स
हिं	ऽ	सा	के	आ	ऽ	गे	झु	केऽ	ऽ	वि	श्व	सा	ऽ	रा		अ
र	–	म	म	ग॒	–	र	र	न	स	र	र	स	स	न		स
हिं	ऽ	सा	में	कै	ऽ	सा	वि	चि	ऽ	त्र	अ	स	र	है		अ

हिंसा ही दुनियां में सबसे प्रवर है ... ।

अमूल्य नर जन्म !

उपकार करो तन से मन से
धन से जन से जग-दुःख हरो।

अविचार अनीति तजो सब ही
मत वैभव का कुछ गर्व करो॥

अपने पर खूब सचेत रहो
फिर तो जग में अणु भी न डरो।

नर जन्म अमोल मिला कुछ तो
परलोक हितार्थ विचार धरो॥

—•—

उपकार करो तन से मन……!

ताल—कहरवा

स्थायी—

														स	ध
×				•				×						उ	प
स	म	ग	ध	ग	म	र	ग	म	प	प	प	प	–	प	ध
का	ऽ	र	क	रो	ऽ	त	न	से	ऽ	म	न	से	ऽ	ध	न

न॒	स	स	न॒	न॒	ध	ध	प	प	म	प	म	ग	–	स	न
से	ऽ	ज	न	से	ऽ	ज	ग	दु	ऽ	ख	ह	रो	ऽ	अ	वि

चार गर्व करो। (इसी प्रकार गाया जायगा)

अन्तरा—

														ग	म
														अ	प
प	न	न	न	न	स	ध	न	न	स	स	स	स	–	स	न
नं	ऽ	प	र	गू	ऽ	व	स	चें	ऽ	त	र	हो	ऽ	फि	र
स	ग	ग	र	र	म	स	र	न	स	स	स	स	–	प	ध
तो	ऽ	ज	ग	मँ	ऽ	अ	णु	भी	ऽ	म	ड	रो	ऽ	न	र
स	स	स	स	स	–	स	र	न॒	–	न॒	ध	प	–	प	ध
ज	ऽ	न्म	अ	मो	ऽ	ल	मि	ला	ऽ	कु	छ	तो	ऽ	प	र
न॒	स	स	न॒	न॒	ध	ध	प	ग	म	प	म	ग	–,	स	न
लो	ऽ	क	हि	ता	ऽ	र्थ	नि	का	ऽ	ल	ध	रो	ऽ	उ	प

कार करो तन से ।

मनवा !

मनवा ! तू नहीं मानत है !
पाप पंक से दिवा-रात्रि मम अन्तर सानत है ॥
प्रभु-भजन करने को बैठूँ तू चटपट मित्र ठानत है ।
बार-बार समझाया फिर भी हठ अपनी ही ठानत है ।
विषय-भोग कटु विष मैं समझूँ तू मधु अमृत जानत है ।
पागल क्यों अविराम एक स्वर नित कीर्ति बखानत है ।
जब लग जग वन्दन जगपति का नहीं रूप पिछानत है ।
तब लग 'भ्रमर' मृत्यु तव सिर पर खड़ा-खड़ा तानत है ।

मनवा तू नहीं मानत है......।

राग पीलू, ताल कहरवा

स्थाई—

•				×				•				×			
स	र	स	नृ	-	स	र	प	ग	-	सं	नृ	स	-	-	-
म	न	वा	ऽ	ऽ	तू	न	हिं	मा	ऽ	न	त	है	ऽ	ऽ	ऽ
-	-	-	-	-	धु	प	ध्रु	न	प	ध	-	-	गग	-	ग
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पा	प	पं	ऽ	क	से	ऽ	ऽ	दिवा	ऽ	रा

र	म	म	ग	–	प	प	प	प	–	प	ध	ग	प	म	ग
ऽ	त्रि	म	म	ऽ	अ	न्त	र	सा	ऽ	न	त	है	ऽ	ऽ	ऽ
स	र	(स)	न	–	स	र	प	ग	–	स	न	स	–	–	–
म	न	वा	ऽ	ऽ	तू	न	हिं	मा	ऽ	न	त	है	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

स	र	स	न	*	स	ग	म	प	प	ध	प	ग	म	ध	प
म	न	वा	ऽ	*	प्र	भू	भ	ज	न	क	र	ने	ऽ	को	ऽ
ग	र	स	न	प	–	प	प	प	प	ध	प	म	ग	र	र
धै	ऽ	हूँ	ऽ	तू	ऽ	ख	ट	प	ट	नि	ज	ठा	ऽ	न	त
र	ग	म	प	*	ध	ध	ध	–	ध	ध	ध	न	–	ध	प
है	ऽ	ऽ	ऽ		बा	र	वा	ऽ	र	स	म	झा	ऽ	या	ऽ
ग	म	प	–	प	प	प	प	म	–	प	ध	ग	प	म	ग
फि	र	भी	ऽ	ह	ठ	अ	प	नी	ऽ	ही	ऽ	ता	न	त	है
स	र	स	न												
ऽ	म	न	वा	तू नहिं मानत है ।											
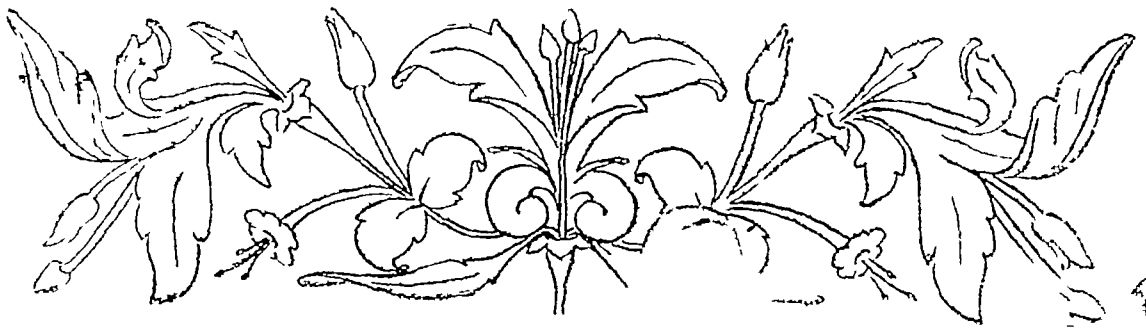
प्रतिज्ञा पालन !

प्रतिज्ञा पै क़ायम रहो चाहे कुछ हो,
नहीं पीछे हर्गिज़ हटो चाहे कुछ हो।
प्रतिज्ञा के बल से ही मिलती है इज़्ज़त
प्रतिज्ञा को पूरण करो चाहे कुछ हो।
पशु हैं मनुज वे जो प्रण के न पक्के
अतः सच्चे मानव बनो चाहे कुछ हो।
प्रतिज्ञा पाली की विजय हो ज़रूरी
कभी न हताश रहो चाहे कुछ हो।
प्रतिज्ञा से होता सुयश सारे जग में
"अमर" अपने यश को रखो चाहे कुछ हो।
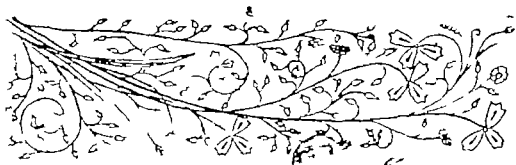
प्रतिज्ञा पै कायम रहो..........!

ताल कहरवा, स्थायी—															ध
×	-			०				×				०			प्र
स	–	स	न	ध	न	ध–	ध	प	–	म	ग	म	ध	–	ध
ति	ऽ	ज्ञा	पै	का	ऽ	यम	र	हो	ऽ	चा	हे	कुछ	हो	ऽ	न
स	–	स	न	ध	न	ध–	ध	प	–	म	ग	म–	ध	–	ध
हीं	ऽ	पी	छे	ह	ऽ	गिंज	ह	टो	ऽ	चा	हे	कुछ	हो	ऽ	प्र

तिज्ञा पै कायम रहो चाहे कुछ हो।

अन्तरा															म
×				०				×				०			प्र
ग	म	ध	न	स	स	स	स	स	स	स	न	धन	स	ध–	ध
ति	ऽ	ज्ञा	के	ब	ल	से	ही	मि	ल	ती	है	इऽ	ऽ	ज्जत	प्र
स	–	स	न	ध	न	ध–	ध	प	–	म	ग	म–	ध	–	ध
ति	ऽ	ज्ञा	को	पू	ऽ	रन	क	रो	ऽ	चा	हे	कुछ	हो	ऽ	प्र

तिज्ञा पै कायम रहो चाहे कुछ हो।

———
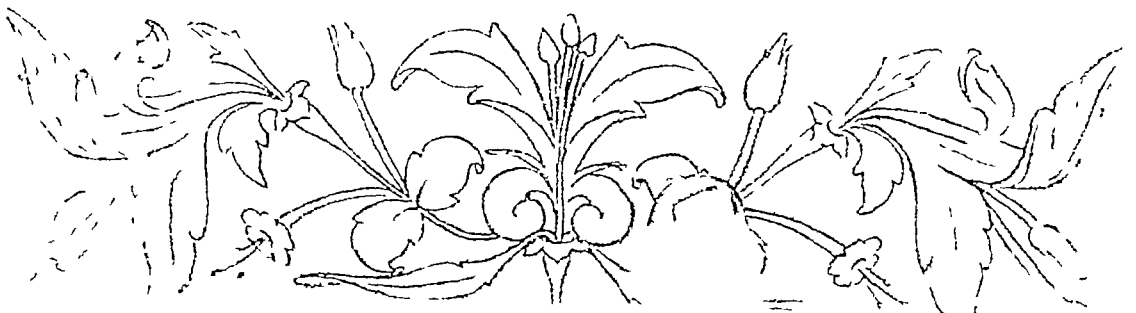
आज के श्रावक

श्रावकों ने अपना सब गौरव गँवाया इन दिनों।
उच्चतम जीवन गिरा पामर बनाया इन दिनों॥
शास्त्र का व्याख्यान अब क्योंकर भला भावे पसंद।
सैरों की बहार में आनन्द पाया इन दिनों॥
छान कर पीते हैं पानी स्थावरों की है दया।
पेट पर दीनों के [illegible] चलाया इन दिनों॥
आप खुद तो दिन में दो-दो बार सोने चाहते।
मूर्ख सच्चे मार्ग को धक्का दिखाया इन दिनों॥
आके धर्म-स्थान में भी छोड़ते न प्रपंचता।
धर्म महिमा का वृथा पाखण्ड छाया इन दिनों॥
धर्म-रक्षक अब 'अमर' आनन्द से श्रावक कहाँ।
नाम धारी श्रावकों का दिन है आया इन दिनों॥

श्रावकों ने अपना सब........!

स्थायी (ताल पश्तो) मध्यलय

×			२		३		×			२		३	
म	–	म	ग	–	ध	म	सं	सं	म	ध	ध	प	प
श्रा	ऽ	व	कों	ऽ	ने	ऽ	अ	प	ना	स	ब	गौ	ऽ
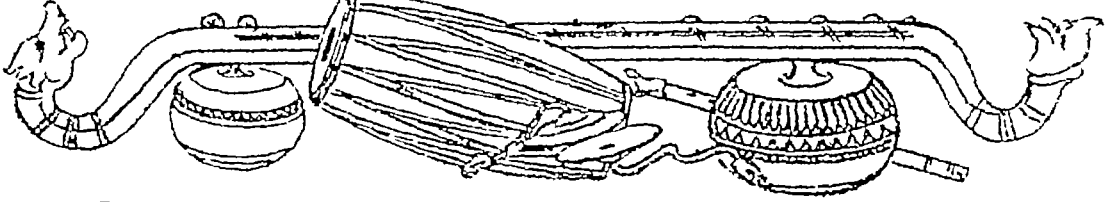
मं	मं	प	ग	–	स	–	ग	ग	मं	प	–	–	–
र	व	गॅ	वा	ऽ	या	ऽ	इ	न	दि	नों	ऽ	ऽ	ऽ
न	–	न	न	न	ध	न	स	स	न	ध	–	प	–
उ	ऽ	घ	त	म	जी	ऽ	घ	न	नि	रा	ऽ	पा	ऽ
मं	मं	प	गम	गर	स	–	ग	ग	मं	प	–	–	–
म	र	व	नाऽ	ऽऽ	या	ऽ	इ	न	दि	नों	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

मं	–	ग	मं	–	ध	ध	स	–	स	स	स	स	–
शा	ऽ	स्त्र	का	ऽ	व्या	ऽ	ख्या	ऽ	न	श्र	व	क्यों	ऽ
न	न	न	न	–	ध	न	धन	स	न	ध	–	प	–
क	र	भ	ला	ऽ	आ	ऽ	येऽ	ऽ	प	स	ऽ	ऽ	द
न	–	न	न	–	ध	न	स	स	न	ध	–	प	–
भै	ऽ	र	वी	ऽ	की	ऽ	व	ह	र	में	ऽ	आ	ऽ
मं	–	प	गम	गर	स	–	ग	ग	मं	प	–	–	–
न	ऽ	द	पाऽ	ऽऽ	या	ऽ	इ	न	दि	नों	ऽ	ऽ	ऽ

कीर्ति-कृति !

भू लोक में आये हो कुछ तो कीर्ति-कृति कर जाइयो
भंडार आगे के लिये भी पाप कर भर जाइयो।
दे डालियो जो पास हो सर्वस्व दीनों के लिये
कौड़ी पै कौड़ी जोड़कर धरती में ना धर जाइयो॥
जो शत्रु अति ही दुःख दे उसका भी हित कीजो सदा
पिछली बुरी बातों को करके याद मत डर जाइयो।
दुष्कर्म करने के हृदय में जब विचार उठें तभी
धर ध्यान रावण आदि के इतिहास पर डर जाइयो॥
यह सार है नर ज़िन्दगी का सीखियो कवियो 'अमर'
जीना उचित हो जी-इयो मरना उचित मर जाइयो।

भू लोक में आये हो !

स्थायी (दादरा)

×						×			•		
स	स	र	ग	–	र	ग	म	र	ग	–	म
भू	लो	क	में	ऽ	ऽ	आ	ये	हो	कु	ऽछ	तो
स	र	नि̣	स	स	र	सर	ग	रे	स	–	रेग
की	ऽ	र्ति	कृ	ति	ऽ	कर	जा	इ	यो	–	ऽऽ

ऩ	स	र	ग॒	–	र	ग॒	म	र	ग॒	–	स
भ	डा	र	आ	ऽ	गे	के	ऽ	लि	ये	ऽ	भी
स	र	ऩ	स	स	र	सर	ग॒	रे॒	स	–	रे॒ऩ
या	ऽ	द	क	र	ऽ	भर	जा	इ	यो	ऽ	ऽऽ

अन्तरा—

प	ध॒	म	प	–	प	प	ध॒	म	प	–	–
दे	डा	लि	यो	ऽ	जो	पा	ऽ	स	हो	ऽ	ऽ
प	ध॒	म	प	–	ग॒	मर्म	मग॒	रे॒	स	–	–
स	र्व	स्व	दी	ऽ	नों	केऽ	ऽऽ	लि	ये	ऽ	ऽ
स	स	र	ग॒	–	र	ग॒	म	र	ग॒	–	स
कौ	ड़ी	पै	कौ	ऽ	ड़ी	जो	ऽ	ड	कर	ऽ	ऽ
सर	र	ऩ	स	–	र	सर	ग॒	रे॒	स	–	रे॒ऩ
धर	ती	में	ना	ऽ	धर	जाऽ	ऽ	इ	यो	ऽ	ऽऽ

स्मरण—रत्न

प्रण-वीर महान न स्वत्व कभी
पथ नीति बिसार गँवावत हैं।
मिल आप पता पर कष्ट कथा
मद तज स्व-दौड़ लगावत हैं।
कट जाँय सहर्ष रणांगण में पर
पैंड न एक डिगावत हैं।
नर-रत्न जगत्मय पूजित वे
'पुरुषोत्तम रत्न' कहावत हैं।

प्रण-वीर महान, न स्वत्व कभी......!

स्थायी (कहरवा)														प	म
×				०				×				०		प्र	ण
प	ध	ध	ध	प	म	ग	ग	ग	-	ग	ग	र	म	स	नृ
वी	ऽ	र	म	हा		न	न	स्व	ऽ	त्व	क	भी	ऽ	प	थ
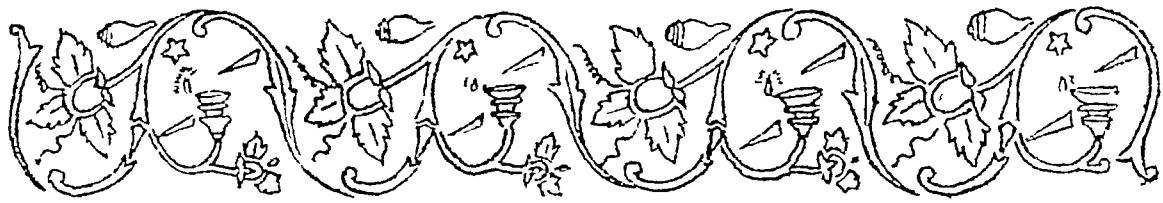
स	र	र	र	र	ग॒	म	ग॒	र	–	र	र	स	–	प	म
नी	ऽ	ति	वि	सा	ऽ	र	गॅ	वा	ऽ	व	त	हैं	ऽ	मि	ल

"मिल जाय सदा" यह पक्ति भी इसी प्रकार वजाई जावेगी ।

														प	प
					अन्तरा—									क	ह
प	ध	ध	सं	स	–	स	स	स	र	र	स	रं	गं॒	गं॒	र
जा	ऽ	य	स	ह	ऽ	पं	र	णां	ऽ	ग	ण	में	ऽ	प	र
स	–	स	र	स	न॒	न॒	ध	ध	न॒	न॒	ध	प	–	प	म
पैं	ऽ	ड़	न	ए	ऽ	क	डि	गा	ऽ	व	त	है	ऽ	न	र
प	ध	न॒	ध	प	म	ग॒	ग॒	ग॒	–	ग॒	ग॒	र	स	स	न
र	त	न	ज	ग	ऽ	त्र	य	पू	ऽ	जि	त	के	ऽ	च	र
स	र	र	र	र	ग॒	म	ग॒	र	–	र	र	स	–	प	म
णो	ऽ	त्त	म	र	त	न	क	हा	ऽ	व	त	हैं	ऽ	प्र	ण

संगठन ।

ज़रूरत है अब तो बड़ी संगठन की
कमी हो रही है बड़ी संगठन की।
जो हैं विश्वभर की सुलभ सम्पदा वे
खरीदी हुई दासियाँ संगठन की॥
विपत्ति के बादल उड़े एक छन में
चले जब कि पछवा हवा संगठन की।
जुदाई में तो तीन छत्तीस रहते
तिरेसठ हो जब हो दशा संगठन की॥
विजय बादशाहों पै पाता है एका,
सुनी हार होती कहीं संगठन की?
कठिन से कठिन काम सहसा सफल हो
बदौलत इसी एकता संगठन की॥
खतरनाक हालत में है रोगी भारत,
पिला दो 'अमर' बस दवा संगठन की।

(ताल परतो)

स्थायी—													म
×			२		३		×			२		३	म
सं	सं	-	ध	प	प	-	सं	प	-	प	म	र	स
ज़	ऽ	ऽ	र	त	है	ऽ	अ	ब	ऽ	तो	ऽ	ब	ऽ

स	र	–	न	–	–	न	स	स	–	गम	पध	नस	न
ड़ी	ऽ	ऽ	स	ऽ	ऽ	ग	ठ	न	ऽ	कीऽ	ऽऽ	ऽऽ	क
स	–	–	ध	–	–	प	मं	प	–	ग	म	र	स
मी	ऽ	ऽ	हो	ऽ	ऽ	र	ही	ऽ	ऽ	है	ऽ	व	ऽ
स	र	–	न	–	–	न	स	स	–	ग	–	–	–
ड़ी	ऽ	ऽ	स	ऽ	ऽ	ग	ठ	न	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा (ठेकाबन्द)

ग	ग	–	प	–	प	पध	नस	स	–	न	न	–	न	–	स	ध	–
जो	हैं	ऽ	वि	ऽ	श्व	भऽ	रऽ	की	ऽ	सु	ख	द	स	ऽ	प	दा	ऽ
प	–	मं	–	ग	–	र	–	स	–								
यें	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ								

ठेका शुरू— न / ख

स	–	–	ध	–	–	प	मं	प	–	ग	म	ग	र
री	ऽ	ऽ	दी	ऽ	ऽ	हु	ई	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	सि
स	र	–	न	–	–	न	स	स	–	गम	पध	नस	न
या	ऽ	ऽ	स	ऽ	ऽ	ग	ठ	न	ऽ	कीऽ	ऽऽ	ऽऽ	ज

रूरत है अब तो बड़ी संगठन की, कमी हो रही है बड़ी सगठन की।

संगठन !

ज़रूरत है अब तो बड़ी संगठन की
कमी हो रही है बड़ी सङ्गठन की।
जो हैं विश्वभर की सुखद सम्पदा वे
बनी ही हुई दासियाँ संगठन की ॥
विपत्ति के बादल उड़े एक क्षण में
चले अब कि पछुवा हवा संगठन की।
सुधारों में तो तीये छत्तीस रहते
तिरेसठ हों अब हो कृपा संगठन की॥
विजय बादशाहों पै पाता है एका,
सुनी हार होती कहीं संगठन की !
कठिन से कठिन काम सहसा सफल हों
बदौलत इसी एकता संगठन की ॥
खतरनाक हालत में है रोगी भारत,
पिला दो 'अमर' बस दवा संगठन की।

(ताल पश्तो)

				स्थायी—									ग
×			१		३		×			२		३	स
म	सं	-	म	ध	प	-	मं	प	-	ग	म	र	स
क	ऽ	ऽ	र	त	है	ऽ	अ	ब	ऽ	हो	ॱ	च	ऽ
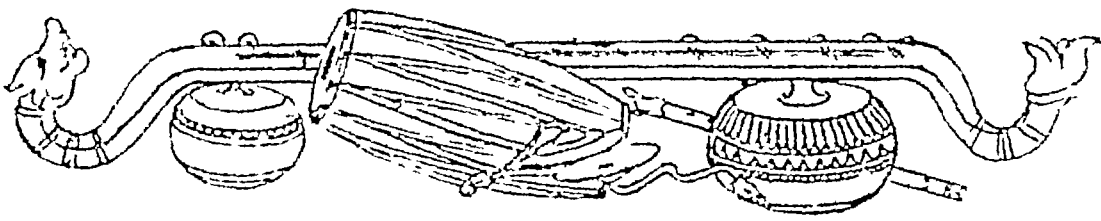
राग-शंकरा, त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी--

०				३				×				४			
स	म	ग	–	प	प	स	न	प	प	ग	प	ग	–	स	–
स	रि	ता	ऽ	त	ट	व	र	ती	ऽ	न	ग	रों	ऽ	को	ऽ
स	स	ग	–	प	–	प	–	प	–	ग	प	ग	–	स	–
र	ह	ता	ऽ	है	ऽ	आ	ऽ	न	ऽ	द	अ	पा	ऽ	र	ऽ
स	–	ग	ग	प	प	म	न	प	प	ग	प	ग	–	स	–
किं	ऽ	तु	था	ऽ	ह	मैं	ऽ	व	ही	ऽ	म	चा	ऽ	ती	ऽ
स	न	प	ग	–	प	स	न	प	–	ग	प	ग	–	स	स
प्र	ल	य	का	ऽ	ल	सा	ऽ	हा	ऽ	हा	ऽ	का	ऽ	ऽ	र

अन्तरा--

प	–	स	स	स	–	स	–	स	स	न	प	प	नध	स	न
अ	ऽ	गि	रु	पा	ऽ	से	ऽ	च	ल	ता	ऽ	है	ऽऽ	स	व
ग	–	प	प	स	न	प	– /	प	प	ग	प	ग	–	स	–
पा	ऽ	क	आ	ऽ	टि	कां	ऽ	ज	ग	व्य	थ	हा	ऽ	र	ऽ
प	प	स	स	स	म	स	स	नस	रस	न	प	प	नध	स	न
किं	ऽ	तु	उ	सी	ऽ	से	ऽ	छिऽ	नऽ	भ	र	में	ऽऽ	हा	ऽ
ग	–	प	प	स	न	प	–	प	–	ग	प	ग	–	स	स
भ	ऽ	स्म	रा	ऽ	शि	हो	ऽ	ता	ऽ	घ	र	था	ऽ	ऽ	र

अनेकान्त दृष्टि ।

(१)
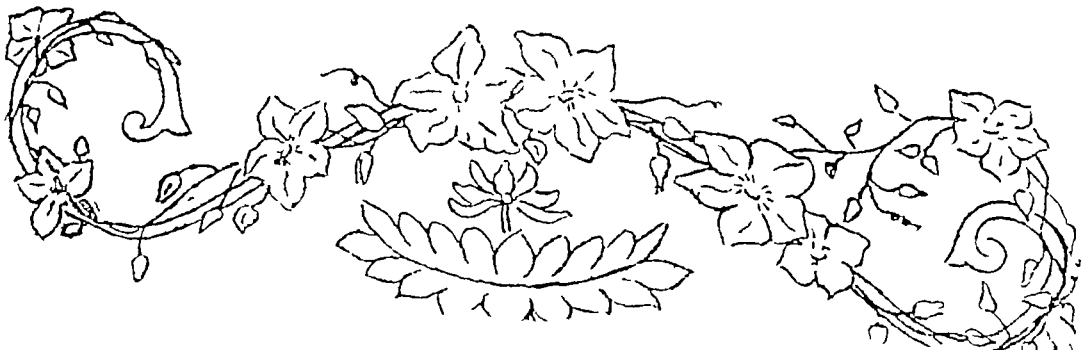
सरिता तट-वर्ती नगरों को
देता है आराम अपार ।
किन्तु बाढ़ में वही मचाती
प्रलय काल-सा हाहाकार ॥

(२)

अग्नि कृपा से चलता है सब
पाक आदि जग का व्यवहार ।
किन्तु उसीसे छिन भर में हा
भस्म-राशि होता घर-बार ॥

(३)

सघन जलद सूखी खेती में
करता नवजीवन संचार ।
वही पलक में कृषक-काल हो
करता हाय सर्व संहार ॥

(४)

विष-लव मधु-सा भी दिखलाता
यमपुर का मंद रौद्र-द्वार ।
किन्तु बना दुस्साध्य रोग से
बन कभी जीवन-दातार ॥

(५)

महा बुरा एकान्त जगत में
कोई न देखा आँख पसार ।
अखिल सृष्टि गुण-दोष मयी है
किससे करें द्वेष या प्यार !
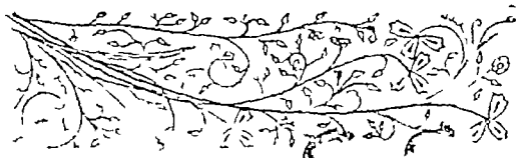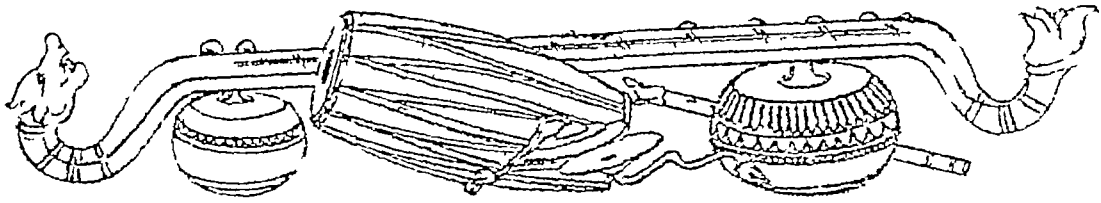
प्राप्त हुआ है किसे जगत में…!

स्थायी (कहरवा)

×				०				×				०			
स	म	म	म	म	–	म	ग॒	ग॒म	प	–	म	ग॒	म	रे॒	स
प्रा	ऽ	प्त	हु	आ	ऽ	है	ऽ	किऽ	से	ऽ	ज	ग	त	में	ऽ
स	म	म	प	ग॒	–	स	रे॒	ग	–स	–	–	–	–	–	–
पू	ऽ	जा	ऽ	का	ऽ	अ	धि	का	ऽर	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

ग॒	–	म	–	ध॒	–	न॒	–	स	–	स	–	स	–	स	स
छो	ऽ	टे	ऽ	से	ऽ	छो	ऽ	टे	ऽ	जी	ऽ	वों	ऽ	प	र
गं॒	गं॒	गं॒	–	र	गं॒	–	स	र	गं॒	–	–	–	–	–	रंस
र	ख	ता	ऽ	कृ	पा	ऽ	अ	पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
स	म	म	म	–	म	म	–	गं॒	म	गं॒	म	रे॒	–	स	–
अ	खि	ल	वि	ऽ	श्व	में	ऽ	स	दा	ऽ	व	हा	ऽ	ता	ऽ
स	रे॒	न॒	स	ध॒	न॒	प	ध॒	म	प	प	म	ग॒	म	रे॒	स
भ्रा	ऽ	तृ	भा	ऽ	व	की	ऽ	धा	ऽ	र	प्रे	ऽ	म	में	ऽ
स	म	म	–	ग॒	ग॒	स	रे॒	ग॒	–स	–	–	–	–	–	–
हू	ऽ	वा	ऽ	स	ब	स	ऽ	सा	ऽर	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
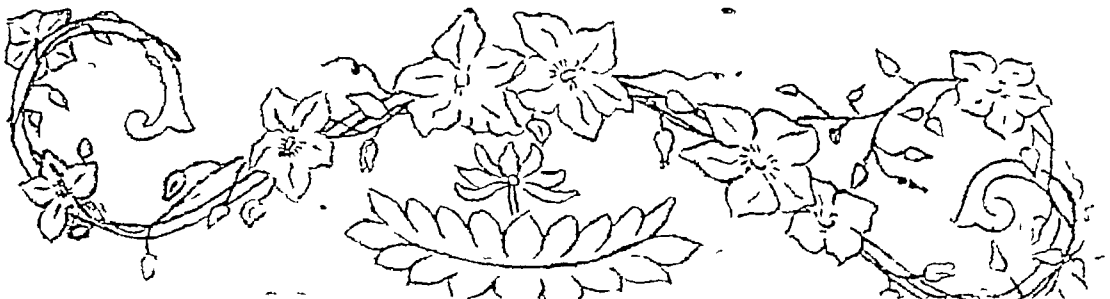
कौन जन महिमा का आगार ?

प्राप्त हुआ है किसे जगत में पूजा का अधिकार !
छोटे से छोटे जीवों पर रखता कृपा अपार,
अखिल विश्व में सदा बहाता भ्रातृ-भाव की धार
प्रेम में डूबा सब संसार !

द्वेष-कषाय का लेश नहीं है नहीं छूता कुविचार
स्वच्छ हृदय है उठें कहीं भी नहीं जरा कुविकार
पूर्ण है संयम का अवतार !

कैसा भी कोई भी अपना करे क्यों न अपकार
शान्ति पूर्ण उपकार रूप में करता है प्रतिकार
क्षमा का खुला रखे नित द्वार !

अपना पर का भेद मिटाकर करले हृदय उदार
दान दक्षिणा के पथ पर सब खुला दिये भंडार
विश्व का बने एक आधार !

मन वाणी और कर्म सभी में अमृत का संचार
आस पास में लाखों कोसों नहीं तनिक भी खार
'अमर' है मृत्युञ्जय हुंकार !

भास हुआ है किसे जगत में...!

स्थायी (कहरवा)

×				०				×				०			
म	म	म	म	म	–	म	ग	गम	प	–	म	ग	म	रे	स
भा	S	स	हु	आ	S	है	S	किS	से	S	ज	ग	त	में	S
म	म	म	प	ग	–	म	रे	ग	–स	–	–	–	–	–	–
पू	S	जा	S	फा	S	अ	धि	फा	Sर	S	S	S	S	S	S

अन्तरा—

ग	–	म	–	ध	–	नु	–	म	–	म	–	स	–	म	स
छो	S	टे	S	मे	S	छो	S	टे	S	जी	S	वों	S	प	र
ग	गं	ग	–	र	ग	–	स	र	गं	–	–	–	–	–	रस
र	ग्र	ता	S	कृ	पा	S	अ	पा	S	S	S	S	S	S	र
म	म	म	म	–	म	म	–	गं	म	गं	म	रे	–	स	–
अ	खि	ल	वि	S	श्व	में	S	स	दा	S	च	हा	S	ता	S
म	रे	नु	स	ध	नु	प	ध	म	प	प	म	ग	म	रे	स
भ्रा	S	तृ	भा	S	व	की	S	धा	S	र	प्रे	S	म	में	S
स	म	म	–	ग	ग	स	रे	ग	–स	–	–	–	–	–	–
हृ	S	गा	S	स	व	स	S	सा	Sर	S	S	S	S	S	S

मूर्ख मन !

मूर्ख मन ! कब तक जहाँ में अपने को भरमायगा
ध्यान श्री जिनराज के चरणों में कब तू लायगा !
भूल कर निज-तत्त्व को जड़ मूल का चेरा बना
क्या इसी भ्रम कल्पना में तू खुदा बन जायगा !
धर्म का धन छोड़ कर पूँजी बटोरी पाप की
ढोंग के बल कब तलक धर्मात्मा कहलायगा !
दीन को दाना न देता दम्भ करता सब स्वयं
जायगा परलोक में तो तू वहाँ क्या खायगा !
जब कि तू होता नहीं औरों के संकट में शरीक
कौन शठ तुझ को यहाँ फिर प्रेम से अपनायगा !
बन्दरों को भी बदलने कूदने में मात दी
मानवी रंग ढंग में कब अपने को तू ठहरायगा !
छोड़ नाता वीर से ले शान्ति की धूनी रमा
अन्यथा पाखंड में फँस कर 'अमर' क्या पायगा !

मूर्ख मन कब तक जहाँ में...!

(ताल तीव्रा) मध्यलय

स्थायी—

×	२	३	×	२	३
प - ध	रें रें	सं सं	पध ध ध	म -	ग -
मू ऽ र्ख	म न	क ब	तऽ क ज	हाँ ऽ	में ऽ
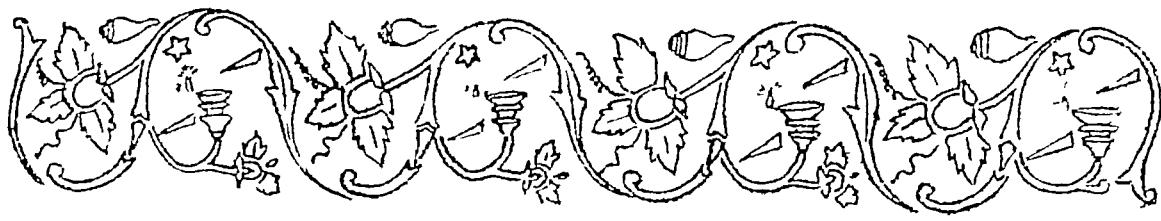
र	ग	स	स	र	ग	म	र	ग	स	स	–	–	–
अ	प	ने	को	ऽ	उ	ल	भा	ऽ	य	गा	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	ध	र	–	स	स	प	न	ध	म	–	ग	ग
ध्या	ऽ	न	श्री	ऽ	जि	न	रा	ऽ	ज	के	ऽ	च	र
र	ग	स	स	र	ग	म	र	ग	स	स	–	–	–
णों	ऽ	में	क	व	तू	ऽ	ला	ऽ	य	गा	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

स	म	म	म	म	म	म	स	ग	स	न	–	स	स
भू	ऽ	ल	क	र	नि	ज	ल	ऽ	क्ष्य	को	ऽ	ज	ड़
न	–	न	स	–	स	स	नस	गं	र	सर	नस	–	–
भू	ऽ	त	का	ऽ	चे	ऽ	राऽ	ऽ	व	नाऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
प	–	ध	र	–	स	स	पध	न	ध	म	–	ग	ग
न्या	ऽ	इ	सी	ऽ	भ्र	म	कऽ	ऽ	ल्प	ना	ऽ	में	ऽ
र	ग	स	स	र	ग	म	र	ग	स	स	–	–	–
तू	ऽ	खु	दा	ऽ	ब	न	जा	ऽ	य	गा	ऽ	ऽ	ऽ

मूर्ख मन कब तक जहां में · · ·· ।

भक्तों से परेशान भगवान
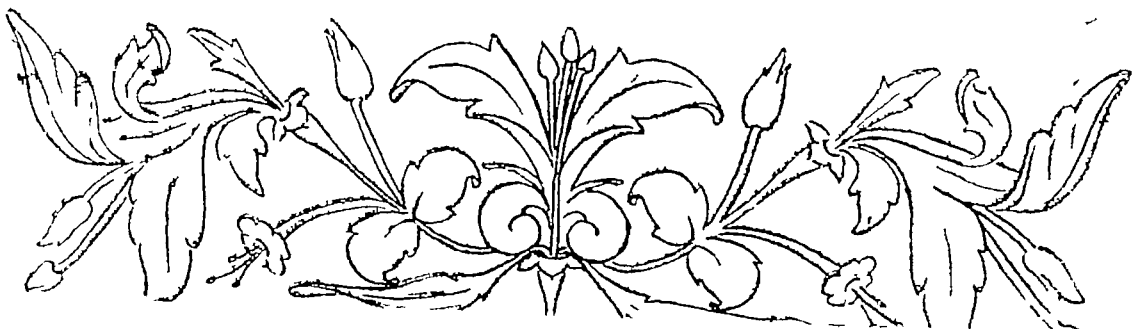
मनुष्यो ! क्यों मुझे जबरन मपम जैसा बनाते हो
नमस्ते है तुम्हें तुम तो मेरी प्रभुता घटाते हो।
पिता हूँ विश्व का फिर भी समझते बाल छोटा-सा
लिटा कर पालने में लोरियाँ दे-दे सुलाते हो।
नहीं लगती मुझे सर्दी नहीं लगती मुझे गर्मी
उढ़ाते क्यों दुशाला और पंखा क्यों डुलाते हो!
स्वयं मैं शुद्ध निर्मल हूँ तथा औरों को करता हूँ
ममता का फेर है प्रतिदिन किस मल-मल नहलाते हो!
भला मुझ निर्विकारी का विवाह क्या रंग लायेगा
बिछा कर पुष्प शैया प्रेम से किसको सुलाते हो!
नहीं हूँ मैं तुम्हारे मिष्ट मोहन भोग का भूखा
वृथा ही नाम ले मेरा स्वयं मौजें उड़ाते हो।
दया करके मुझे नीचे गिराना छोड़ दो भक्तो!
'अमर' मम तुल्य बन कर क्यों न मेरे पास आते हो!

मनुष्यो क्यों मुझे जबरन...... ।

					स्थायी (कहरवा)										पु
•				×				•				×			म
प	ध़	ग	रे	म	–	–	स	स	–	ग	ग	रग	म	–	म
मु	‿	ष्यो	ऽ	क्यों	‿	ऽ	मु	झे	ऽ	ज	ब	रन	ऽ	ऽ	भ

र	र	ग॒	र	स	–	–	स	न	स	नस	रस	ऩ	ध	–	ध
प	न	जै	ऽ	सा	ऽ	ऽ	य	ना	ऽ	तेऽ	ऽऽ	हो	ऽ	ऽ	न
ध	ऩ	ग॒	र	स	–	–	स	स	–	ग	ग	सर	गम	ग	म
म	ऽ	स्ते	ऽ	है	ऽ	ऽ	तु	म्हें	ऽ	तु	म	तोऽ	ऽऽ	ऽ	मे
र	–	ग॒	र	स	–	–	स	न	स	नस	रस	ऩ	ध	–	ऩ
री	ऽ	प्र	भु	ता	ऽ	ऽ	ध	टा	ऽ	ऽते	ऽऽ	हो	ऽ	ऽ	म
															म
							अन्तरा—								पि
ग	म	ध	–	ध	–	–	ध	ध	ऩ	प	ध	पध	नस	न	स
ता	ऽ	हूँ	ऽ	वि	ऽ	ऽ	श्व	का	ऽ	फि	र	भीऽ	ऽऽ	ऽ	स
ध	ऩ	प़	ध	म	ग	–	र	ग	र	ग	प	म	–	–	ऩ
म	झ	ते	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ल	छो	ऽ	टा	ऽ	सा	ऽ	ऽ	लि
ध	ऩ	ग॒	र	स	–	–	स	स	–	ग	–	सर	गम	ग	म
टा	ऽ	फ	र	पा	ऽ	ऽ	ल	ने	ऽ	में	ऽ	लोऽ	ऽऽ	ऽ	रि
र	–	ग॒	र	स	–	–	स	न	स	नस	रस	ऩ	ध	–	ऩ
या	ऽ	दे	ऽ	दे	ऽ	ऽ	सु	ला	ऽ	तेऽ	ऽऽ	हो	ऽ	ऽ	म

नुष्यो क्यों मुझे जबरन अपन जैसा बनाते हो।

चाह !

चाह नहीं सुख-धाम स्वर्ग में देवराज बन जाने की।
चाह नहीं नव धर्म प्रवर्तक जग में पैर पुजाने की॥
चाह नहीं दुर्जेय कोटी-भट विश्व जयी कहलाने की।
चाह नहीं धन-राशि अमित पा धन कुबेर पद पाने की॥
चाह यही अज्ञात-रूप से पड़ा रहूँ जग में भगवान्।
दुखी दीन दुर्बल की खातिर होजाऊँ हँस-हँस बलिदान॥

चाह नहीं सुखधाम..........!

राग मल्हार, त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी—

१				×				२							
रे	म	रे	स	नृ	प	म्	प	नृ	-	ध	न	-	सि	स	-
चा	ऽ	ह	न	हीं	ऽ	सु	ख	धा	ऽ	म	स्व	ऽ	र्ग	में	ऽ

र	–	म	म	प	प	प	प	म	प	नु	प	गु	म	र	स
दे	ऽ	व	रा	ऽ	ज	व	न	जा	ऽ	ने	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ

चाह नहीं ' पुजाने की (इसी प्रकार गाया जायगा)

अन्तरा—

म	म	प	प	नु	ध	न	न	स	स	स	–	न	स	स	स
चा	ऽ	ह	न	हीं	ऽ	दु	र	ज	य	को	ऽ	टी	ऽ	भ	ट
न	स	र	र	र	म	र	स	न	स	र	स	नु	ध	नु	प
वि	ऽ	श्व	ज	यी	ऽ	क	ह	ला	ऽ	ने	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ
म	प	स	स	नु	प	म	प	गु	गु	गु	म	र	र	स	–
चा	ऽ	ह	न	हीं	ऽ	ध	न	रा	ऽ	शि	अ	मि	त	या	ऽ
र	र	म	म	प	प	प	प	म	प	नु	प	गु	म	र	स
ध	न	कु	वे	ऽ	र	प	द	पा	ऽ	ने	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ

नोट.—चाह नहीं बलिदान, (यह दोनों पंक्तिया भी अन्तरे के समान गाई जावेंगी)

———

चाह !

चाह नहीं सुख-धाम स्वर्ग में देवराज बन जाने की।
चाह नहीं बन धर्म प्रवर्तक जग में पैर पुजाने की॥
चाह नहीं दुर्जेय कोटी-भट विश्व जयी कहलाने की।
चाह नहीं धन-राशि अमित पा धन कुबेर पद पाने की॥
चाह नहीं भगवान-रूप से पड़ा रहूँ जग में भगवान्।
दुखी दीन दुर्बल की खातिर होजाऊँ हँस-हँस बलिदान॥

चाह नहीं सुखधाम·· ····· ··।

राग मल्हार, त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी—

				३				×				२			
रे	म	रे	स	रे̣	प	म्	प	ध	-	प	म	-	नि	स	-
चा	ऽ	ह	न	हीं	ऽ	सु	ख	धा	ऽ	म	स्व	ऽ	र्ग	में	ऽ

र	–	र	ग	स	–	न	–	स	–	–	–	–	–	न	–
वी	ऽ	क	ह	ला	ऽ	ती	ऽ	थी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ
स	–	–	र	न	–	स	स	ध	–	–	नृ	प	–	प	र
सा	ऽ	ऽ	र	में	ऽ	स	ब	ठौ	ऽ	ऽ	र	आ	ऽ	द	र
र	–	–	ग	स	–	न	–	स	–	–	–	–	–	न	–
मा	ऽ	ऽ	न	पा	ऽ	ती	ऽ	थी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	भा	ऽ

रत की नारी एक दिन देवी कहलाती थी।

अन्तरा— स न / ब न

ध	–	–	ध	न	–	र	न	नृर	गम	–	म	म	–	म	–
वा	ऽ	ऽ	स	में	ऽ	शि	री	राऽ	ऽऽ	ऽ	म	जी	ऽ	के	ऽ
ग	–	–	स	न	र	ग	र	स	–	–	–	–	–	न	न
सा	ऽ	ऽ	थ	में	ऽ	सी	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	ह
स	–	र	–	न	–	स	स	ध	–	–	नृ	प	–	प	र
लों	ऽ	के	ऽ	वै	ऽ	भ	व	को	ऽ	ऽ	घृ	णा	ऽ	क	र
र	–	र	ग	स	–	न	–	स	–	–	–	–	–	न	–
के	ऽ	उ	क	रा	ऽ	ती	ऽ	थी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	भा	ऽ

रत की नारी एक दिन देवी कहलाती थी।

(अपने पचम को स्वर मानकर यह गीतगाना चाहिये)
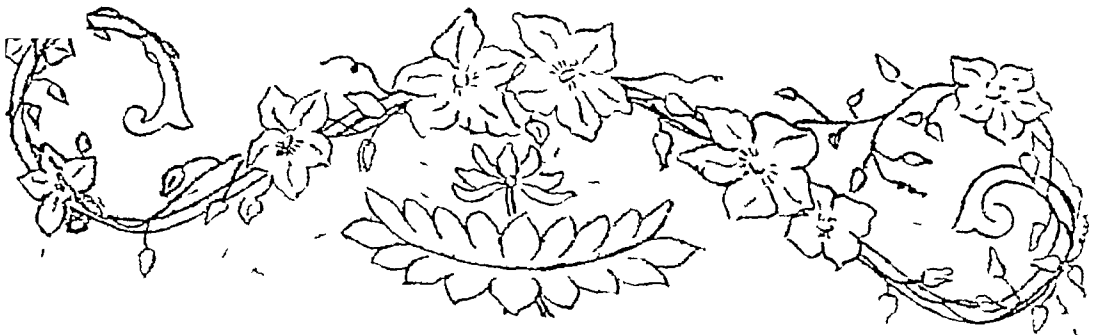
भारत की देवियां !

भारत की नारी एक दिन देवी कहलाती थी
संसार में सब ओर आदर-मान पाती थी!
वनवास में भी रामजी के साथ में सीता
महलों के वैभव को घृणा करके ठुकराती थी!
महारानी झांसी वाली अपने देश की खातिर
तलवारें दोनों हाथों से रण में चमकाती थी!
चित्तौड़ में यवनों से अपने सत की रक्षा को
हँस-हँस के अग्निज्वाला में सब ही जल जाती थी!
पत्नी भी मंडन मिश्र की शास्त्रार्थ करने में
आचार्य शंकर, जैसों के छक्के छुड़वाती थी!
मार्तण्ड सा कटु तेज था बस क्या 'अमर' पूछो
कुकर्मकारी गुण्डों की आंखें मिच जाती थी!

भारत की नारी एक दिन··· · · ··!

						स्थायी (अस्ताई)								ग	–
×				०				×				०		मा	ऽ
स	स	र	–	ग	–	स	–	ध	–	–	ध	प	प	प	र
र	त	की	ऽ	ना	ऽ	री	ऽ	ए	ऽ	ऽ	क	दि	न	दे	ऽ

आज के साधु !

पूर्वजों की ओर कुछ ना लक्ष्य लाते आजकल
साधुता के नाम पर हुल्लड़ मचाते आजकल ।
आगम तक भी नहीं प्राकृत गिरा क्या चीज है
मात्र ग्रन्थों से जिनागमतत्त्व पाते आजकल ।
पौरुषी तक भी नहीं होती है सुस्ते काल में
दो–दो माह चौमास में तप रङ्ग जमाते आजकल ।
क्या करें अध्ययन का अवकाश कुछ मिलता नहीं
वस्त्रों बैठे भक्त से पाते बनाते आजकल ।
सूत्र लेकर हाथ में गाते कवाली और गजल
चटपटे किस्से सुना श्रावक रिझाते आजकल ।
बीतती चौमास की मंजूर मन होती नहीं
अगले का चिट्ठा बना पहले दिखाते आजकल ।
जैन संस्कृति का भला उद्धार हो क्योंकर 'अमर'
जब कि मैया के खिवैया ही डुबाते आजकल ।

स्थायी (ताल पश्तो)

×		२			३		×			२		३	
प	–	धु	रे	–	सं	–	प	ग	धु	म	म	ग	–
पू	ऽ	र्व	जों	ऽ	की	ऽ	ओ	ऽ	र	कु	छ	ना	ऽ

ध	ध	म	ग	स	न	स	–	–	–
व	ल	का	ऽ	स	र	दा	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

	न	स	–	प	–	न	न	न	स	नस	र
	ल	वा	ऽ	ला	ऽ	अ	ल	थे	ऽ	लाऽ	ऽ
	न	स	स	प	–	न	–	न	स	पन	सर
ो ऽ	क	र		दे	ऽ	ता	ऽ	हे	ऽ	लाऽ	ऽऽ
र	ग	रग	म	म	ग	र	ग	स	न	स	–
सा	ऽ	रेऽ	ऽ	ज	ग	से	अ	के	ऽ	ला	ऽ
न	–	स	र	नु	ध	प	म	र	र	म	प
वा	ऽ	जी	ऽ	मा	ऽ	र	आ	त	म	व	ल

ल का सरदार।

र	र	म	प	स	स	प	ध	म	ग	स	न	स	–	–	–
त	म	व	ल	स	व	व	ल	का	ऽ	स	र	दा	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–												
ऽ	ऽ	ऽ	र												

अन्तरा—

* म	प	प	न	न	स	–	प	–	न	न	न	स	नस	र
* आ	त	म	व	ल	बा	ऽ	ला	ऽ	अ	ल	बे	ऽ	लाऽ	ऽ
– रंगं	र	स	र	न	स	स	प	–	न	–	न	स	पन	सर
ऽ निर	भ	य	हो	ऽ	क	र	दे	ऽ	ता	ऽ	हे	ऽ	लाऽ	ऽऽ
– र	र	र	र	ग	रग	म	म	ग	र	ग	स	न	स	–
ऽ लड़	क	र	सा	ऽ	रेऽ	ऽ	ज	ग	से	अ	के	ऽ	ला	ऽ
* न	–	न	न	–	स	र	नु	ध	प	म	र	र	म	प
* ले	ऽ	ता	बा	ऽ	जी	ऽ	मा	ऽ	र	आ	त	म	ब	ल
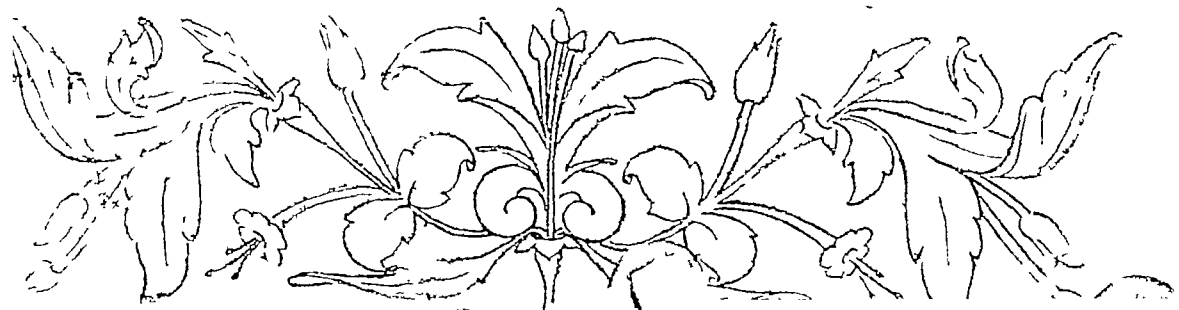
आतम बल सब बल का सरदार।

उद्बोधन !

क्या पड़ा ग़ाफ़िल सुकृत कर ज़िन्दगी ढल जायगी
क्या करेगा कूच की जब भेरी ही बज जायगी।
क्या फुला छाती अकड़ कर चलता है मद में छका
अन्त में मिट्टी की पुतली धूल में मिल जायगी॥
क्या अकलमन्दी में हँस-हँस ठग रहा है मुग्ध-जन
मौत के आगे तेरी यह सब अकल चक्र जायगी।
क्या ये लक्ष्मी के नशे मे आंख तेरी चढ़ रही
खाली हाथों जायगा दमड़ी नहीं संग जायगी॥
क्या बधावे पर बधावे देते ये संगी तुझे,
वक्त पर इनमें मगर दौड़ी कमी मच जायगी।
क्या गरीबों पर चलाता चक्र अत्याचार का
एकदम करनी तेरी तेरे ही सिर पड़ जायगी॥
क्या बुराई में भरा है ! कर भलाई तू 'अमर'
क्योंकि तेरे बाद बाकी बस यही रह जायगी।

क्या पड़ा ग़ाफ़िल सुकृत...... ......!

(राग भीमपलासी–मिश्र) स्थायी (ताल–तीव्रा)

×	२	३	×	२	३
सं - प	प म	प -	ग ग मे	र र	स स
क्या ऽ प	ड़ा ऽ	ग़ा ऽ	फि ल सु	कृ त	क र
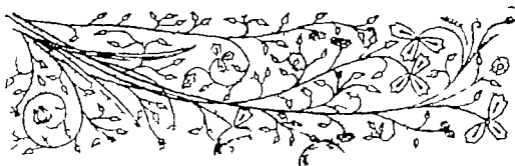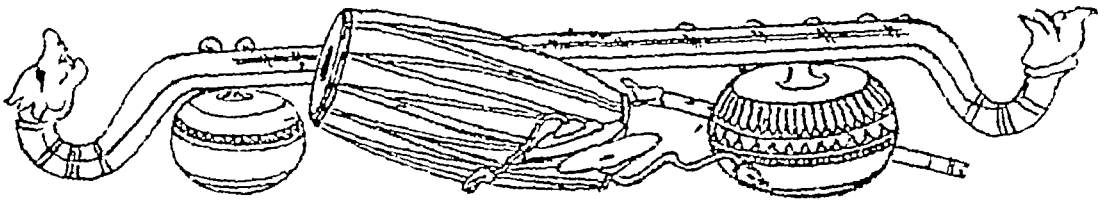
स	-	र	न॒	-	स	स	म	-	ग॒	प	-	-	-
जि	ऽ	द	गी	ऽ	व	न	जा	ऽ	य	गी	ऽ	ऽ	ऽ
स	-	प	प	म	प	-	ग॒	-	म	र	-	स	स
क्या	ऽ	क	रे	ऽ	गा	ऽ	कू	ऽ	च	की	ऽ	ज	व
स	-	र	न॒	-	स	स	म	-	ग॒	प	-	-	-
भे	ऽ	री	ही	ऽ	व	ज	जा	ऽ	य	गी	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

प	-	प	म	प	ग॒	म	प	-	न॒	स	स	स	स
क्या	ऽ	फु	ला	ऽ	छा	ऽ	ती	ऽ	अ	क	ड़	क	र
न॒	न॒	न॒	स	-	स	स	पन॒	सर	स	न॒	-	ध	प
च	ल	ता	है	ऽ	म	द	मैंऽ	ऽऽ	छ	का	ऽ	ऽ	ऽ
स	-	प	प	म	प	-	ग॒	-	म	र	र	स	-
अ	ऽ	त	में	ऽ	मि	ऽ	ट्टी	ऽ	की	पु	त	ली	ऽ
स	-	र	न॒	-	स	स	म	-	ग॒	प	-	-	-
धू	ऽ	ल	में	ऽ	मि	ल	जा	ऽ	य	गी	ऽ	ऽ	ऽ

उद्बोधन !

क्या पड़ा गाफ़िल सुकृत कर ज़िन्दगी बन जायगी
क्या करेगा कूच की जब भेरी ही बज जायगी।
क्या फुला छाती अकड़ कर चलता है मद में छका
अन्त में मिट्टी की पुतली धूल में मिल जायगी॥
क्या मगनमस्ती में हँस-हँस रम रहा है मुग्ध-मन
मौत के आगे तेरी यह सब अकड़ रह जायगी।
क्या ये लक्ष्मी के नशे से आंख तेरी चढ़ रही
खाली हाथों जायगा दमड़ी नहीं सँग जायगी॥
क्या बधावे पर बधावे गाते ये संगी तुझे,
वक्त पर इनमें सगा कौड़ी कहीं मन जायगी।
क्या गरीबों पर चलाता जब्र अत्याचार का
देखना करनी तेरी तेरे ही सिर पड़ जायगी॥
क्या बुराई में पड़ा है! कर भलाई तू 'अमर'
क्योंकि तेरे बाद बाकी बस यही रह जायगी।

क्या पड़ा ग़ाफ़िल सुकृत.... .. ...!

(राग भीमपलासी–मिश्र) स्थायी (ताल–दीपा)

×			२		३		×			२		३	
सं	-	प	प	म	प	-	ग	ग	म	र	र	स	स
क्या	ऽ	प	ड़ा	ऽ	गा	ऽ	फि	ल	सु	कृ	त	क	र

वीर प्रभू के पथ पै......!

स्थायी (कहरवा)

×				०				×				०			
* प	पि	पम		पध	ध-	पप	म	* रग	ग	स		र	ग	म	प
* वी	र	प्रऽ		भूऽ	केऽ	पथ	पै	* कद	म	ब		ढ़ा	ते	जा	ना
* प	प	पम		पध	धध	प	मम	* रग	ग	स		र	ग	म	प
* मा	न	वऽ		जन्	मअ	मो	लक	* सफ	ल	ब		ना	ते	जा	ना

अन्तरा—

* ग	प	प		धन	नध	नर	स	* न	न	धप		पध	धन	ध-	प
* प्रे	म	के		साऽ	ऽथ	रह	ना	* सब	मी	ठीऽ		कड़	वीऽ	सह	ना
* प	प	पम		पध	ध-	प-	म	* रग	ग	स		र	ग	म	प
* उत्	तर	मेंऽ		कुछ	नाऽ	कह	ना	* दिल	से	भु		ला	ते	जा	ना

महावीर के पथ पर !

वीर प्रभू के पथ पै कदम बढ़ाते जाना।
मानव जन्म अमोलक सफल बनाते जाना॥
प्रेम के साथ रहना सब मीठी कड़वी सुनना।
उत्तर में कुछ ना कहना दिल से भुलाते जाना॥
गर्व न कुछ भी करना जग है बस जीना मरना।
ठोकर के भय बिसरना शीश झुकाते जाना॥
आवे जो दर पै दुखिया, शीघ्र बनाना सुखिया।
सेवा में बन कर मुखिया कीर्ति कमाते जाना॥
पंथों का जाल हटाके मैं तू का भेद मिटाके।
सबको इक साथ जुटाके सत्य सुनाते जाना॥
मन्दिर है प्रभु का जनतन करले यदि तनमन पावन।
बनकर तू 'अमर' सुभगवन दर्श दिखाते जाना॥

—•—

वीर प्रभू के पथ पै.....!

स्थायी (कहरवा)

×	०	×	०
* प नि पम	पध ध- पप म	* रग ग स	र ग म प
* वी र प्रऽ	भूऽ केऽ पथ पै	* कद म व	ढ़ा ते जा ना
* प प पम	पध धध प मम	* रग ग स	र ग म प
* मा न वऽ	जन् मअ मो लक	* सफ ल व	ना ते जा ना

अन्तरा—

* ग प प	धन नध नर स	* न न धप	पध धन ध- प
* प्रे म के	साऽ ऽथ रह ना	* सब मी ठीऽ	कड़ वीऽ सह ना
* प प पम	पध ध- प- म	* रग ग स	र ग म प
* उत् तर मेंऽ	कुछ नाऽ कह ना	* दिल से भु	ला ते जा ना

महावीर के पथ पर !

वीर प्रभु के पथ पै कदम बढ़ाते जाना।
मानव जन्म अमोलक सफल बनाते जाना॥
प्रेम के साथ रहना सब मीठी कड़वी सुनना।
उत्तर में कुछ ना कहना दिल से भुलाते जाना॥
गर्व न कुछ भी करना जग है बस जीना मरना।
होकर के नम्र विचरना शीश झुकाते जाना॥
आवे जो दर पै दुखिया शीघ्र बनाना सुखिया।
सेवा में बन कर मुखिया कीर्ति कमाते जाना॥
पंथों का जाल हटाके मैं तू का भेद मिटाके।
सबको इक साथ जुटाके सत्य सुनाते जाना॥
मन्दिर है प्रभु का बरतन; करले यदि तनमन पावन।
बनकर तू 'अमर' सुमनगण फूले खिलाते जाना॥

प न न	स –	रग मप	मग रग सन	स –	– –
धू ऽ हु	आ ऽ	तोऽ ऽऽ	क्याऽ ऽऽ हुऽ	आ ऽ	ऽ ऽ
स – प	धप धप	म म	गर ग र	नस रस	न –
भे ऽ प	कीऽ ऽऽ	ल ऽ	ज्ञाऽ ऽ न	हींऽ ऽऽ	ऽ ऽ
प न न	स –	रग मप	मग रग सन	स –	– –
धू ऽ हु	आ ऽ	तोऽ ऽऽ	क्याऽ ऽऽ हुऽ	आ ऽ	ऽ ऽ

अन्तरा—

म – प	न –	न –	म – न	स –	स –
खु ऽ द	री ऽ	की ऽ	दे ऽ ख	ते ऽ	ही ऽ
प न स	र ग	र ग	सर ग सन	स –	– –
चि ऽ त्त	अ ति	च ऽ	चऽ ल थऽ	ने ऽ	ऽ ऽ
स – प	धप धप	म –	गर ग र	नस रस	न प
का ऽ म	कोऽ ऽऽ	मा ऽ	गाऽ ऽ न	हींऽ ऽऽ	सा ऽ
प न न	स –	रग मप	मग रग सन्	स –	– –
भू ऽ हु	आ ऽ	तोऽ ऽऽ	क्याऽ ऽऽ हुऽ	आ ऽ	ऽ ऽ

साधुता रखता नहीं, साधू हुआ तो क्या हुआ ।
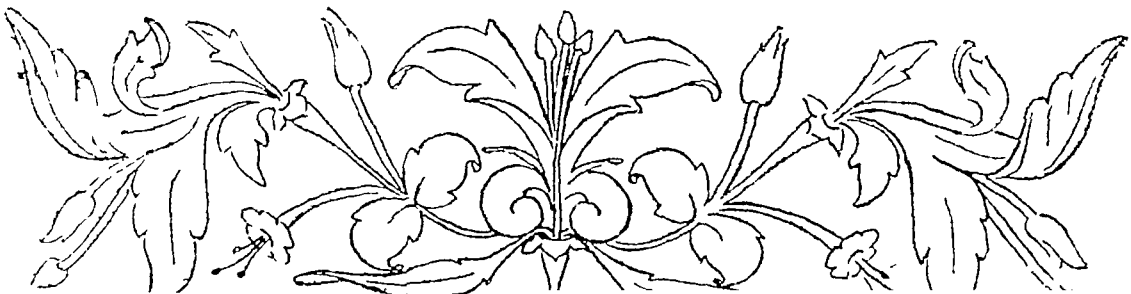
साधू कैसा हो ?

साधुता रखता नहीं साधू हुआ तो क्या हुआ
भेष की लज्जा नहीं साधू हुआ तो क्या हुआ !
सुन्दरी को देखते ही चित्त प्रति चञ्चल बने
काम को मारा नहीं साधू हुआ तो क्या हुआ !
स्वाद-भोजन चाहे नित दुग्धादि पा जी-जी करे
जीभ पर अंकुश नहीं साधू हुआ तो क्या हुआ !
दुर्वचन सुनते ही मारे क्रोध के भन्ना उठे
शत्रु पर समता नहीं साधू हुआ तो क्या हुआ !
सिर्फ जीना आता है मरना कभी आता नहीं
मौत से हँसता नहीं साधू हुआ तो क्या हुआ ?
दूसरों के साध्य साधे, व्यर्थ मस्तक कर अमर
साध्य निज साधा नहीं साधू हुआ तो क्या हुआ !

साधुता रखता नहीं······!

(राग तिलककामोद मिश्र) ताल पश्तो

स्थाई—

×	१	३	×	२	३
सं – प	पप पप	म म	मर ग र	गुस रस	ग पु
सा ऽ धु	ताऽ ऽऽ	र ख	ताऽ ऽ न	हींऽ ऽऽ	सा ऽ

ध	स	सस	र	ग	र	ग	–	–	–	–	–
सा	ऽ	लह	रा	ऽ	य	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	प	म	र	–	स	न॒	–	ध	–	प	–
जैं	सा	क	रो	ऽ	गे	वै	ऽ	सा	ऽ	ही	ऽ
ध	स	–	र	ग	र	ग	–	–	–	–	–
फ	ल	ऽ	आ	ऽ	ये	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

ग	ग॒	ग	प	ग	प	ध	न	ध	प	ध	प
कुँ	ए	में	प	ऽ	क	वा	ऽ	र	कु	छ	ऽ
न	–	प	ग	–	ग॒	ग	–	–	–	–	–
वो	ऽ	ल	दे	ऽ	खि	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	ग	(स)	–	र	न॒	–	ध	–	प	–
जै	सा	क	हो	ऽ	गे	वै	ऽ	सा	ऽ	ही	ऽ
ध	स	स	र	ग	र	ग	–	–	–	–	–
व	ह	सु	ना	ऽ	ये	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

जैसी करनी वैसी भरनी

बोवोगे जैसा बीज तरु वैसा लहरायेगा
जैसा करोगे वैसा ही फल आयेगा।
कूप में एक बार कुछ भी बोल देखिये
जैसा कहोगे वैसा ही वह भी सुनायेगा।
जोड़ोगे हाथ खुद तो दर्पण बिम्ब जोड़ेगा
चांटा दिखाओगे तो वह चांटा दिखायेगा।
कांटा बनोगे तुम किसी की राह में अड़कर
कांटा बनेगा एक दिन वह भी सतायेगा।
थूकोगे अगर नादान होकर आफ़ताब पर
वापिस गिरेगा मुँह पर आ दुनियाँ हँसायेगा।
चाहते हैं लोग तुमको कैसा जानना है क्या?
अपने हृदय से पूछिये वह खुद बतायेगा।
संसार में मीठे 'भ्रमर' बन कर सदा रहना
आदर्श नर जीवन तुम्हें ऊँचा उठायेगा।

—•—

बोवोगे जैसा बीज… ……!

ताल—दादरा

स्थायी—

×						×					
ग	म	ग	(म)	-	र	रे	-	ध	प	प	प
बो	वो	गे	जै		सा	बी	ऽ	ज	त	रु	वै

ध	स	सस	र	ग	र	ग	–	–	–	–	–
सा	ऽ	लह	रा	ऽ	य	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	प	म	र	–	स	ऩ	–	ध	–	प	–
जैं	सा	क	रो	ऽ	गे	वै	ऽ	सा	ऽ	ही	ऽ
ध	स	–	र	ग	र	ग	–	–	–	–	–
फ	ल	ऽ	आ	ऽ	ये	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

ग	ग॒	ग	प	ग	प	ध	न	ध	प	ध	प
फुॅ	प	में	ण	ऽ	क	वा	ऽ	र	कु	छ	ऽ
न	–	प	ग	–	ग॒	ग	–	–	–	–	–
यो	ऽ	ल	दे	ऽ	खि	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	ग	(स)	–	र	ऩ	–	ध	–	प	–
जै	सा	क	हो	ऽ	गे	वै	ऽ	सा	ऽ	ही	ऽ
ध	स	स	र	ग	र	ग	–	–	–	–	–
च	ह	सु	ना	ऽ	ये	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

कुछ होश की दवा लो !

पा के नर जन्म भला व्यर्थ गँवाते क्या हो ?
चार दिन की है हवा होश भुलाते क्या हो ?
देख रावण की कहाँ स्वर्ण की लङ्का अब है
मर्द से घर में घुसे ऐंठ दिखाते क्या हो ?
यादवों का भी निशाँ मिट गया जो थे लाखों
पाँच दश पा के स्वजन बगलें बजाते क्या हो ?
भीम अर्जुन से गए जो हाथी उठाके चलते
डेढ़ पसली के सड़े तन पै घुमाते क्या हो ?
है कहाँ आज वह कारूँ का खजाना अनुपम
चन्द चाँदी के बने टुकड़े छिपाते क्या हो ?
काल-आँधी के 'अमर' झोंके से उड़ोगे पल में
'मैं हूँ मैं हूँ' का वृथा शोर मचाते क्या हो ?

पा के नर जन्म भला ········ ?

रागनी—दादरा (मध्यलय)											प
×						×					पा
स	ग	म	प	–	प	प	प	म	प	सं	ध
क	न	र	ज	ऽ	न्म	भ	ला	ऽ	व्य	ऽ	र्थ

प	म	म	ग	–	ग	स	र	ग॒	र	स	ऩ
गॅ	वा	ऽ	ते	ऽ	क्या	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	चा
स	ग॒	म	प	–	प	प	ध	म	प	स	ऩ
र	टि	न	की	ऽ	है	ह	वा	ऽ	हो	ऽ	श
प	म	म	ग	–	ग	स	र	ग॒	र	स,	ऩ
भु	ला	ऽ	ते	ऽ	क्या	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	पा

अन्तरा —

											प
											दे
ग॒	ग॒	म	प	न	न	म	स	–	न	–	स
त्य	रा	ऽ	व	ण	की	क	हा	ऽ	स्व	ऽ	र्ग
ध	प	म	प	न	ध	ध	प	–	–	–	ऩ
की	ल	ऽ	का	ऽ	श्र	य	है	ऽ	ऽ	ऽ	न
स	ग॒	म	प	प	प	प	ध	म	प	स	ऩ
कं	से	ऽ	घ	र	में	घु	से	ऽ	पं	ऽ	ठ
प	म	म	ग	–	ग	स	र	ग॒	रग॒	रस,	ऩ
दि	खा	ऽ	ते	ऽ	क्या	ऽ	हो	ऽ	ऽऽ	ऽऽ,	पा

के नर जन्म भला व्यर्थ गॅवाते क्या हो ?

अछूत !

दलितों को तंग करके क्या फ़ायदा उठाया
अफ़सोस ही उठाया नुक़सान ही उठाया !
अन्त्यज अछूत पामर महानीच म्लेच्छ पापी
अप शब्द बोल क्या-क्या गौरव सभी गँवाया !
सम्बन्ध तोड़ सारे हा बैठे होके पगले
हा हिन्द को तुम्हीं ने मुरदार यों बनाया !
दुर-दुर से तंग आ आ कितने हुए विधर्मी
अब भी तो हो रहे हैं फिर भी न होश आया !
जो मनुज की दशा में नफ़रत थी छाया तक से
वो मज़हबी हो सिरहाने सादर खुशी बिठाया !
मिट के रहेगी हस्ती बस यह रही सही भी
दलितों को गर 'अमर' अब सीने से ना लगाया !

स्थायी—कहरवा (मध्यलय)

×				•				×				•		—	—
ग	म	र	-	स	र	-	स	ग	ग	म	-	र	प	म	-
द	लि	तों	ऽ	को	तं	ऽ	ग	क	र	के	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	-	म	-	म	म	-	ग	र	प	ग	-	र	-	स	-
क्या	ऽ	फा	ऽ	य	दा	ऽ	उ	ठा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ—	—ऽ	ऽ
र	म	ग	-	र	स	-	र	ग	-	स	-	-	-	-	-
क्या	ऽ	फा	ऽ	य	दा	ऽ	उ	ठा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

न	स	र	-	स	र	-	स	न	-	स	-	र	ग	म	-
अ	फ	सो	ऽ	स	जो	ऽ	उ	ठा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	म	-	म	म	-	ग	र	ग	ग	-	र	-	स	-
नु	क	सा	ऽ	न	ही	ऽ	उ	ठा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
र	म	ग॒	-	र	स	-	र	न	-	स	-	-	-	-	-
नु	क	सा	ऽ	न	ही	ऽ	उ	ठा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

ग	प	म	ग	ग	र	-	ग	म	प	प-	-	-	-	-	-
अ	ऽ	त्य	ज	अ	छू	ऽ	त	पा	ऽ	मर	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ध	न॒	न॒	-	प	ध	-	म	ग	प	म	-	-	-	-	-
म	हा	नी	ऽ	च	म्ले	ऽ	च्छ	पा	ऽ	पी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ध	न॒	न॒	-	प	ध	-	म	ग	र	र	ग	-	-	-	-
अ	प	श	ऽ	व्द	वो	ऽ	ल	क्या	ऽ	क्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
र	म	ग॒-	-	र	स	-	न	स	र	र	-	स	-	न	-
गौ	ऽ	रव	ऽ	स	भी	ऽ	न	शा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
र	म	ग॒	-	र	स	-	र	न	-	स	-	-	-	-	-
गौ	ऽ	र	व	स	भी	ऽ	न	शा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

जीवन के अन्तिम क्षण में !

भगवन् ! प्रसन्न हम हों जब प्राण तन से निकलें
आदर्श विश्व के हों जब प्राण तन से निकलें।
उदयास्त राज्य ठुकरा सानन्द सत्य कारण
फांसी पै झूलते हों जब प्राण तन से निकलें ॥
जन-न्याय-पक्षी हस्ती अन्याय को मिटाने
सिर हाथ ले खड़े हों, जब प्राण तन से निकलें।
रक्षार्थ आश्रित की भी शरण में आये
जी-जान होमते हों जब प्राण तन से निकलें ॥
भूखों अपाहिजों को सर्वस्व दे खिलाकर,
उपवास हो रहे हों जब प्राण तन से निकलें।
जब मातृ-भूमि का सब डंके की चोट देकर
जय-घोष गूंजते हों जब प्राण तन से निकलें ॥
हँसते ही हों 'अमर' हम रोता हो देश सारा
मर कर भी जी रहे हों, जब प्राण तन से निकलें।

भगवन् ! प्रसन्न हम ...... !

(राग तिलंग) ताल दादरा

				स्थायी —						प	म
×						×			•	म	ग
प	सं	नि	प	नि	प	प	म	ग	-	म	स
भ	ग	वन्	प्र	ऽ	सन्न	ह	म	हों	ऽ	ज	ब

नु	नु	स	ग	ग	म	प	नु	प	म	ग	म
प्रा	ऽ	ण	त	न	से	नि	क	लें	ऽ	आ	ऽ
प	स	स	नु	नु	प	ग	म	ग	–	स	स
द	ऽ	र्श	वि	ऽ	श्व	के	ऽ	हों	ऽ	ज	ब
नु	नु	स	ग	ग	म	प	नु	प	म	ग	म
प्रा	ऽ	ण	त	न	से	नि	क	लें	ऽ	भ	ग

वन प्रसन्न ।

अन्तरा--										ग	म
										उ	ठ्
प	नु	प	न	–	न	स	स	स	–	न	स
या	ऽ	स्त	रा	ऽ	ज्य	ठु	क	रा	ऽ	सा	ऽ
ग	–	स	नु	–	प	ग	म	ग	ग,	ग	–
न	ऽ	द	स	ऽ	त्य	का	ऽ	र	ण,	फा	ऽ
ग	स	स	नु	नु	प	ग	म	ग	–	स	स
सी	ऽ	पे	भू	ऽ	ल	ते	ऽ	हों	ऽ	ज	ब
नु	नु	स	ग	ग	म	प	नु	प	म	ग	म
प्रा	ऽ	ण	त	न	से	नि	क	लें	ऽ	भ	ग

वन् प्रसन्न हम हों.... ।
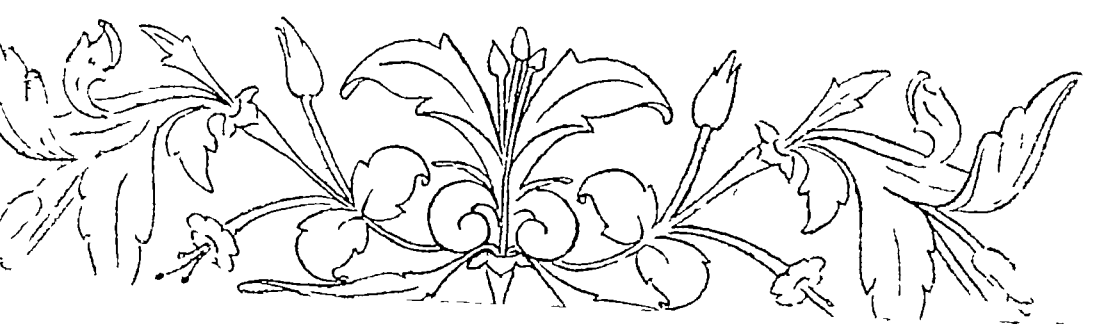
भगवान् कहाँ !

अफ़सोस है मुझे तुम यहाँ–वहाँ तो ढूँढ़ते हो
मौजूद हूँ जहाँ मैं वहाँ पर न ढूँढ़ते हो।
मंदिर व मस्जिदों म गिरजा घरों के भीतर
सोता हूँ आलसी क्या वहाँ जा पुकारते हो।
काशी जेरुसेलम में मक्का में कैद हूँ क्या ?
मिलने मुझे जो वहाँ तुम बेसाँस दौड़ते हो।
लज्जा से डूबा हूँ क्या गंगा गोदावरी में
बाहर निकालने को जो उसमें कूदते हो॥
दीनों व दुखितों की सेवा में रहता हूँ मैं
हिम्मत हो जिसकी देखो क्यों दूर भागते हो।
मिलना अगर मिलो यहाँ सेवाव्रती 'अमर' हो
नहिं तो ये मक्खन का क्यों ढोंग बाँधते हो ?

—o—

अफ़सोस है मुझे तुम.........!

स्थायी (दादरा)										न	स
×						×			•	ध	प
न	–	र	रग	म	म	र	ग	र्स	स	न	स
सो	ऽ	स	है		मु	झे	ऽ	तु	म	य	हाँ
र	म	म	रम	पध	प	ग	–	ग	म	न	स
व	हाँ	तो	ढूँऽ	ऽऽ	ढ़	ते	ऽ	हो	ऽ	मौ	ऽ
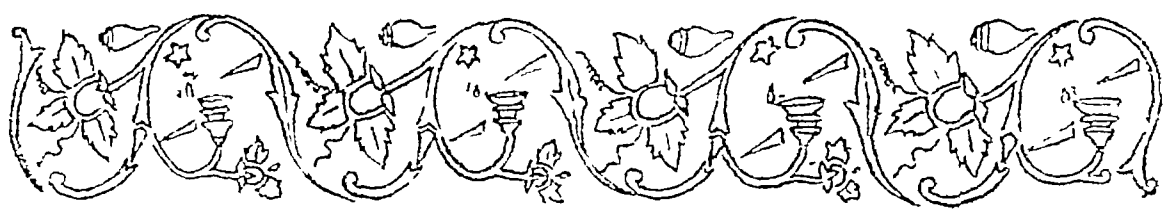
								र			
र	–	र	रग	म	म	र	ग़	स	–	न	स
जू	ऽ	द	हूँऽ	ऽ	ज	हा	ऽ	में	ऽ	व	हा
र	म	म	रम	पध	प	ग़	–	ग़	म	र	नस
प	र	न	ढूँऽ	ऽऽ	ढ़	ते	ऽ	हो	ऽ	अ	फऽ

सोस है मुझे तुम यहा–वहा तो ढूँढ़ते हो ।

अन्तरा (ठेका वन्द)

										ध						
ध	–	ध–	ध	व	–	ध	पध	ऩ	–	प	–	म	म	म	–	प
म	ऽ	दिर	व	मस	ऽ	जि	दोंऽ	ऽ	ऽ	में	ऽ	गि	र	जा	ऽ	घ
प	–	प	रम	पध	मप	ग़	र									
रों	ऽ	के	भीऽ	ऽऽ	ऽऽ	त	र									

ठेका वन्द––	न	स
	सो	ऽ

र	–	र	रग	म	म	र	ग़	स	–	न	स
ता	ऽ	हूँ	आऽ	ऽ	ल	सी	ऽ	क्या	ऽ	व	हा
र	म	म	रम	पध	प	ग़	–	ग़	म	र	नस
जा	ऽ	पु	काऽ	ऽऽ	र	ते	ऽ	हो	ऽ	अ	फ

सोस है मुझे तुम यहा–वहा तो ढूँढते हो, मौजूद हूँ जहा पर वहा पर न ढूँढ़ते हो।

———

ध़	ध़	ध़	ध़	प	–	प,	त़	त़	ध़	प	प
क्या	खु	श	हो	ता	ऽ	दी,	न	स	ता	क	र
पध़	ध़	–	नन	स	स	रे़	–	रे़	रे़	स	स
अप	ने	ऽ	बल	का	ऽ	जो	ऽर	ज	ता	क	र
न	न	स	ध़	ध़	प	म	म	म	रे़	–	स
आ	गे	कु	टे	ऽ	गी	खा	ल	अ	ना	ऽ	री
रे़	म	म	म	रे़	रे़	स	–	–	–	स	–
का	हे	बि	छा	ऽ	बे	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ

अन्तरा--

स	रे़	स	म	म	म	प-	ध़	प	न	स	सं
स	दा	य	हां	प	र	रह	ना	न	हीं	है	ऽ
रे़	रे़	रे़	रे़	रे़	–	म	म	म	रे़	स	–
आ	खि	र	आ	गे	ऽ	जा	ना	स	ही	है	ऽ
न	न	स	ध़	ध़	प	म	–	म	रे़	स	–
चा	हे	च	ला	ल	ख	चा	ऽल	अ	ना	ऽ	री
रे़	म	म	म	रे़	रे़	स	–	–	–	स	–
का	हे	बि	छा	ऽ	बे	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ

दया बिन बावरिया·· ········!

दया बिन बावरिया हीरा जन्म गँवाये।
कि पत्थर से दिल को क्यों ना फूल बनाये॥
कोमलता का भाव न मन में
फिर क्या सुन्दरता हो तन में।
जीवन विष बरसाये॥
दीन दुखी की सेवा कर ले
पाप–कालिमा अपनी हर ले।
तिहुँ–जग मङ्गल गाये॥
धन लक्ष्मी का गर्व न करना
आखिर को सब तज कर मरना।
पर–हित क्यों न सुहाये॥
यह जीवन है एक कहानी
पाप पुण्य है शेष निशानी।
'अमर' सत्य समझाये॥

—•—

(कहरवा)

						स्थायी—									म
				×				•				×			ध
ग़	र	स	ध़	म	-	प	प	ग	-	-	-	स	र	र	-
बा	ऽ	बि	न	बा	ऽ	व	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ	ही	ऽ	रा	ऽ

र	म	ग़	र	स	स	–	म	ग़	र	स	न	स	–	र	र
ज	न	म	गॅ	वा	ये	ऽ	कि	प	ऽ	त्थ	र	से	ऽ	दि	ल
ग़	–	–	–	स	र	र	–	र	म	ग़	र	स	स	–	म
को	ऽ	ऽ	ऽ	क्यों	ऽ	ना	ऽ	फू	ऽ	ल	व	ना	ये	ऽ	द

या विन वावरिया हीरा जन्म गॅवाये।

अन्तरा—

*	न	न	न	न	स	न	स	*	ऩ	ध	ऩ	प	ऩ	ध	प
*	को	म	ल	ता	ऽ	का	ऽ	*	भा	व	न	म	न	में	ऽ
*	ऩ	ऩ	ऩ	ध	–	प	प	*	ग़	र	स	सर	ग़	र	–
*	फि	र	क्या	सु	ऽ	द	र	*	ता	ऽ	है	तऽ	न	में	ऽ
*	प	प	म	प	ऩ	ध	प	म	–	म	ग़	र	ग़	स	ऩ
*	जी	व	न	वि	प	व	र	सा	ऽ	य	द	या	ऽ	वि	न

वावरिया हीरा जन्म गॅवाये।

दया बिन बावरिया .... !

दया बिन बावरिया हीरा जन्म गँवाये।
कि पत्थर से दिल को क्यों ना फूल बनाये॥

कोमलता का भाव न मन में
फिर क्या सुन्दरता से तन में।
जीवन विष बरसाये॥

दीन दुखी की सेवा कर ले
पाप-कालिमा अपनी हर ले।
तिहुँ-जग मङ्गल गाये॥

धन लक्ष्मी का गर्व न करना
आखिर को सब तज कर मरना।
पर-हित क्यों न सुहाये॥

यह जीवन है एक कहानी
पाप पुण्य है शेष निशानी।
अमर सत्य समझाये॥

(खमाज)

							स्थायी—								म
				×				०				×			ग्
ग	रे	स	नि	स	-	रे	रे	ग	-	-	-	स	रे	रे	-
या	ऽ	बि	न	बा	ऽ	व	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ	ही	ऽ	रा	ऽ

र	म	ग	र	स	स	–	म	ग	र	स	न	स	–	र	र
ज	न	म	गॅ	वा	ये	ऽ	कि	प	ऽ	त्थ	र	से	ऽ	दि	ल
ग	–	–	–	स	र	र	–	र	म	ग	र	स	स	–	म
को	ऽ	ऽ	ऽ	क्यों	ऽ	ना	ऽ	फू	ऽ	ल	व	ना	ये	ऽ	द

या विन वावरिया हीरा जन्म गॅवाये।

अन्तरा—

*	न	न	न	न	स	न	स	*	न	ध	न	प	न	ध	प
*	को	म	ल	ता	ऽ	का	ऽ	*	भा	व	न	म	न	में	ऽ
*	न	न	न	ध	–	प	प	*	ग	र	स	सर	ग	र	–
*	फि	र	क्या	सु	ऽ	द	र	*	ता	ऽ	है	तऽ	न	में	ऽ
*	प	प	म	प	न	ध	प	म	–	म	ग	र	ग	स	न
*	जी	व	न	वि	ष	व	र	सा	ऽ	य	द	या	ऽ	वि	न

वावरिया हीरा जन्म गॅवाये।

———

कर्तव्य का भान !

ओ मनुज ! कर्तव्य का कुछ भान होना चाहिये
सच्चे अर्थों में तुझे इन्सान होना चाहिये !
ज़िन्दगी और मौत दोनों आनी-जानी चीज़ हैं
पूर्वजों की आन पर बलिदान होना चाहिये !
क्यों बनाया दिल को मुर्दा इसमें देशप्यार का
शान्त हो न कदापि वह तूफ़ान होना चाहिये !
दीन दुखिया जब कभी कोई भी आये गांव में
प्रेम से सब पर सभी का ध्यान होना चाहिये !
श्रेय-प्रेय जिसे दूर हैं जिस्म के हर काम में
प्रेम की ही ओर हरदम ध्यान होना चाहिये !
हर किसी भी देश का या धर्म का महापुरुष हो
ए 'अमर' दिल में तेरे सम्मान होना चाहिये !

—•—

ओ मनुज कर्तव्य का कुछ........!

स्थायी (ठेका कव्वाली)

×				•				×							
•	नि	-	रे	म	रे	ग	रे	•	म	-	म	म	प	ग	ग
•	ओ	ऽ	म	नु	ज	क	र	•	त	ऽ	व्य	का	ऽ	कु	छ

*	र	-	(स) ऩ	स	-	र	ग॒	स	-	-	न	स	-	-	-
*	ध्या	ऽ	न	हो	ऽ	ना	ऽ	चा	ऽ	ऽ	हि	ये	ऽ	ऽ	ऽ
*	ऩ	-	ऩ	स	ग	र	-	*	म	-	म	म	प	ग॒	-
*	स	ऽ	च्चे	अ	र	यों	ऽ	*	मैं	ऽ	तु	झे	ऽ	ऽ	ऽ
र	र	-	ऩ	स	-	र	ग॒	स	-	-	न	स	-	-	-
इ	सा	ऽ	न	हो	ऽ	ना	ऽ	चा	ऽ	ऽ	हि	ये	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

*	प	-	प	प	-	ग	म	*	प	-	प	प	-	प	-
*	जिं	ऽ	द	गी	ऽ	अ	रु	*	मौ	ऽ	त	दो	ऽ	नों	ऽ
*	प	-	ध	प	-	म	-	ग	-	-	र	र	ग	म	-
*	आ	ऽ	नी	जा	ऽ	नी	ऽ	ची	ऽ	ऽ	ज	है	ऽ	ऽ	ऽ
*	ऩ	-	ऩ	स	र	र	-	*	म	-	म	म	प	ग॒	ग॒
*	पू	ऽ	र्व	जों	ऽ	की	ऽ	*	की	ऽ	र्तिं	प	र	ब	लि
*	र	-	ऩ	स	-	र	ग॒	स	-	-	न	स	-	-	-
*	दा	ऽ	न	हो	ऽ	ना	ऽ	चा	ऽ	ऽ	हि	ये	ऽ	ऽ	ऽ

ग॒	स	ग॒	म	प	ग॒	र	स	–	स
दि	ल	का	ऽ	भ	ला	ऽ	है	ऽ	उ
ऩ॒	स	ग॒	म	प	प	न॒	स	–	स
प	र	भे	ऽ	प	खा	ऽ	ली	ऽ	तो
न॒	ध	प	ग॒	म	प	ग॒	र	स	स
खा	ऽ	ली	ऽ	व	ला	ऽ	है	ऽ	भ

अन्तरा—

									प
									वि
प	प	ग॒	–	म	प	न॒	स	–	स
प	य	भो	ऽ	ग	ज	ग	के	ऽ	उ
न॒	स	गं॒	–	र	स	–	न॒	ध	प
से	ऽ	क्या	ऽ	डि	गा	ऽ	एँ	ऽ	अ
गं॒	र	स	–	न॒	ध	प	ग॒	–	म
ट	ल	मे	ऽ	रू	सा	ऽ	चे	ऽ	में
प	–	ग॒	–	म	ग॒	र	स	–	स
धू	ऽ	रा	ऽ	ढ	ला	ऽ	है	ऽ	भ
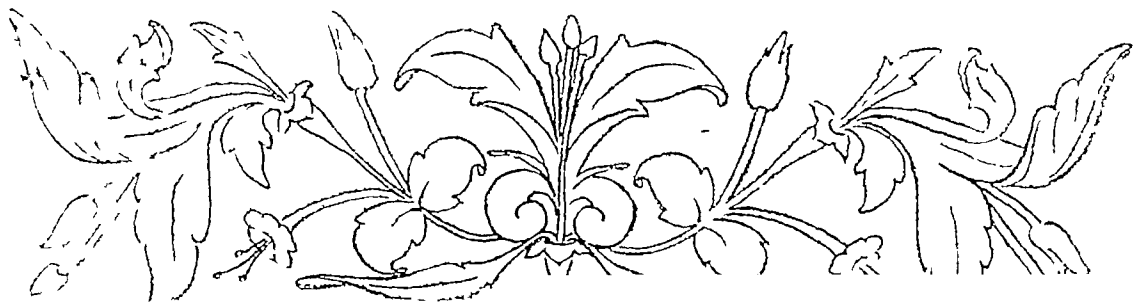
विद्या की आवश्यकता !

कौन कहता है कि विद्या काम पड़ आती नहीं
पढ़ जाने पर कभी क्या काम यह आती नहीं ?
ज्ञान ही का फ़र्क है इन्सान या हैवान में
हैं पशु वे भी बशर विद्या जिन्हें आती नहीं ।
दूर देशों में जहाँ कोई न अपनी जान का
क्या सुविद्या उस जगह सत्कार करवाती नहीं ।
मूर्ख की मैंने कहीं पर भी कदर देखी नहीं
जगमगाती रत्नजोती काँच में पाती नहीं ॥
प्रेम भाव प्रसारिणी वर वस्तु इस संसार में
कोई विद्या के सिवा मुझको नज़र आती नहीं ।
यूँ पसीना एक कर चाहे 'अमर' जाकर कहीं
किन्तु विद्या बिन कभी यह दीनता जाती नहीं ॥

कौन कहता है कि विद्या…… ……!

राग वृन्दावनी सारंग, स्थायी (ताल रूपक)

	२		३		×			२		३	
पम रेरे रे	म	प	म	प	रे	म	रे	नु	–	स	–
कौऽ ऽऽ न	क	ह	ता	ऽ	है	ऽ	कि	वि	ऽ	द्या	ऽ
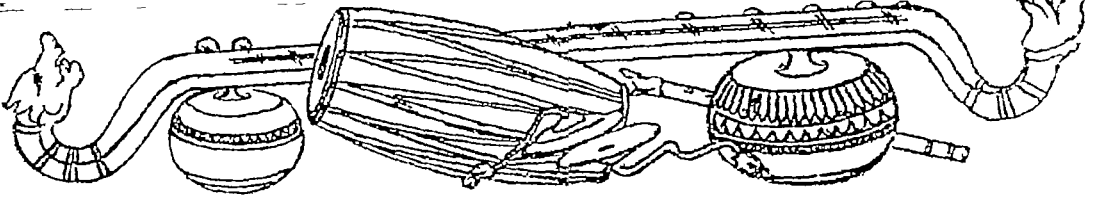
र	म	र	म	प	नु	प	मप	नस	रम	रस	नुप	मप	नस
ला	ऽ	भ	प	हु	चा	ऽ	तीऽ	ऽऽ	नऽ	हींऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
पन	सर	स	नु	प	म	प	र	म	र	न	–	स	–
वऽ	ऽऽ	क्त	आ	ऽ	ने	ऽ	प	र	क	भी	ऽ	क्या	ऽ
र	म	र	म	प	नु	प	मप	नस	रम	रस	नुप	मप	नस
का	ऽ	म	य	ह	आ	ऽ	तीऽ	ऽऽ	नऽ	हींऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ

अन्तरा—

म	–	प	नु	प	न	–	स	–	स	स	–	स	स
ज्ञा	ऽ	न	ही	ऽ	का	ऽ	फ	ऽ	कं	है	ऽ	इ	न
न	–	स	र	म	र	स	न	–	स	नु	–	प	–
सा	ऽ	न	वा	ऽ	है	ऽ	वा	ऽ	न	में	ऽ	ऽ	ऽ
पन	सर	स	नु	प	म	प	र	म	र	न	न	स	–
हैंऽ	ऽऽ	प	शू	ऽ	वे	ऽ	भी	ऽ	व	श	र	वि	ऽ
र	म	र	म	प	नु	प	मप	नस	रम	रस	नुप	मप	नस
द्या	ऽ	जि	न्हें	ऽ	भा	ऽ	तीऽ	ऽऽ	नऽ	हींऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ

कौन कहता है कि विद्या लाभ पहुंचाती नहीं।
वक्त आने पर कभी क्या काम यह आती नहीं॥

र	म	प	ध	ध	पध	ऩ	ध	-	म
व	र	दा	ऽ	र	खाऽ	ऽ	का	ऽ	न
प	प	ग	-	म	ग	-	स	-	स
अ	प	ना	ऽ	उ	ड़ा	ऽ	ना	ऽ	ज

गत रङ्ग में अपने को ·· ।

अन्तरा—									म
									वु
म	प	न	-	न	न	स	स	-	सं
रा	ऽ	ई	ऽ	से	को	ऽ	सों	ऽ	अ
र	ग	ग	-	स	रं	र	स	-	स
ल	ग	दू	ऽ	र	र	ह	ना	ऽ	भ
र	म	ग	-	स	स	स	प	प	प
ला	ऽ	ई	ऽ	में	ह	र	द	म	दि
पध	र	स	-	प	मप	ध	म	ग	स
लोऽ	ऽ	जा	ऽ	जु	टाऽ	ऽ	ना	ऽ	ज

गत रङ्ग में अपने को · ·· ··· · ।

शेष अन्तरे भी इसी प्रकार कहिये ।
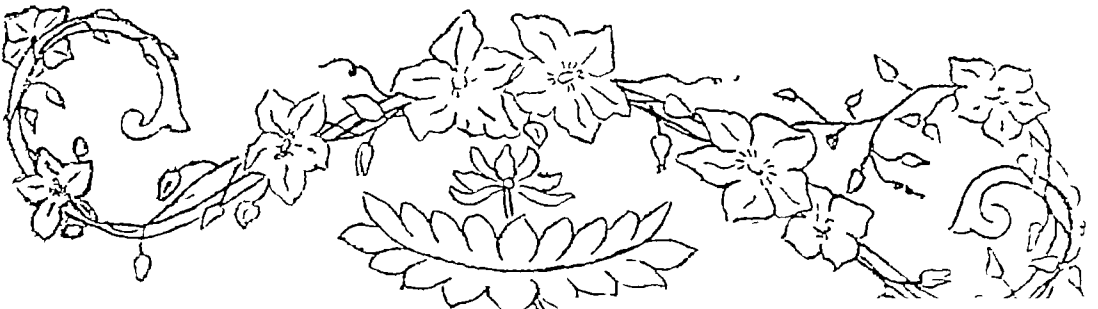
चण्ड कौशिक का उद्धार !

(महावीर-वाणी)

मैं नहीं ठहरूँगा हर्गिज़ मार्ग मेरा छोड़दो
बंधुओ ! मेरी तरफ की व्यर्थ चिन्ता छोड़दो ।
स्वप्न में भी भय के मारे भीत मैं होता नहीं
मैं तो भय का भी हूँ भय, डर हू भयाना छोड़दो ।
मौत मेरे सामने कर जोड़ थर-थर कांपती
मैं भयानी मौत का झूँठा डरावा छोड़दो ।
अग्नि जल विष शस्त्र इनका देह तक संबंध है
आत्मा तो अखंड अविनाशी है भ्रमणा छोड़दो ।
हम मुनी हैं स्थूल दुनियाँ से निराला मार्ग है
मृत्यु में जीवन है लखा अपनी बाधा छोड़दो ।
जो तुम्हारा सर्प है वो मित्र है मेरा वही
मित्र के मिलने में देरी यों लगाना छोड़दो
विश्व-हित के हित 'अमर' पागल-बना फिरता हूँ मैं
रुकना होता है क्या पथ से हिमाला छोड़दो ।

—•—

मैं नहीं ठहरूँगा हर्गिज़...... ।

स्थायी (ठेका कव्वाली)

×				×				×				×			
•	ध़	–	ध़	म	र	ग	र	•	म	–	म	म	प	ग	ग
•	मैं	ऽ	न	हीं	ऽ	ठ	ह	•	रूँ		गा	ह	र	गि	ज़

*	र	–	ऩ॒	स	र	ग	ग॒	स	–	–	न	स	–	–	–
*	मा	ऽ	र्ग	मे	ऽ	रा	ऽ	छो	ऽ	ऽ	ड़	दो	ऽ	ऽ	ऽ
*	ऩ॒	–	ऩ॒	स	र	र	–	*	म	–	म	म	प	ग॒	–
*	व	ऽ	धु	ओ	ऽ	मे	ऽ	*	री	ऽ	त	र	फ	की	ऽ
*	र	–	ऩ॒	स	र	र	ग॒	स	–	–	न	स	–	–	–
*	व्य	ऽ	र्थ	चिं	ऽ	ता	ऽ	छो	ऽ	ऽ	ड़	दो	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

*	प	–	प	प	–	ग	म	*	प	प	प	प	–	प	–
*	स्व	ऽ	प्न	में	ऽ	भी	ऽ	*	भ	य	के	मा	ऽ	रे	ऽ
*	प	–	ध	प	–	म	–	*	ग	–	र	र	ग	म	–
*	भी	ऽ	त	मैं	ऽ	हो	ऽ	*	ता	ऽ	न	हीं	ऽ	ऽ	ऽ
*	ऩ॒	–	ऩ॒	स	र	र	–	*	म	–	म	म	प	ग॒	–
*	मैं	ऽ	तो	भ	य	का	ऽ	*	भी	ऽ	हूँ	भ	य	हा	ऽ
*	र	–	ऩ॒	स	र	र	ग॒	स	–	–	ऩ॒	स	–	–	–
*	हु	ऽ	म	चा	ऽ	ना	ऽ	छो	ऽ	ऽ	ड़	दो	ऽ	ऽ	ऽ

———

अतीत की नारियाँ !

भारत में कैसी थीं एक दिन शीलवती कुल नारियाँ
धर्म के पथ पै जो हुईं हँस-हँस के बलिहारियाँ।
राजा विराट के महल में दासी रही थी द्रौपदी
कीचक कुमौत मरा वृथा जाती गई सब नारियाँ।
रावण से दैत्य की कैद में सत्यवती सीता रहीं
सब भयंकर कष्ट पर मानी नहीं बदकारियाँ।
जौहर हुआ चित्तौड़ में गौरव बढ़ा मेवाड़ का
जिन्दा हजारों जल मरीं हँसती हुईं सुकुमारियाँ।
लक्ष्मी थी लक्ष्मी हिन्द की जूझ लड़ी रण भूमि में
देश हित छोड़ा सभी छोड़ के महल अटारियाँ।
रानी थी पृथ्वीराज की कैसी भयङ्कर क्षेत्री
कांसा पर चढ़कर यवनों से फतहे करती थीं तारियाँ।
गौरव पुराना याद कर, साहस की बिजली मन भरो
उठो 'अमर' बहिनो करो उन्नति की तैयारियाँ।

भारत में कैसी थीं...... !

स्थाई दादरा

×			०			×			०		
प	स	र	ग	ग	र	स	र	स	मप	मग	–
भा	रत	में	कै	सी	थीं	ए	ॅ	क	दिन	ऽऽ	ऽ

म	म	र	ग	ग	स	र	–	न	स	–	–
शी	ल	व	ती	कु	ल	ना	ऽ	रि	यां	ऽ	ऽ
ध	स	र	ग	ग	र	स	र	स	नध	नध	–
ध	र्म	के	प	थ	पै	जो	ऽ	हु	ईऽ	ऽऽ	ऽ
म	म	र	ग	ग	स	र	–	न	स	–	–
हँस	हँ	स	के	य	लि	हा	ऽ	रि	यां	ऽ	ऽ

अन्तरा—

प	ग	म	प	प	प	प	ग	म	ध	–	–
रा	जा	वि	रा	ट	के	म	ह	ल	में	ऽ	ऽ
ध	नु	ध	प	–	म	गम	प	म	ग	–	–
प	क्की	र	ही	ऽ	थी	द्रौऽ	ऽ	प	दी	ऽ	ऽ
ध	स	र	ग	ग	र	स	र	स	नध	नध	–
की	चक	कु	मौ	त	म	रा	ऽ	वृ	थाऽ	ऽऽ	ऽ
म	म	र	ग	ग	स	र	–	न	स	–	–
खा	ली	ग	ई	स	व	वा	ऽ	रि	यां	ऽ	ऽ

भारत में कैसी थीं एक दिन . ।

——

पाप की घटाएँ++++++++++++!

पाप की काली घटायें छा रहीं संसार में
सूझता कुछ भी नहीं अज्ञान के अन्धकार में।

अधखिले फूलों से कोमल बालकों के ब्याह क्या
बन्ध करते हो ! कुसमय हेतु यमनागार में।

मौत के मेहमान बूढ़े मौर बांध शान से
बाल-विधवा दें गिरा व्यभिचार के बाज़ार में।

गर्भमें कटतीं धड़ाधड़ पूज्य भी माताओं की
भाड़ बना जाते नराधम शिशु के आहार में।

शीश मन फोड़े मजूरों से मगर पैसा मिले
चिड़ियों कुत्तों से बढ़िया मुँह चटाते प्यार में।

पाप का ताण्डव 'अमर' चारों तरफ़ ही हो रहा
डगमगाती धर्म-नौका बह चली मँझधार में।

ताल—तीव्रा

स्थाई—
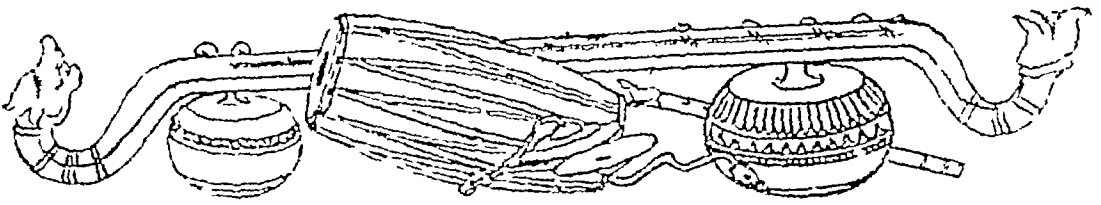
+			२		३		+			२		३	
र	–	स	र	स	र	प	ग॒	ग॒	म	र	–	स	–
पा	ऽ	प	की	ऽ	का	ऽ	ली	ऽ	घ	टा	ऽ	यें	ऽ
र	म	म	म	प	प	–	रम	पध	प	ग॒	–	र	नस
छा	ऽ	र	हीं	ऽ	स	ऽ	साऽ	ऽऽ	र	में	ऽ	ऽ	ऽऽ

सूझता कुछ भी ' ' अन्धकार में। (इसी प्रकार गाइये)

अन्तरा—ठेका वन्द—

मम	प	न	न	न	स	स	स	सस	सस	(न॒)	न॒	न॒	न॒	न॒	न	–
अध	खि	ले	फ़	लों	से	को	ऽ	मल	ऽऽ	ऽ	वा	ल	कों	ऽ	के	ऽ

न॒ध	पम	रम	पध	न॒ध	प	मप	न॒न॒	धप	मग॒	र	रर	सन॒	धन॒	स
ध्याऽ	ऽऽ	ऽह	ऽऽ	ऽर	त्रा	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ

ठेका शुरू—

र	–	स	र	स	र	प	ग॒	ग॒	म	र	र	स	स
व	ऽ	न्द	क	र	ते	ऽ	हा	ऽ	ऽ	कु	ल	च्च	य
र	म	म	म	प	प	–	रम	पध	प	ग॒	–	र	नस
हे	ऽ	तु	श	य	ना	ऽ	गाऽ	ऽऽ	र	में	ऽ	ऽ	ऽऽ

नोट.—अगले सभी स्थाई तथा अन्तरे इसी प्रकार से गाये जायेंगे।
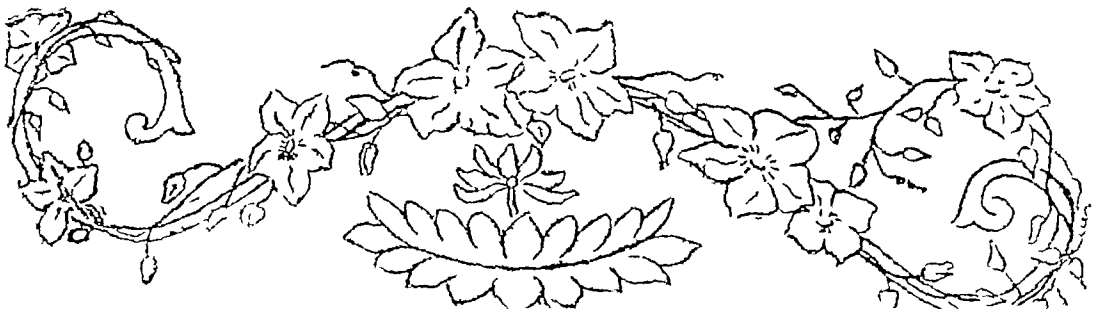
संसार में क्यों आये ?

नाम पैदा ना किया संसार में आया तो क्या !
दिल न दिलवर (प्रभु) में लगाया दिल अगर पाया तो क्या !
भर लिये धन के खजाने पक्की अमारत खूब की
दीन को यदि दान दस दाम धराया तो क्या !
जन्म ले प्रभु-भक्त होकर नित्य प्रभुजी को रटा
मस्त हो सुख भोग में प्रभु नाम बिसराया तो क्या !
मोम-सा बस में हुआ झड़ता फिरा हर एक से
धर्म-रक्षा के समय पग पीछे सरकाया तो क्या !
सत्य का भक्त का धर्मी पक्का रहा आराम में
कष्ट में निज सत्य भूला और छिपाया तो क्या !
बैठ गप्प-शप्प मण्डली में गप्प हांकी खूब ही
दो घड़ी सत्संग में गर आन शर्माया तो क्या !
पथ पर एक स्वेद-बिन्दु का भी श्रम कुछ ना किया
ऐ 'अमर' ऐ बक यदि निज शीश कटवाया तो क्या !

नाम पैदा ना किया......!

(ठका कव्वाली)

स्थायी—

×				×				×				×			
•	सु	-	सु	प	र	र	-	•	म		ग	म	र	गु	-
•	ना	ऽ	म	पै	ऽ	दा	ऽ	•	ना	ऽ	कि	या	ऽ	.	.

र	र	–	ऩ	स	र	र	ग॒	(र)स	–	–	न	स	–	–	–
स	सा	ऽ	र	मैं	ऽ	आ	ऽ	या	ऽ	ऽ	तो	क्या	ऽ	ऽ	ऽ
*	ऩ	ऩ	ऩ	स	र	र	र	*	म	–	ग	म	प	ग॒	–
*	दि	ल	ना	दि	ल	व	र	*	से	ऽ	ल	गा	ऽ	या	ऽ
*	र–	–	ऩ	स	र	र	ग॒	(र)स	–	–	न	स	–	–	–
*	दिल	ऽ	अ	ग	र	पा	ऽ	या	ऽ	ऽ	तो	क्या	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

*	प	प	प	प	–	ग॒	म	*	प	–	प	प	–	प	–
*	भ	र	लि	ये	ऽ	ध	न	*	के	ऽ	ख	ज़ा	ऽ	ने	ऽ
*	म	–	ध	प	प	म	म	*	ग	–	र	र	ग	म	–
*	ऐ	ऽ	शो	इ	श	र	त	*	खू	ऽ	ब	की	ऽ	ऽ	ऽ
*	ऩ	–	ऩ	स	र	र	र	*	म	–	ग	म	प	ग॒	–
*	दी	ऽ	न	को	ऽ	य	दि	*	दा	ऽ	न	दे	ऽ	ते	ऽ
*	र	–	ऩ	स	र	र	ग॒	(र)स	–	–	न	स	–	–	–
*	हा	ऽ	थ	थ	ऽ	रा	ऽ	या	ऽ	ऽ	तो	क्या	ऽ	ऽ	ऽ

———
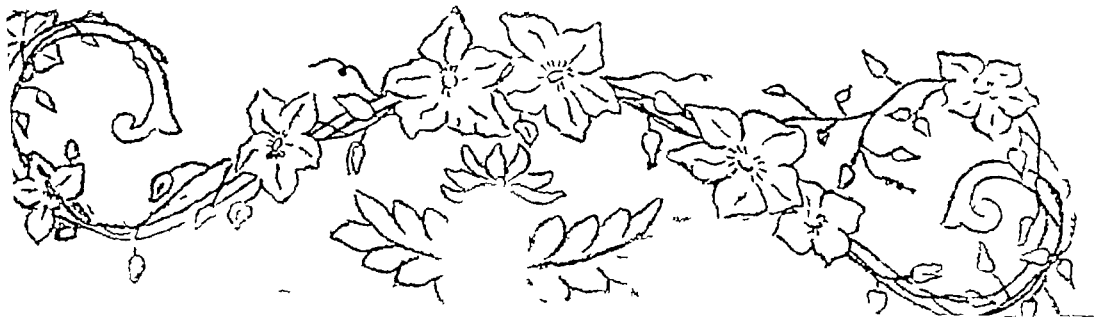
सर्व धर्म समन्वय !

धर्म पथ ढूँढ़ा नहीं 'धार्मिक' हुआ तो क्या हुआ
आत्म हित-चर्चा नहीं 'आस्तिक' हुआ तो क्या हुआ !
सप्त भंगी रट रटाकर स्याद्वादी बन गया
धर्म द्वेष मिटा नहीं 'आर्हत' हुआ तो क्या हुआ !
जानकर भी परमतः प्रतिपद क्षणभंगुर जगत
'मैं' का विष उतरा नहीं 'सौगत' हुआ तो क्या हुआ !
विश्व का प्रत्येक प्राणी विष्णु का ही रूप है
कार्य से झलका नहीं 'वैष्णव' हुआ तो क्या हुआ !
पाँच वक्त नमाज पढ़ता डर खुदा की मार से
जुल्म से डरता नहीं 'मुसलिम' हुआ तो क्या हुआ !
बन्धुता के भाव से निःस्वार्थ दुखियों का 'अमर'
दुःख दूर किया नहीं 'क्रिश्चियन' हुआ तो क्या हुआ !

—•—

धर्म-पथ ढूढ़ा नहीं "धार्मिक"" ....!

स्थायी (पश्तो)

×	२	३	×	२	३
प – धृ	रें रें	सां –	पधृ मृ धृ	म –	गृ –
ध ऽ र्म	प थ	ढूँ ऽ	ढ़ाऽ ऽ न	हीं ऽ	धा ऽ
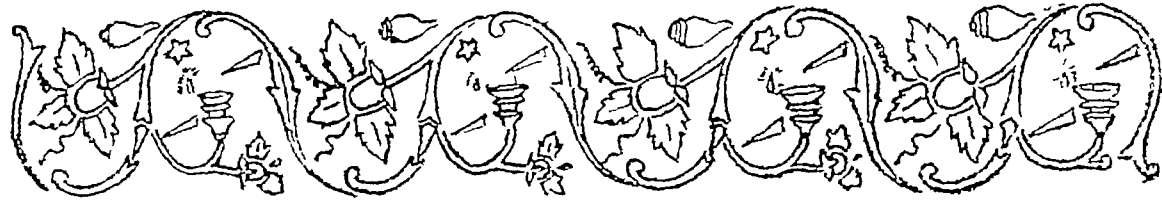
र	गु	(र)स	स	र	सर	गुम	र	गु	रे	स	–	–	–
र्मि	क	हु	आ	ऽ	तोऽ	ऽऽ	क्या	ऽ	हु	आ	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	ध	र	र	स	स	पधु	नु	धु	म	–	गु	–
आ	ऽ	त्म	हि	त	च	रि	याऽऽ	ऽ	न	हीं	ऽ	आ	ऽ
र	गु	(र)स	स	र	रगु	म	गुर	गु	रे	स	–	–	–
स्ति	क	हु	आ	ऽ	तोऽ	ऽ	क्याऽ	ऽ	हु	आ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

म	–	म	म	–	म	–	स	गु	स	न	–	स	स
स	ऽ	प्त	भ	ऽ	गी	ऽ	र	ट	र	टा	ऽ	क	र
न	–	न	न	–	स	–	नस	रगुं	र	सर	नस	–	–
स्या	ऽ	द	वा	ऽ	दी	ऽ	वऽ	ऽन	ग	याऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
प	–	धु	र	–	स	स	पधु	नु	धु	म	–	गु	गु
ध	ऽ	र्म	द्दे	ऽ	प	मि	टाऽ	ऽ	न	हीं	ऽ	आ	र्
र	–गु	स	स	र	रगु	म	गुर	गु	रे	स	–	–	–
द	ऽत	हु	आ	ऽ	तोऽ	ऽ	क्याऽ	ऽ	हु	आ	ऽ	ऽ	ऽ

संघ !
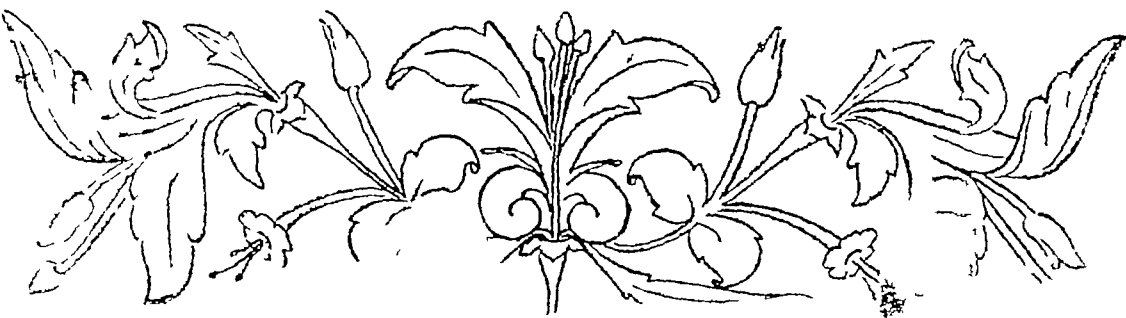
आओ आओ एक बार संघ की छाया में!
जिसमें संघ सदा रहता है।
उसके नित्य पड़ा रहता है॥
चरणों में संसार!
फूट पुजारी जो होते हैं।
वे निज गौरव सब खोते हैं॥
पाते हैं धिक्कार!
दुर्बल जन भी संघ सहारे।
बन जाते हैं वीर करारे॥
संघ सदा जयकार!
दीन पतंगे यदि सब मिलके।
टूट पड़े दीपक पै झुलस के॥
करें तिमिर में क्षार!
निर्बल तार परस्पर मिलते।
महाबली गजराज जकड़ते॥
मिल बंधन में डार!
बूँद-बूँद मिल दरिया बहते।
नहीं किसी के रोके रुकते॥
होता अति विस्तार!
ऊँची नीची भावना छोड़ो!
अमर सूत्र से नेहा जोड़ो॥
सुखी बनो नरनार!

—•—

स्थायी (कहरवा)

×				o				×				o			
*	स	स	–	र	–	ग	ग	म	–	म	ग	र	ग	र	–
*	आ	जा	ऽ	ओ	ऽ	इ	क	वा	ऽ	र	स	ऽ	प	की	ऽ
ध	–	स	–	र	ग॒	र	स	*	स	स	–	र	–	ग	ग
छा	ऽ	या	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ	*	आ	जा	ऽ	ओ	ऽ	इ	क
म	–	म	ग	र	ग	र	र	ध	–	स	–	र	ग॒	र	स
बा	ऽ	र	स	ऽ	प	की	ऽ	छा	ऽ	या	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

*	स	स	न	स	–	ऩ॒	ध	ऩ॒	र	र	ग	म	ग	र	स
*	जि	न	में	स	ऽ	प	स	दा	ऽ	र	ह	ता	ऽ	है	ऽ
*	स	स	न	स	–	ऩ॒	ध	ऩ॒	र	र	ग	म	ग	र	स
*	उ	न	के	नि	ऽ	त्य	प	छा	ऽ	र	ह	ता	ऽ	है	ऽ
*	स	स	स	र	–	ग	–	म	–	म	ग	र	ग	र	र
*	च	र	णों	में	ऽ	स	ऽ	सा	ऽ	र	स	ऽ	प	की	ऽ
ध	–	स	–	र	ग॒	र	स	*	स	स	–	र	–	ग	ग
छा	ऽ	या	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ	*	आ	जा	ऽ	ओ	ऽ	इ	क
म	–	म	ग	र	ग	र	–	ध	–	स	–	र	ग॒	र	स
बा	ऽ	र	स	ऽ	प	की	ऽ	छा	ऽ	या	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ

*अपने मध्यम को षड्ज मानकर इस गीत को गाइये।
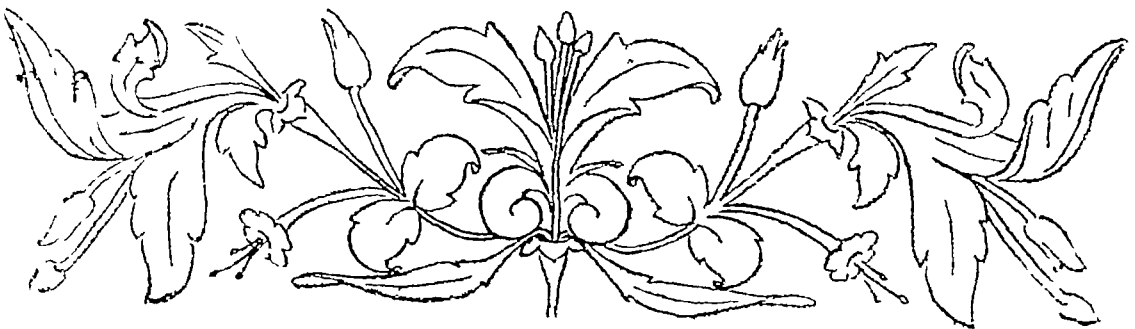
वीर का संदेशा !

संदेशा वीर स्वामी का जहाँ को हम सुना देंगे।
बजा जैनत्व का डंका जहाँ को हम जगा देंगे॥
अविद्या के जो बादल हैं वे छाये आज भारत में।
मिटा उनका मिटाकर ज्ञान की गङ्गा बहा देंगे॥
अछूतों पर जो होते हैं जुलम यहाँ रातदिन भारी।
सिखाकर साम्य की शिक्षा जुलम वे सब हटा देंगे॥
मतों के जाल में फँसकर जो भाई लड़ रहे हैं हा!
अनेकान्ती बना सबको परस्पर हम मिलावेंगे॥
हमारी कौम यह मुर्दा हुई है सब तरह से जो।
अमर अमृत पिलाकर सबको फिरसे जिलावेंगे॥

						स्थायी (कहरवा)									स
×				×				×				×			सं
स	प	प	–	•	प	ग	ग	ग	प	म	ग	म	प	–	प
से	ऽ	शा	ऽ	•	वी	ऽ	र	स्वा	ऽ	मी	ऽ	का	ऽ	ऽ	ज
म	–	ग	र	•	ग	म	म	ग	–	स	रे	ग	स	–	स
हाँ	ऽ	को	ऽ	•	ह	म	सु	ना	ऽ	दें	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ब

स	प	प	-	*	प	न॒	न॒	ध॒	प	म	ग॒	म	प	-	प
जा	ऽ	जै	ऽ	*	न	ऽ	त्व	का	ऽ	ड	ऽ	का	ऽ	ऽ	ज
म	-	ग॒	र	*	ग॒	म	म	ग॒	-	स	रे॒	ग॒	स	-	स
हा	ऽ	को	ऽ	*	ह	म	ज	गा	ऽ	दें	ऽ	गे	ऽ	ऽ	स

देशा वीर स्वामी का जहा को हम सुना देंगे।

अन्तरा— स अ

स	-	स	-	*	स	-	न॒	न॒	र	स	र	न॒	-	-	ध
वि	ऽ	श्वा	ऽ	*	के	ऽ	जो	व	ह	ते	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	ये
प	ध	म	-	*	प	-	ध॒	न॒	-	प	ध॒	न॒	प	-	स
ग	ऽ	दे	ऽ	*	ना	ऽ	ले	भा	ऽ	र	त	में	ऽ	ऽ	नि
स	प	प	प	*	प	न॒	न॒	ध॒	प	म	ग॒	*	म	प	प
शा	ऽ	इ	न	*	का	ऽ	मि	टा	ऽ	क	र	*	क्षा	ऽ	न
म	-	ग॒	र	*	ग॒	म	म	ग॒	-	स	रे॒	ग॒	स	-	स
की	ऽ	ग	ऽ	*	गा	ऽ	व	हा	ऽ	दें	ऽ	गे	ऽ	ऽ	स

देशा वीर स्वामी का जहा को हम सुना देंगे।
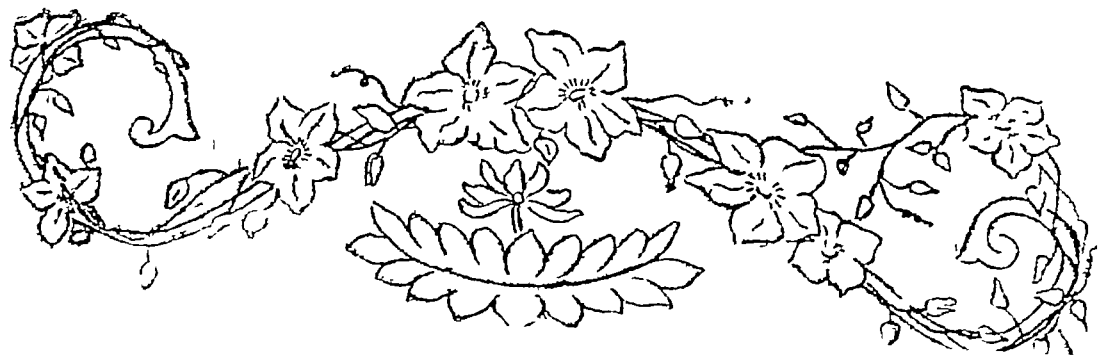
तरने का अवसर !

तारना चाहे तो खुद को मौका है अब तार ले
इस असार शरीर से भी सार का भी सार ले।
प्रथम परमेश की अनुपासना कर प्रेम से
ढोंग बाज़ी छोड़ अपना रूप आप निहार ले।
दीन दुखिया जो मिले आंसू बहा छाती लगा
दूसरों के दुःख में पड़ने की आदत डाल ले।
गर बुरा व्यवहार कोई तेरे साथ करे तो तू।
कर भला उसका हृदय से क्रोध को हँस मार ले।
आवश्यकतायें घटा अपनी न हो तू लालची
शान्तिदायक सर्वगुरु संतोष को स्वीकार ले।
सत्य ही शुभ है परम है सत्य हो जा सत्य में
पापदल को मार बढ़-बढ़ सत्य की तलवार ले।
भोग नहिं ये रोग हैं, बस दूर ही रहना अमर
कहना था वह कह दिया अब तू भी सोच विचार ले।

तारना चाहे तो खुद को........!

ताल—दीपा

स्थायी—

×	२	३	×	२	३
ग - र	र म	प ध	ग - म	र र	स -
ता ऽ र	ना ऽ	चा ऽ	हे ऽ तो	खु द	को ऽ
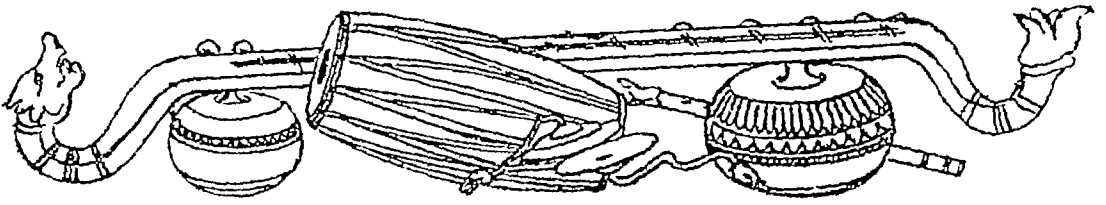
र	म	म	प	ध	म	प	र	ग॒	र	न	-	स	-
मौ	ऽ	का	है	ऽ	श्र	ब	ता	ऽ	र	ले	ऽ	ऽ	ऽ
स	स	र	र	म	प	ध	पध	ग॒	ध	प	ध	म	प
इ	स	अ	सा	ऽ	र	श	रीऽ	ऽ	र	से	ऽ	भी	ऽ
सं	-	न॒	ध	प	म	प	र	ग॒	र	न	-	स	-
सा	ऽ	र	का	ऽ	भी	ऽ	सा	ऽ	र	ले	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

प	-	प	प	ध	म	प	न	-	न	न	स	सं	स
प्रे	ऽ	म	म	य	प	र	मे	ऽ	श	की	ऽ	स	दु
र	-	र	र	ग	र	म	ग	ग	र	स	-	-	-
पा	ऽ	स	ना	ऽ	क	र	प्रे	ऽ	म	से	ऽ	ऽ	ऽ
न	-	न	न	स	स	-	स	-	न॒	ध	प	म	प
ढों	ऽ	ग	वा	ऽ	जी	ऽ	छो	ऽ	ड़	अ	प	ना	ऽ
स	-	न॒	ध	प	म	प	र	ग॒	र	न	-	स	-
रू	ऽ	प	आ	ऽ	प	नि	द्दा	ऽ	र	ले	ऽ	ऽ	ऽ

(शेष अन्तरे इसी प्रकार कहिये)
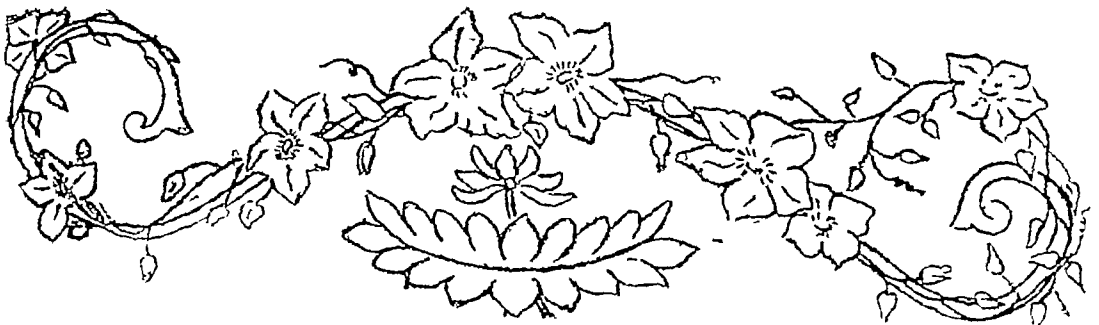
धर्म का पतन !

बहाना धर्म का करके गज़ब किस तौर ढाते हैं
अखिल मानव जगत पर जाल माया का बिछाते हैं।
कहीं पत्थर के बुतों पर हज़ारों भैंसे और बकरे
खटाखट खंजरों से खून के दरिया बहाते हैं।
कहीं कर दो कहीं ईंटें बनाईं शीतला माता
मनों-मन आरती धाते पुजापा का चढ़ाते हैं।
तरसते दो-दो दानों को हज़ारों भाई अति भूखे
हवन में घी मनों फूँकें अकल पै धप जमाते हैं।
बना पाखण्ड मुर्दों के चलाया श्राद्ध का धंधा
पितर के नाम पर मुफ्त ताज़ा माल खाते हैं।
अछूतों को न घुसने दें कभी भी धर्म स्थानों में
अगर सत्कर्म करलें तो भी धड़ से सिर उड़ाते हैं।
बनोये काम बैठा धर्म आगे धर्म वालों के
'भ्रमर' चाहा जिधर ले धर्म की गर्दन घुमाते हैं।

बहाना धर्म का करके ....!

राग शिवरंजनी मिश्र स्थायी (कहरवा)																ग
×				०				×								ब
रे	ग	स	रे	ग	प	–	प	ध	सं	ध	प	ग	–	–	ग	
हा	ऽ	ना	ऽ	ध	ऽ	ऽ	र्म	का	ऽ	क	र	के	ऽ	ऽ	ग	
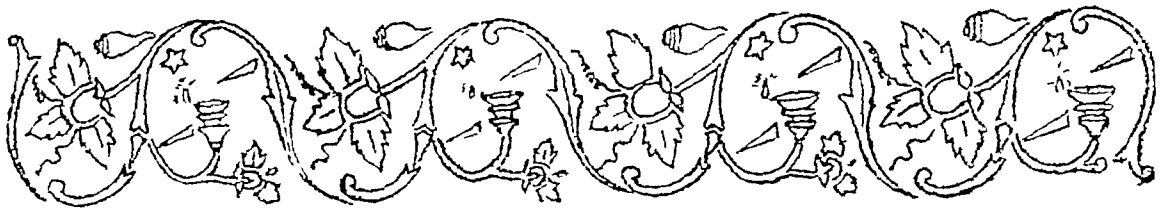
र	ग	स	र	ग	प	–	प	रग	मग	र	ग	स	–	–	स
ज	व	कि	स	तौ	ऽ	ऽ	र	ढाऽ	ऽऽ	ते	ऽ	है	ऽ	ऽ	अ
ध	स	र	ग	प–	–	–	प	ध	स	ध	प	ग	–	–	ग
खि	ल	मा	ऽ	नव	ऽ	ऽ	ज	ग	त	प	र	जा	ऽ	ऽ	ल
र	ग	स	र	ग	प	–	प	रग	मग	र	ग	स	–	–	ग
मा	ऽ	या	ऽ	का	ऽ	ऽ	वि	छाऽ	ऽऽ	ते	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	व

ढाना धर्म का करके गजब किस तौर ढाते हैं।

अन्तरा—

															प
															च
प	ध	स	र	–	र	र	र	प	ध	स	र	गं	–	–	र
ढा	ऽ	प	ऽ	ऽ	त्थ	र	के	दे	ऽ	वों	ऽ	पै	ऽ	ऽ	ह
स	र	स	ध	*	स	–	र	गं	र	स	र	स	–	–	ध
जा	ऽ	रों	ऽ	*	मैं	ऽ	से	औ	र	ध	क	रे	ऽ	ऽ	ख
प	–	ग	र	ग	–	–	र	स	र	ग	प	*	ध	स	ध
टा	ऽ	ख	ट	खं	ऽ	ऽ	ज	रों	ऽ	से	ऽ	*	खू	ऽ	न
प	–	ग	र	ग	–	–	ग	रग	मग	र	ग	स	–	–	ग
के	ऽ	द	रि	या	ऽ	ऽ	व	हाऽ	ऽऽ	ते	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	व

ढाना धर्म का करके गजब किस तौर ढाते हैं।
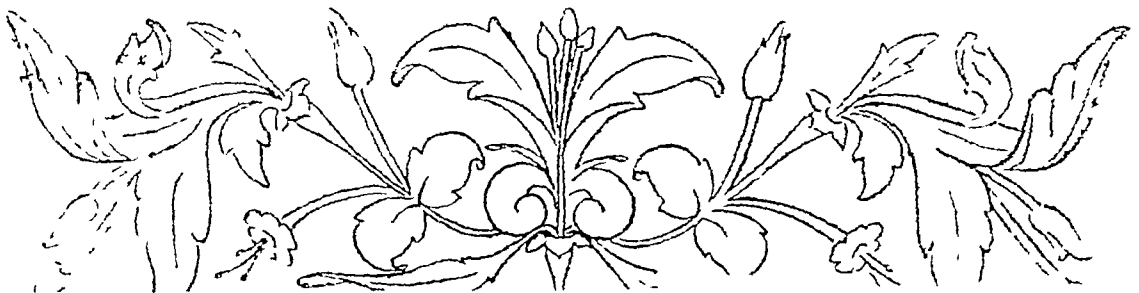
वीर के सैनिक !

महावीर स्वामी के सैनिक बनेंगे
उसी के बताए सुपथ पर चलेंगे।
विपत्ती सहेंगे जो आयेंगी ऊपर,
न तिलमात्र भी निज प्रण से डिगेंगे॥
उठाये अहिंसा का झंडा फिरेंगे
अहिंसा को संसार-व्यापी करेंगे।
जियेंगे तो धर्म की रक्षा की खातिर
इसी धर्म रक्षा की खातिर मरेंगे॥
मिटा ऊँच नीच के भेद भयंकर,
सरल साम्य-सूचक नया युग रचेंगे।
'सजो शक्ति अपनी बनो पूर्ण ईश्वर'
संदेशा प्रभू का यह सबसे कहेंगे॥
भ्रमाक्रान्त नद में मिला पंथ नदियाँ
मत-कूप जग से मिटा के हटेंगे।
महा के विरल-त्रिवेणी के जल में
'अमर' मुक्ति मन्दिर में जाके रमेंगे॥

महावीर स्वामी के सैनिक !

राग दरबारी (मिश्र) मल्हार (मध्यलय)

स्थायी—

×		२			०		३		
धुम	रम	धु	मु	प	म	प	धु	मु	ग
म	हाऽ	वी	ऽ	र	स्वा	ऽ	मी	ऽ	क
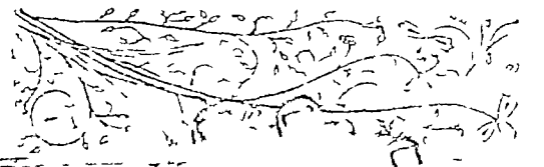
ऩ	स	र	र	प	ग॒	म	र	–	स
सै	ऽ	नि	क	व	नें	ऽ	गे	ऽ	ऽ
ऩस	रस	ध॒	ऩ	प	म	प	ध॒	ऩ	स
उऽ	सीऽ	के	ऽ	व	ता	ऽ	ये	ऽ	सु
ऩ	स	र	र	प	ग॒	म	र	–	स
प	थ	पै	ऽ	व	लें	ऽ	गे	ऽ	ऽ

महावीर स्वामी के सैनिक वनेंगे।

अन्तरा—

म	प	ध॒	–	न॒	स	–	स	–	स
वि	प	त्ती	ऽ	स	हैं	ऽ	गे	ऽ	जो
न॒	स	र	–	स	न॒स	रस	ध॒	न॒	प
आ	ऽ	यें	ऽ	गी	ऊऽ	ऽऽ	प	र	न
गं॒	गं॒	गं॒	–	म	र	–	स	–	स
ति	ल	मा	ऽ	त्र	भी	ऽ	नि	ऽ	ज
प	प	मप	न॒प	मप	ग॒	म	र	–	स
प्र	ण	सेऽ	ऽऽ	डिऽ	गें	ऽ	गे	ऽ	ऽ

महावीर स्वामी के सेवक वने गे।
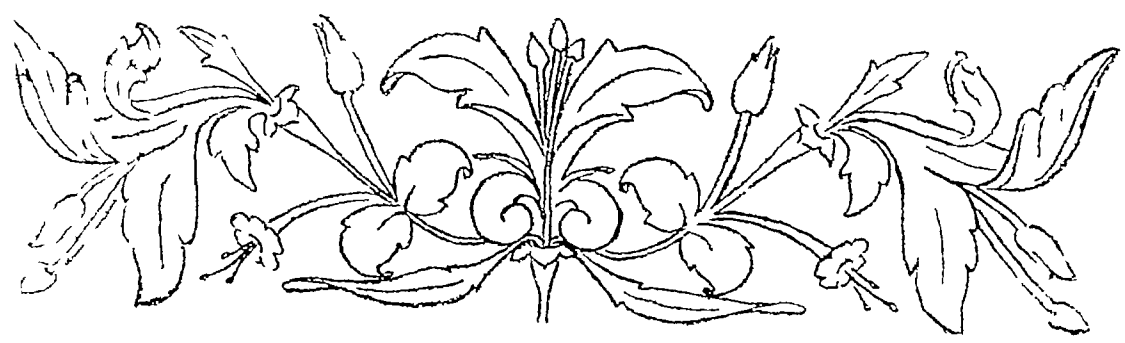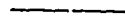
जागो, उठो !

अफ़सोस तुम राहगीर फिर बेहोश सोते हो
जागो हुआ परभात क्यों यह वक्त खोते हो ?
मारग विकट मन-चोर बन फिर दूर चलना है
क्यों पाप की गठरी का बोझा सरपे ढोते हो ॥
चोरों की यह नगरी है इसमें सावधानी से
रहना संभल के काहे को यों मस्त सोते हो ।
ये इन्द्रियां हैं चोर मन सरदार है इनका
कहदो इन्हें हम देखते हैं क्या चुराते हो ॥
यहां लुट गये लाखों सयाने भूल में आकर
सिर पीट कर रोते गए क्यों तुम भी रोते हो ।
नर धर्म रूपी रत्न की पेटी ही सुख देगी
इसको लुटेरों से 'अमर' क्यों ना छुपाते हो ॥

स्थायी (दादरा)																प़	ध़
×			•			×						×			•	ध	फ़
स	–	म	म–	स	स	स	–	दु	स–	नु	–	म	–	र	ग	म	म
सो	ऽ	स	तुम	रा	ह	गी	ऽ	र	फिर	बे	ऽ	हो	ऽ	श	सो	ऽ	ते
ग	–		–	स	रे॒	म	–	म	ग	रे॒	रे॒	स	–	ध़	प़	प़	ध़
हो		ऽ	ऽ	जा	ऽ	गो	ऽ	हु	आ	प	र	भा	ऽ	त	क्यों	य	ह
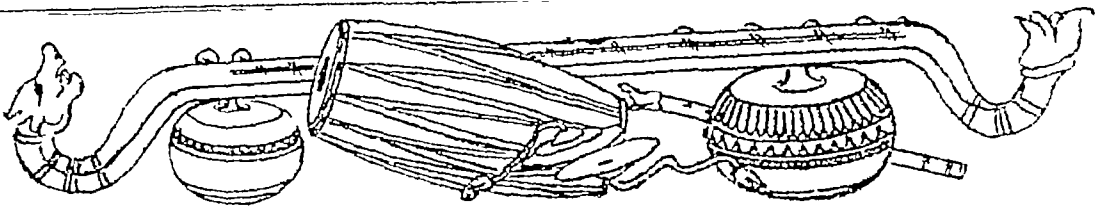
स – स ग रे रें	स – – – ध नि	
व ऽ क खो ऽ ते	हो ऽ ऽ ऽ अ फ	सोस तुम राहगीर फिर

वेहोश सोते हो, जागो हुआ परभात क्यों यह वक्त खोते हो।

	अन्तरा—	म –
		मा ऽ
ग ग म ध– ध नि	स – नि रे– स स	नि – ध प नि ध
र ग त्रि कट घ न	वो ऽ र वन फि र	दू ऽ र च ल ना
प – – – म प	नि – नि नि नि ध	प ध ध प ध म
है ऽ ऽ ऽ क्यों ऽ	पा ऽ प की ग ठ	री ऽ का वो ऽ झा
प प ध नि प ध	प – – – म –	ध – ध ध ध प
स र पै हो ऽ ते	हो ऽ ऽ ऽ चो ऽ	रों ऽ की ये न ग
म प प म म ग	ग प म र – म	ग – – – स रे
री ऽ है इ स में	सा ऽ व धा ऽ नी	से ऽ ऽ ऽ र ह
म – म म प म	ग म ग रे स –	स – रे ग स रे
ना ऽ सँ भ ल के	का ऽ हे को यों ऽ	म ऽ स्त हो ऽ ते
स – – – ध नि		
हो ऽ ऽ ऽ अ फ	सोस तुम राहगीर फिर ।	

———

गीत
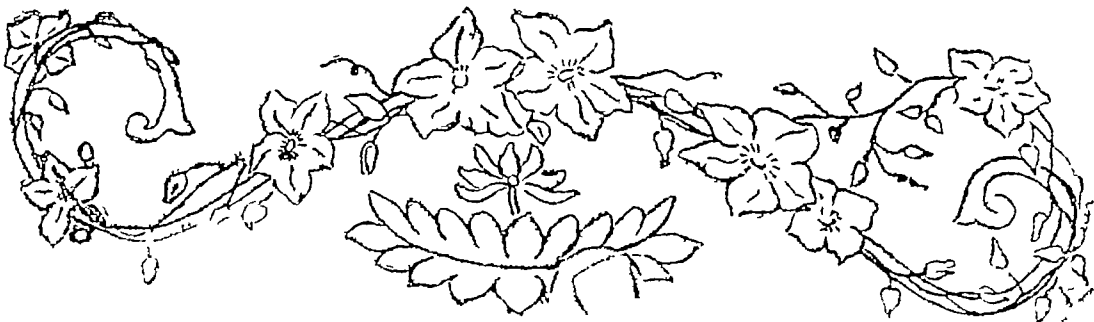
मनुष्य बन लगा दौड़ विषयों से मुख मोड़ ।
भूल न जाना ओ माझी भूल न जाना ॥
जीवन है एक लहर सिंधु की इत आये, उत जाये ।
धर्म-कर्म कुछ किया न जिसने वह पीछे पछताये ॥
नरक में मिले ठौर पावे दुख अति घोर ।
मन कलपाना ओ माझी भूल न जाना ॥
पाकर कुछ चाँदी के टुकड़े काहे ज्वार दिखाए ।
कौड़ी संग चले कब तेरे किस पर शोर मचाए ?
आवे कोई द्वारे दुखी दीन बनाना सुखी ।
जग-यश पाना ओ माझी भूल न जाना ॥
बड़े-बड़े राजा महाराजा आए जग पर छाए ।
लगा काल का चपत अन्त में ढूँढे खोज न पाए ॥
तू तो सीधा बन चल काहे करे छल-बल ?
गर्व मचाना ओ माझी भूल न जाना ॥
भक्ति-भाव से झूम-झूम कर क्यों न ईश गुण गाए ?
शुष्क हृदय में अमर प्रेम का क्यों न सुरस बरसाए ॥
पाप-मल सारे धोवें दुख-द्वन्द्व सभी खोवें ।
'जिन' बन जाना ओ माझी भूल न जाना ॥

—•—
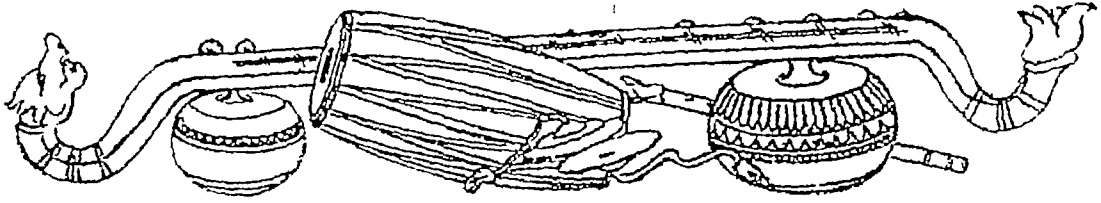
(ताल कहरवा)

							स्थायी—								स
×				०				×				०			म
स	र	स	न	स	स	र	र	र	ग॒	र	स	न	स	र	र
नु	ष्य	व	न	ल	गा	दौ	ड़	वि	ष	यों	से	मु	ख	मो	ड़
र	ग॒	र	स	स	-	र	स	न	-	-	न	स	र	र	-
भू	ऽ	ल	न	जा	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ओ	प्रा	ऽ	णी	ऽ
र	ग॒	र	स	स	-	र	न	स	-	-	-	-	-	-	-
भू	ऽ	ल	न	जा	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
							अन्तरा—								
सर	रर	रम	मम	मप	पप	-प	प-	मध	पम	र-	सर	नस	स	-	-
जीऽ	वन	हैऽ	एक	लह	रसि	ऽधु	कीऽ	इन	आऽ	येऽ	उत	जाऽ	ये	ऽ	ऽ
म-	मम	-म	मग	रग	गम	गर	र-	सर	रग॒	रस	सर	नस	स	-	स
धऽ	र्मक	ऽर्म	कुछ	किया	ऽन	जिस	नेऽ	वह	पीऽ	छेऽ	पछ	ताऽ	ये	ऽ	न
स	र	स	न	स	र	र	र	र	ग॒	र	स	न॒	स	र	र
र	क	में	ऽ	मि	ले	ठौ	र	पा	वे	दु	ख	अ	ति	घो	र
र	ग॒	र	स	स	-	र	स	न	-	-	न	स	र	र	-
म	न	क	ल	पा	ऽ	ना	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ओ	प्रा	ऽ	णी	ऽ

भूल न जाना, मनुष्य बन ' " ' इत्यादि ।

मैं क्या हूँ ?

मैं न हूँ किसी तरह भी दीन
सतत अमल आनन्द जलधि का मैं हूँ सुखिया मीन।
संसारी भ्रमर का यहाँ नित बिछा हुआ है जाल
बिछा रहे मुझको न कभी भी होता तनिक मलाल।
मैं तो हूँ अपने में तल्लीन॥
आत्म-स्वरूप से मुझे डिगा दो करके आघात
वज्र प्रकृति का बना हुआ हूँ क्या डिगने की बात।
स्वप्न में भी न बनूँगा दीन॥
भवसागर से तैर रहा हूँ हुआ समझो पार
क्या चिंता अब खुला खुला यह मोक्षपुरी का द्वार।
विश्व में मैं हूँ एक स्वाधीन॥
हानि लाभ हो स्तुति निंदा मान और अपमान
अच्छा बुरा भला कुछ भी हो मैं समझे न मान।
कौन क्या देगा लेगा कौन?
अन्धकार विध्वस्त हुआ है यहाँ ज्ञान-आलोक
'अमर' शांति सन्देश सुनेगा सकल चराचर लोक।
अभ्युदय हूँ मैं नित्य नवीन॥

—•—

						स्थायी (कहरवा)										म
•				×								×				मैं
नि	स	ग	म	स	म	र	र	स	नि	ध	म	स	–	स	स	
ऽ	न	हूँ	ऽ	कि	सी	ऽ	त	र	ह	भी	‿	दी	ऽ	न	मैं	

न	स	ध	न	स	ग	र	र	स	न	प	ध	स	–	–	–
ऽ	न	हूँ	ऽ	कि	सी	ऽ	त	र	ह	भी	ऽ	ही	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	स	ग	ग	र	ग	ग	ग्र	र	ग	प	प	ध
ऽ	ऽ	ऽ	न	अ	त	ल	अ	म	ल	आ	ऽ	न	ऽ	द	ज
म	म	म	–	ग	–	ग	म	ग	र	स	न	स	–	स	स
ल	धि	का	ऽ	मैं	ऽ	हूँ	ऽ	सु	खि	या	ऽ	मी	ऽ	न	मैं

ऽ न हूँ किसी तरह भी हीन।

अन्तरा--

स	–	स	–	ग	–	र्म	–	प	प	प	र्म	प	ध	प	प
स	ऽ	सा	ऽ	री	ऽ	झ	ऽ	झ	ट	का	ऽ	च	हुँ	दि	श
प	प	ध	न	प	–	म	ग	र	म	ग	–	–	–	–	–
बि	छा	ऽ	हु	आ	ऽ	है	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल
ग	र	ग	म	ग	र	स	स	ध	न	प	ध	स	–	स	–
बि	छा	ऽ	र	हे	ऽ	मु	झ	को	ऽ	न	क	भी	ऽ	भी	ऽ
र	–	र	–	ग	र	प	म	ग	–	ग	र	न	स	ध	न
हो	ऽ	ता	ऽ	त	नि	क	ख	या	ऽ	ल	मैं	ऽ	तो	हूँ	ऽ
स	ग	र	–	स	न	प	ध	स	–	स	स	न	स	ध	न
अ	प	ने	ऽ	मैं	ऽ	ल	व	ली	ऽ	न	मैं	ऽ	न	हूँ	ऽ

किसी तरह भी हीन।

मैं क्या हूँ ?

मैं न हूँ किसी तरह भी दीन
अतल अमल आनन्द जलधि का मैं हूँ सुखिया मीन।
संसारी ममता का चाहे निज बिछा हुआ है जाल
बिछा रहे मुझको न कभी भी होता तनिक बवाल।
मैं तो हूँ अपने में लवलीन॥
आत्म-स्वरूप से मुझे डिगाते हों लाखों आघात
जड़ प्रकृति का बना हुआ हूँ क्या डिगने की बात।
स्वप्न में भी न बनूँ या दीन॥
भवसागर से तैर रहा हूँ हुआ समझलो पार
क्या चिंता अब खुला खुला वह मोक्षपुरी का द्वार।
विश्व में मैं हूँ इक स्वाधीन॥
हानि लाभ हो स्तुति निंदा मान और अपमान
अच्छा बुरा सब कुछ भी हो मैं सबसे बे मान।
कौन क्या देगा, लेगा कौन?
अन्धकार विध्वस्त हुआ है बढ़ा ज्ञान-आलोक
'अमर' ध्वनि सन्देश सुनेगा सकल चराचर लोक।
समुन्नत हूँ मैं नित्य नवीन॥

—•—

स्थायी (कहरवा)															म
•				×				•				×			मैं
ग	स	ध	म	स	ग	र	र	स	ग	प	ध	स	~	स	म
ऽ	न	हूँ	ऽ	कि	सी	ऽ	त	र	ह	भी	ऽ	दी	ऽ	न	मैं

न	स	ध	न	स	ग	र	र	स	न	प	ध	स	–	–	–
ऽ	न	हूँ	ऽ	कि	सी	ऽ	त	र	ह	भी	ऽ	ही	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	स	ग	ग	र	ग	ग	ग	र	ग	प	प	ध
ऽ	ऽ	ऽ	न	अ	त	ल	अ	म	ल	आ	ऽ	न	ऽ	द	ज
म	म	म	–	ग	–	ग	म	ग	र	स	न	स	–	स	स
ल	धि	का	ऽ	मैं	ऽ	हूँ	ऽ	सु	खि	या	ऽ	मी	ऽ	न	मैं

ऽ न हूँ किसी तरह भी हीन।

अन्तरा--

स	–	स	–	ग	–	मं	–	प	प	प	मं	प	ध	प	प
स	ऽ	सा	ऽ	री	ऽ	झ	ऽ	झ	ट	का	ऽ	च	हुँ	दि	श
प	प	ध	न	प	–	म	ग	र	म	ग	–	–	–	–	–
वि	छा	ऽ	हु	आ	ऽ	है	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल
ग	र	ग	म	ग	र	स	स	ध	न	प	ध	स	–	स	–
वि	छा	ऽ	र	हे	ऽ	मु	झ	को	ऽ	न	क	भी	ऽ	भी	ऽ
र	–	र	–	ग	र	प	म	ग	–	ग	र	न	स	ध	न
हो	ऽ	ता	ऽ	त	नि	क	ख	या	ऽ	ल	मैं	ऽ	तो	हूँ	ऽ
स	ग	र	–	स	न	प	ध	स	–	स	स	न	स	ध	न
अ	प	ने	ऽ	मैं	ऽ	ल	व	ली	ऽ	न	मैं	ऽ	न	हूँ	ऽ

किसी तरह भी हीन।

मनुष्य कौन ?

मनुष्य क्या भाग्य की जो ठोकरें न सह सके
मनुष्य क्या जो संकटों के बीच सुख न रह सके।
मनुष्य क्या तूफान से जो क्षुब्ध भीम-सिन्धु में
लहर के शीश पैर से न सहर्ष चलके बढ़ सके।
मनुष्य क्या जो चमचमाते खड्गों की छाँह में
हाँ मुस्करा के गर्व के न सत्य पाठ पढ़ सके।
मनुष्य क्या जो रोम-रोम बढ़ चले महान से
दिखा प्रचण्ड आत्म-बल न भीम राह गढ़ सके।
मनुष्य क्या जो वासना का पुण्यहार पा 'अमर'
हिमाद्रि-शृङ्ग से भी ऊँचे अपने मन से बढ़ सके।

—•—

मनुष्य क्या···· · ···?

स्थायी (ताल दादरा)											प
×			•			×					म
ग	–	ग	मं	–	रें	ग	सं	ध	ध	प	ध
नु	ऽ	ष्य	क्या	ऽ	भा	ग	ऽ	य	की	ऽ	जो
ग	–	म	प	–	ध	ग	ग	रें	मं	–	प
ठो	ऽ	क	रें	ऽ	न	स	ह	स	के	ऽ	म

प	र	र	र	–	र	र	ग़	र	स	र	स
नु	ऽ	ष्य	क्या	ऽ	जो	स	ऽ	क	टों	ऽ	के
न	स	न	ध	न	ध	न	न	र	स	–	प
वी	ऽ	च	खु	श	न	र	ह	स	के	ऽ	म

नुष्य क्या अदृष्ट की जो ठोकरें न सह सके।

										स	र
										म	ऽ

अन्तरा—

ध	स	नु	ध	प	ध	ग	प	म	ग	–	स
नु	ऽ	ष्य	क्या	ऽ	तू	फा	ऽ	न	से	ऽ	जो
स	म	म	म	ग	म	प	स	नु	ध	–	नु
क्षु	ऽ	ब्ध	भी	ऽ	म	सिं	ऽ	धु	में	ऽ	जो
प	ध	प	म	ग	म	प	स	नु	ध	–	प
क्षु	ऽ	ब्ध	भी	ऽ	म	सिं	ऽ	धु	में	ऽ	उ
प	गुं	रं	र	–	र	र	गुं	र	सं	र	स
ठा	ऽ	के	शी	ऽ	श	वे	ऽ	ग	से	ऽ	न
न	स	न	ध	न	ध	न	न	र	स	–	प
ल	ह	र	ब	न	के	व	ह	स	के	ऽ	म

नुष्य क्या अदृष्ट की जो ठोकरें न सह सके।

वै
रा
ग्य

धर्म की पूँजी कमाले.......!

स्थायी (कहरवा)

×				०				×				०			
*	ग-	ग	ग	र	–	ग	म	रग	ग	–	स	सर	र	स	ऩ
*	धर्	म	की	पूँ	ऽ	जी	क	माऽ	ले	ऽ	क	माऽ	ले	जी	वा
*	स	र	र	र	–ग	स	–	*	ग	ग	ग	र	–	ग	म
*	जी	वन	वन	जा	ऽय	गा	ऽ	*	धर्	म	की	पूँ	ऽ	जी	क
रग	ग	–	स	सर	र	स	न	*	स	र	र	र	–ग	स	–
माऽ	ले	ऽ	क	माऽ	ले	जी	वा	*	जी	वन	वन	जा	ऽय	गा	ऽ

अन्तरा —

*	स	ग	मं	प	–	प	–	*	मं	मं	प	ग	म	ग–	–
*	वा	गे	ज	हा	ऽ	में	ऽ	*	अ	प	ना	जी	ऽ	वन	ऽ
*	ग	ग	ग	र	–	ग	म	रग	ग	–	स	सर	र	स	न
*	पु	ष्प	सु	ग	ऽ	ध	व	नाऽ	लेऽ	ऽ	ब	नाऽ	ले	जी	वा
*	स	र	र	र	–ग	स	–								
*	जी	वन	वन	जा	ऽय	गा	ऽ								

धर्म की पूँजी कमाले–कमाले जीवा जीवन बन जायगा ।

अमर जीवन !

मरे जो बशर कुछ तो नेकी कमा जा
जहाँ में सखावत का झण्डा फहरा जा।
बने दोस्त दुनिया मिलें सब गले से,
यहाँ से वहाँ प्रेम गङ्गा बहा जा॥
खरी-खोटी सबकी सुने जा पड़े जा
अपने खुदा में खुदी को मिटा जा।
बुरी आदतों का न नामी-निशाँ हो
सदाचार पै सारे जग को चला जा॥
घटा क्या अदालत मरे फ़लसफ़े में
बड़ा भोला-भाला तू सब से बना जा।
बढ़ा अपना पाया ऊँचाई पै इतना
फरिश्तों को भी अपने क़दमों झुका जा॥
जपे तेरी माला मज़ा लाखों क्यों
'अमर' नाम ऐसा अमर तू बना जा।

—•—

राग तिलककामोद मिश्र, ताल—[illegible]

		स्थायी—								स
×	२				०		३			म
र	ग	स	-	स	र	म	प	ध	मप	
रे	ऽ	जो	ऽ	ब	श	र	कु	छ	तोऽ	

स	–	प	–	ध	म	गर	ग	न	स
ने	ऽ	की	ऽ	फ	मा	ऽऽ	जा	ऽ	ज
र	ग	स	–	स	र	म	प	न	स
हा	ऽ	में	ऽ	स	दा	ऽ	क	त	का
स	प	प	ध	ध	म	गर	ग	न	स
भ	ऽ	डा	ऽ	फ	ह	राऽ	जा	ऽ	श्र

रे ओ वशर ।

अन्तरा—

									म
									व
म	प	स	–	स	स	स	स	–	स
ने	ऽ	दो	ऽ	स्त	दु	नि	या	ऽ	मि
र	ग	ग	ग	स	स	र	स	प	प
लें	ऽ	स	व	ग	ले	ऽ	से	ऽ	य
प	न	न	स	स	र	ग	ग	–	स
हा	ऽ	से	ऽ	व	हा	ऽ	प्रे	ऽ	म
स	प	ध	ध	म	म	गर	ग	न	स
ग	ऽ	गा	ऽ	व	हा	ऽऽ	जा	ऽ	श्र

क्या किया ?

तू न आके जगत् में भला क्या किया
काम अच्छा सुयश का भला क्या किया !

पेट दिन रात अपना ही भरता रहा
खा-खा मेवा मिठाई अकड़ता रहा ।
भूखे मरते न भाई को टुकड़ा दिया !

ऐसी भड़ुओं की महफ़िल जहां भी जमी,
बाबू जी की सवारी वहां ही थमी ।
बैठ सत्संग में अमरस कभी न पिया !

चाही हर्गिज़ किसी की भलाई नहीं
छोड़ी कुछ भी बड़ों की बुराई नहीं !
टूटा दिल न किसी का दया से सिया !

फूल होकर न लोगों के मस्तक चढ़ा
पाठ जीवन सफलता का कुछ ना पढ़ा ।
काँटा बनके 'अमर' पर छिपा क्या छिपा !

— • —

तूने आके जगत में बता.........!

स्थायी (दादरा)										स	स
×			०			×			०	तू	ने
ग	रे	स	नृ	स	स	सर	ग	र	ग	स	स
आ	के	ज	गत	में	व	ताऽ	क्या	लि	या	का	म
ग	रे	स	नृ	स	स	सर	ग	र	ग	स	स
अ	च्छा	सु	यश	का	व	ताऽ	क्या	कि	या,	तू	ने

आके जगत में वता क्या लिया।

अन्तरा—										र	ग
										पे	ट
म	म	ग	मप	म	ग	र	स	र	ग	र	ग
दिन	रा	त	अप	ना	ही	भर	ता	र	हा	खा	खा
म	म	ग	मप	म	ग	र	स	र	ग	स	स
मे	वा	मि	ठाऽ	ई	अ	फर	ता	र	हा,	भू	खे
सग	रे	स	नृ	स	स	सर	ग	र	ग,	स	स
मर	ते	न	भा	ई	को	टुक	ड़ा	दि	या,	तू	ने

आके जगत में वता क्या लिया। काम अच्छा सुयश का बता क्या किया ?
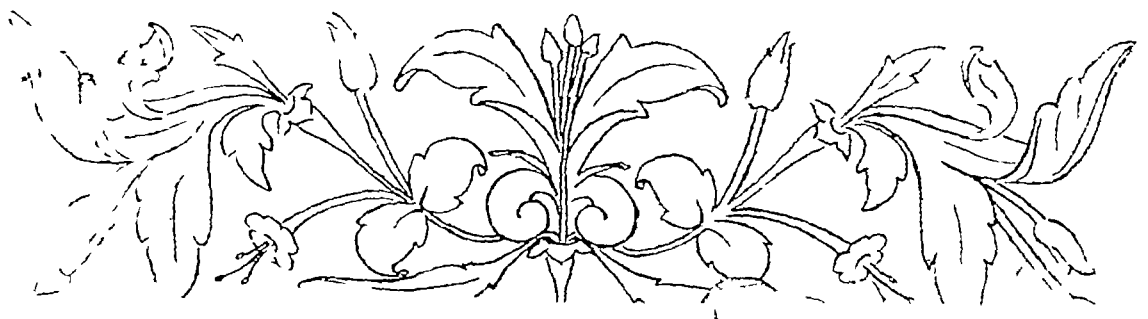
मन की तरंग !

अद्भुत दशा कहूँ क्या कैसी हुई है मन की।
सारी बिगाड़ डाली प्रभुता स्वयं मगन की॥
पल भर में नर्क के और स्वर्गों के जाल बुनता।
पल में उड़ान लेता आशा विफल गगन की॥
कौड़ी पै मर रहा है सब होश भूल बैठा।
चोरों ने ली उड़ा है गठरी अमूल्य धन की॥
क्या खाऊँ पीऊँ क्या-क्या पहनूँ रहूँ कहाँ मैं।
चिन्ता में घुल रहा है सुध-बुध रही न तन की॥
भोगों की वासना के जंगल में घूमता है।
मिट्टी पलीद की है जिनराज के भजन की॥
अन्दर है राक्षसों सा जीवन महा भयंकर।
बाहर का ढोंग क्या है बस देखली लगन की॥
ओ मन देखता क्या मन पर सवार होजा।
आशा 'अमर' रही पर दिल में प्रभु मिलन की॥

—•—

अद्भुत दशा कहूँ क्या++++ + +!

स्थायी (कहरवा)

×								×				०			
ग	स	र	र	स	र	–	स	न	–	स	–	–	–	–	–
अ	द्	भु	त	द	शा	ऽ	क	हूँ	ऽ	क्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
न	स	र	र	स	र	–	स	न	–	स	–	र	प	म	–
अ	द्	भु	त	द	शा	ऽ	क	हूँ	ऽ	क्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

म	-	म	-	म	म	-	ग	र	ग	ग	-	र	-	स	-
कै	ऽ	सी	ऽ	हु	ई	ऽ	है	म	न	की	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
र	म	ग॒	-	र	स	-	र	न	-	स	-	र	ग	म	-
सा	ऽ	री	ऽ	वि	गा	ऽ	ड़	डा	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	म	-	म	म	म	ग	र	ग	ग	-	र	-	स	-
प्र	भु	ता	ऽ	स्व	य	म्	म	न	न	की	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
र	म	ग॒	ग॒	र	स	-	र	न	-	स	-	-	-	-	-
अ	द्	भु	त	द	शा	ऽ	क	हूँ	ऽ	क्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अद्भुत दशा कहूँ क्या कैसी हुई है मन की, अद्भुत दशा कहूँ क्या।

अन्तरा—

ग	प	म	म	ग	र	-	ग	म	प	प	प	-	-	-	-
प	ल	भ	र	में	न	ऽ	र्क	के	ऽ	औ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	ध	न॒	-	प	ध	-	म	ग	प	म	-	-	-	-	-
स्व	ऽ	र्गों	ऽ	के	जा	ऽ	ल	बु	न	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	ध	न॒	-	प	ध	-	म	ग	र	ग	-	-	-	-	-
प	ल	में	ऽ	उ	डा	ऽ	न	ले	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
र	म	ग॒	-	र	स	स	ऩ	स	र	र	-	स	-	न	-
आ	ऽ	शा	ऽ	वि	क	ल	ग	ग	न	की	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अद्भुत दशा कहूँ क्या ।

———

नैतिक शिक्षा !

मत बोओ पेड़ बबूल।
क्योंकि तुम्हारे पग में एकदिन चुभेंगे तीखे शूल॥
दीन जनों का खून चूस कर मत न बनो स्थूल।
रो-रो दुखियाँ फूलेंगी जब मारेंगे त्रास कूल॥
मत ना छाती तान गर्व से चलो अपनी सुध भूल।
जगसे तुम जाओगे एक दिन जैसे हवा से धूल॥
मत ना सता-सता कर सबको करो अपने प्रतिकूल॥
पत्थर दिल को अपने बनाओ अति ही सुकोमल फूल॥
पुरुषोत्तम से शिक्षा यह नर-मन मतना बोओ त्रिशूल।
ब्याज आप ऐसी दैनी में रखलो केवल मूल॥
अगर सदा सुख चाहते हो तो करलो कहना कबूल।
पर उपकारों में ही हरदम 'अमर' रहो मशगूल॥

—•—

मत बोओ पेड़ बबूल...... ....!

								स्थायी (त्रिताल)							
														स	स
०				३				×				२		म	त
स	म	ग	–	ग	मं	प	मं	प	–	–	–	–	–	–	प
बो	ऽ	ओ	ऽ	पे	ऽ	ड़	ब	बू	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल

	न														
मंप	धस	ध	ध	प	-	प	-	मंप	धप	म	-	ग	म	ग	म
क्योंऽ	ऽऽ	कि	तु	म्हा	ऽ	रे	ऽ	पऽ	ऽग	में	ऽ	ए	क	दि	न
ध	प	-	म	र	र	स	-	र	-	स	-	-	स	न	स
चु	भें	ऽ	गे	ती	ऽ	खे	ऽ	शू	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	म	त

वोवो पेड़ ववूल ।

अन्तरा—

स	म	ग	प	मं	ध	प	-	स	-	ध	प	मंप	धप	म	म
दी	ऽ	न	ज	नों	ऽ	का	ऽ	खू	ऽ	न	चू	ऽऽ	सऽ	क	र
प	प	प	प	न	ध	न	र	स	-	-	-	-	-	-	स
म	त	न	व	नो	ऽ	इ	स	धू	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल
*	ग	-	म	र	र	स	-	न	स	न	स	ध	न्	ध	प
*	रो	ऽ	रो	अँ	खि	यां	ऽ	फू	ऽ	ले	ऽ	गी	ऽ	ज	व
*	प	-	प	प	-	प	प	प	मं	प	ध	म	-	ग	म
*	मा	ऽ	रें	गे	ऽ	ज	म	रू	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ	म	त
*	ध	प	म	र	-	स	स	र	-	स	-	-	स,	स	न
*	वो	ऽ	वो	पे	ऽ	ड़	व	वू	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल,	म	त

वोवो पेड़ ववूल ।
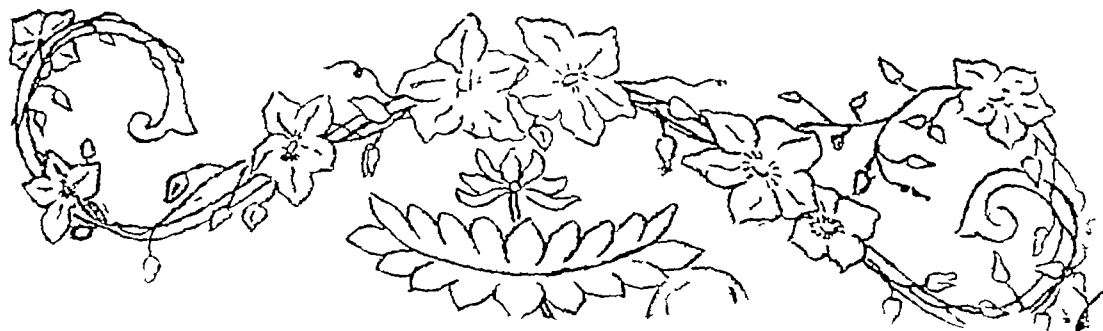
मन मूरख क्यों दीवाना है...!

मन मूरख क्यों दीवाना है
जग सपना क्या गरवाना है।
आज खिला जो फूल चमन में
कल उसको मुरझाना है।
आज खिली जो धूप तो कल को
घन अँधियारा छाना है।
प्रातः चढ़ा जो सूर्य गगन में
शाम हुए छिप जाना है।
अभी उठीं जो लहरें जल में
अभी उन्हें लय पाना है
रात पड़ी जो ओस कमल पर,
हिलते ही ढल जाना है।
यह जीवन कागज़ की पुड़िया
बूँद लगे गल जाना है।
चन्द रोज़ की जिन्दगानी पर
क्यों पागल मस्ताना है।
कितना ही तू क्यों न अकड़ ले
आखिर मरघट जाना है।
कौन किसी का जग में जिस पर
यह सब झगड़ा ठाना है।
'अमर' सत्य पर तू बलि होजा
नाम अमर अपनाना है।

—•—

			स्थायी (कहरवा)											ग	म
×				०				×				०		म	न
गम	पधु	प	म	गु	र	स	र	न	स	ग	म	प	–	ग	म
मूऽ	ऽऽ	र	ख	क्यों	ऽ	दी	ऽ	वा	ऽ	ना	ऽ	है	ऽ	ज	ग
प	प	प	–	पध	नुध	प	ध	ग	म	ग	स	ग	म	ग	म
स	प	ना	ऽ	क्याऽ	ऽऽ	ग	र	वा	ऽ	ना	ऽ	है	ऽ	म	न

मूरख क्यों दीवाना है ?

अन्तरा—

गु	–	गु	गु	गु	–	गु	–	र	–	र	गु	र	गु	स	–
आ	ऽ	ज	खि	ला	ऽ	जो	ऽ	फू	ऽ	ल	व	म	न	में	ऽ
ग	ग	ग	ग	ग	म	गम	पधु	पम	गु	र	गु	स	–	–	–
क	ल	उ	स	को	ऽ	मुऽ	रऽ	ऽऽ	झा	ऽ	ना	है	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	प	प	न	–	न	–	स	–	स	स	स	स	सं	–
आ	ऽ	ज	खि	ली	ऽ	जो	ऽ	धू	ऽ	प	तो	क	ल	को	ऽ
नु	ध	प	प	पध	सनु	ध	प	ग	म	ग	स	ग	म,	ग	म
घ	न	अँ	धि	याऽ	ऽऽ	रा	ऽ	छा	ऽ	ना	ऽ	है	ऽ	म	न

मूरख क्यों दीवाना है ?

—— ——

एक गीत !

एक बात मेरी सुनले ऐ मोक्ष जाने वाले
तू कौन है बता तो किस जा से आने वाले ?
माता पिता व दारा स्वारथ का संग सारा
आखिर करें किनारा अपना समझने वाले ।
जब आ बुढ़ापा घावे कोई न काम आवे
सब देख भी बढ़ावें जग में फँसाने वाले ।
तू कौन कैसे आया क्या संग अपने लाया ?
क्या काम करने आया उठ जाग, जाने वाले ।
संसार है विनश्वर दुखकारि है यह कस्बर
देखे दुखी मैं अक्सर सेठी कहाने वाले ।
है धर्म मोक्ष दाता सर्वांगि सुख भाता
तुमको 'अमर' बताता कर मुक्ति जाने वाले ।

एक बात मेरी सुनले········!

ताल—कहरवा (मध्यलय)

स्थायी—															
														प	ग
×				×				×				×		प	ध
स	–	–	–	प	नृ	–	म	ग	म	ग	–	–	–	म	प
बा		ऽ	ऽ	त	मे	ऽ	री	सु	न	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ऐ	ऽ

म	ग	म	ग	र	स	–	र	न	–	स	–	–	–	र	ग
मो	ऽ	ऽ	ऽ	क्ष	जा	ऽ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	तू	ऽ
स	–	–	–	प	न	–	स	र	म	ग	–	–	–	म	प
कौ	ऽ	ऽ	ऽ	न	है	ऽ	ब	ता	ऽ	तो	ऽ	ऽ	ऽ	कि	स
म	ग	म	ग	र	स	–	र	न	–	स	–	–	–	र	ग
जा	ऽ	ऽ	ऽ	से	आ	ऽ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ए	क

वात मेरी सुनले ऐ मोक्ष जाने वाले (इस पक्ति को दुहराइये)

अन्तरा—

														ग	म
														मा	ऽ
प	–	–	–	प	प	–	म	पध	न	ध	प	–	–	प	प
ता	ऽ	ऽ	ऽ	पि	ता	ऽ	व	दाऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	स्वा	ऽ
म	ग	–	–	ग	म	–	प	ग	र	स	–	–	–	र	ग
र	थ	ऽ	ऽ	का	स	ऽ	ग	सा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ
स–	–	–	–	प	न	–	स	र	म	ग	–	–	–	म	प
खिर	ऽ	ऽ	ऽ	क	रें	ऽ	कि	ना	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	अ	प
म	ग	म	ग	र	स	–	र	न	–	स	–	–	–	र	ग
ना	ऽ	ऽ	ऽ	स	म	झ	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ए	क

वात मेरी सुनले · ।

यह गीत अपने मध्यम को षड्ज मान कर गाइये ।

———

क्या करना है ?

पाया नर जन्म नफ़ा खूब कमा ले तू तो
ख्वाबे ग़फ़लत से ज़रा खुद को जगा ले तू तो ।
द्वेष की होली में जलता है ज़माना तो जले
प्रेम सागर की हिलोरों में नहा ले तू तो ॥
और करता या नहीं तुझको पड़ी क्या इससे
दीन दुखिया को मिल हाथों उठाले तू तो ।
घोर संकट में अगर भागने लगें सब साथी
क्या है परवाह अटल पाँव जमाले तू तो ॥
दोष कितनी ही कोई क्यों न लगाए तुझको
मन्द चलते में भलाई का ध्वजा ले तू तो ।
झूँठे झगड़े हैं 'अमर' दुनियाँ के तू क्या लेगा
यह भी अच्छा है, यहीं जग से कहा ले तू तो ॥

—•—

पाया नर जन्म नफ़ा........ !

स्थायी (दादरा) मध्यलय									।		प
			×						×		पा
प	म	स	र	–	स	स	ध	–	ध	प	प
पा	न	र	ज	ऽ	न्म	न	फ़ा	ऽ	खू	ऽ	ब

ध	ध	प	पध	न	धन	स	ध	–	प	–	ध
क	मा	ऽ	लेऽ	ऽ	तूऽ	ऽ	तो	ऽ	ऽ	ऽ	ख्वा
प	ग	स	र	र	स	स	स	–	स	ध	ध
बे	ग	फ	ल	त	से	ज	रा	ऽ	खु	द	को
ध	ध	प	पध	न	धन	स	ध	–	प	–	ध
ज	गा	ऽ	लेऽ	ऽ	तूऽ	ऽ	तो	ऽ	ऽ	ऽ	पा

या नर जन्म नफा खूब कमा ले तू तो।

				अन्तरा—							स
											है
स	स	ध	स	–	न	र	स	–	न	–	न
प	की	ऽ	हो	ऽ	ली	में	ज	ल	ता	ऽ	है
र	र	–	नर	ग	न	र	स	–	न ध	प	ध
ज	मा	ऽ	नाऽ	ऽ	तो	ज	ले	ऽ	ऽ	ऽ	प्रे
प	ग	स	र	र	स	स	स	–	स	ध	ध
म	सा	ऽ	ग	र	फी	हि	लो	ऽ	रो	ऽ	में
ध	ध	प	पध	न	धन	स	ध	–	प	–	ध
न	हा	ऽ	लेऽ	ऽ	तूऽ	ऽ	तो	ऽ	ऽ	ऽ	पा

या नर जन्म नफा खूब कमाले तू तो, ख्वाबे गफलत से जरा खुद को जगाले तू तो।
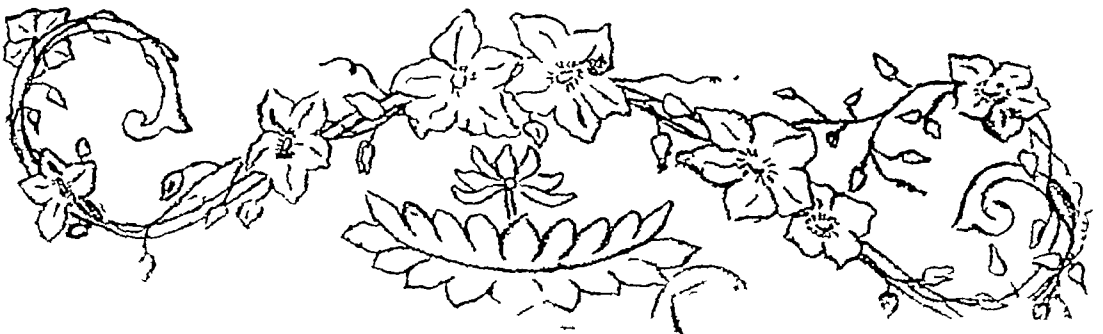
मन की कुलाटें !

समझ मन ! मत ना हो शैतान !

होली बहुत मान बस अब तो मतना ज्यादा तान !

मैं सत्संगति करके करना चाहत निज कल्याण ।

लेकिन हो बैठे कुजोग के संग तू बेईमान

मैं चाहूँ बस सेवक बनके सबका करूँ सम्मान ॥

लेकिन तू मुझसे करवाता हा उलटा अपमान

मैं भूखे नंगों को करना चाहूँ कुछ धन–दान ।

लेकिन तू कौड़ी–कौड़ी पर मुझे करे कुर्बान

मैं समता से करना चाहूँ अपने दिन गुजरान ॥

लेकिन लगा उपाधी नित नव तू करता हैरान

मैं निश्चल एकान्त बैठकर सुमरूँ अब भगवान् ।

पिण्ड छूटे, तब सब कामों का करके मेल मिलान

तू मेरा संगी साथी है तुझे चाहिये ध्यान ॥

आज काज अपनी करनी से छोड़ दे जलदी बान

'अमर चन्द्र' गुरुदेव कृपा से लीना योग महान ।

अब तो रहना दूर अन्यथा कर दूँगा अवसान !

—•—

समझ मन मत ना हो.......... !

राग गौड़ मल्हार (त्रिताल) मध्यलय

				स्थायी											ग
२				०				३				×			म
म	प	म	ग	रे	ग	रे	म	ग	रे	स	–	रे	ग	रे	ग
स	मझ	म	न	म	त	ना	ऽ	हो	ऽ	शै	ऽ	ता	ऽ	न	स

म	प	म	ग	र	–	प	म	प	प	म	प	ध	स	ध	'प
म	भ्क	म	न	हो	ऽ	ली	ऽ	ब	हु	त	मा	ऽ	न	ब	स
म	प	म	ग	न	न	स	–	ध	नु	प	–	मप	धसं	ध	प
अ	ब	तो	ऽ	म	त	ना	ऽ	ज्या	ऽ	दा	ऽ	ताऽ	ऽऽ	न	स

मझ मन मत ना हो शैतान ।

अन्तरा—

प	–	प	प	न	ध	न	न	स	स	स	–	स	र	स	–
मैं	ऽ	स	त्	स	ऽ	ग	ति	क	र	के	ऽ	क	र	ना	ऽ
स	–	ध	ध	स	स	स	–	स	र	स	–	ध	नु	प	–
वा	ऽ	ह	त	नि	ज	क	ऽ	ल्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ
म	र	प	म	प	–	म	प	ध	स	ध	प	म	प	म	र
ले	ऽ	कि	न	ले	ऽ	दौ	ऽ	ड़े	ऽ	डु	र	ज	न	के	ऽ
स	स	स	–	ध	नु	प	–	मप	धस	ध	प	म	प	म	ग
झ	ट	तू	ऽ	वे	ऽ	ई	ऽ	माऽ	ऽऽ	न	स	म	झ	म	न

मत ना हो शैतान ।

———

जुल्मी मन !

क्या-क्या जुल्म करे मन मीत इस तन मिट्टी पर इतरा कर (ध्रुव)
बैठे सत की खोल दुकान बोल झूँठ महा तूफान।
ग्राहक ठग ले भ्रष्ट अनजान खोटा माल खरा बतला कर॥
लेकर मोटा पोतदार जाली काढ़ चले बाज़ार।
करता बिन कारण तकरार, सौ-सौ झूँठे दोष लगा कर॥
छाया घन यौवन अन्धकार सूझे कुछ भी नहीं विचार।
छूटे मांड सरे दरबार, नाचत वेश्या मित्र बना कर॥
खाता मांस दया संहार, बन में खेले आप शिकार।
करता भारी अत्याचार बकरा रस्सा पर लपका कर॥
बूढ़ा बैल बना लाचार, फिर भी मरा न काम विकार।
बांधे मौड़ पड़ो धिक्कार थोथी झन-झन-झन बरसा कर॥
करले परम पिता का जाप जिससे नष्ट होय भव ताप।
अच्छी नहीं पाप की छाप कहता अमर सही समझा कर॥

—•—

क्या-क्या जुल्म करे...... .... !

स्थायी (कहरवा)

×				0				×							
स	-	स	ग	स	र	र	स	र	-	म	म	ग	-	-	ग
क्या	ऽ	क्या		जु	ऽ	ल्म	क	रे	ऽ	म	न	मी	ऽ	ऽ	त

र	ग़	म	प	र	–	र	–	ग़	र	स	न	स	–	स	स
इ	स	त	न	मि	ऽ	ट्टी	ऽ	प	र	इ	त	रा	ऽ	क	र

अन्तरा—

स	–	स	–	र	र	र	–	म	–	म	म	प	–	–	प
बैं	ऽ	ठे	ऽ	स	त	की	ऽ	खो	ऽ	ल	ड़ु	का	ऽ	ऽ	न
प	–	प	–	म	–	म	म	प	ध	प	म	ग़	–	–	ग़
घो	ऽ	ले	ऽ	झूँ	ऽ	ठ	म	हा	ऽ	तू	ऽ	फा	ऽ	ऽ	न
र	ग़	स	न	स	र	र	स	र	र	म	म	ग़	–	–	ग़
ग्रा	ऽ	ह	क	ठ	ग	ले	ऽ	झ	ट	अ	न	जा	ऽ	ऽ	न
र	ग़	म	प	र	–	र	र	ग़	र	स	न	स	–	स	स
खो	ऽ	टा	ऽ	मा	ऽ	ल	ख	रा	ऽ	ध	त	ला	ऽ	क	र

क्या-क्या जुल्म करे मन मीत इस तन मिट्टी पर इतरा कर।
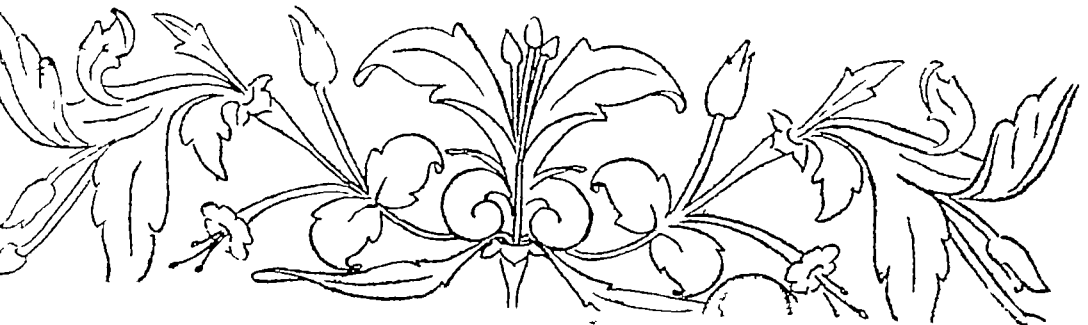
———

व्यर्थ जीवन !

गज़ब करते हो ऐ भाई वृथा जीवन गँवाते हो
नहीं कुछ सोचते दिल में थोड़ी आफ़त उठाते हो।
किसी पुण्याई के बल से मिला है जन्म नर तुमको
विषय भोगादि में फँसकर क्यों सिन्धु में डुबाते हो॥
ज़रासी जिह्वागामी पर तुले हो क्यों दिखाते तुम
मज़ा कुछ देर रह क्यों दीन जीवों को सताते हो!
दिखा गर्दन विकल मुँह कर महा वैराग्य में आकर,
बड़ा अफ़सोस सिखा तुम सदा सबको सुनाते हो॥
दयामय धर्म उत्तम है गहो इसको मेरे मित्रो
तजो यह दुर्मती मारग 'अमर' तुम जिसको जाते हो।

गज़ब करते हो..............!

ताल कहरवा—

स्थायी—

•				×				•				×			गु प
म	प्	ग	स	स	र	र	म	(ग)	र	स	ध्	स	-	-	प
ग़	ज़	ब	र	ते	ऽ	हो	ऽ	ऐ	ऽ	भा	ऽ	ई	ऽ	ऽ	वृ
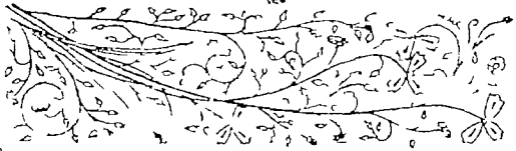
प	नु	ध	प	गु-	–	–	र	रगु	मगु	र	गु	स	–	–	प
था	ऽ	जी	व	वन	ऽ	ऽ	गॅ	वाऽ	ऽऽ	ते	ऽ	हो	ऽ	ऽ	न
ध	नु	स	(स)	*	नु	र	स	नु	ध	प	प	पध	नु	–	ध
हीं	ऽ	क	छु	*	सो	ऽ	च	ते	ऽ	दि	ल	मेंऽ	ऽ	ऽ	यों
प	म	गु	र	*	र	र	र	रग	म	गु	र	स	–	–	न
ही	ऽ	आ	ऽ	*	फ	त	उ	ठाऽ	ऽ	ते	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ग
							अन्तरा—								प
															कि
प	–	प	प	*	प	–	ध	नु	–	ध	नु	स	–	–	स
सी	ऽ	पु	रु	*	पा	ऽ	र्थं	के	ऽ	व	ल	से	ऽ	ऽ	मि
नु	–	ध	ध	*	ध	–	नु	स	स	नु	ध	प	–	–	प
ला	ऽ	है	ऽ	*	ज	ऽ	न्म	न	र	तु	म	को	ऽ	ऽ	वि
ध	नु	र	–	–	स	–	नु	ध	प	म	गु	र	–	–	गु
प	य	भो	ऽ	ऽ	गा	ऽ	दि	मैं	ऽ	फॅ	स	के	ऽ	ऽ	क्यों
र	गु	स	र	*	र	–	र	रग	म	गु	र	स	–	–	ऩ
सि	ऽ	न्धू	ऽ	*	में	ऽ	डु	बाऽ	ऽ	ते	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ग

जब करते ।
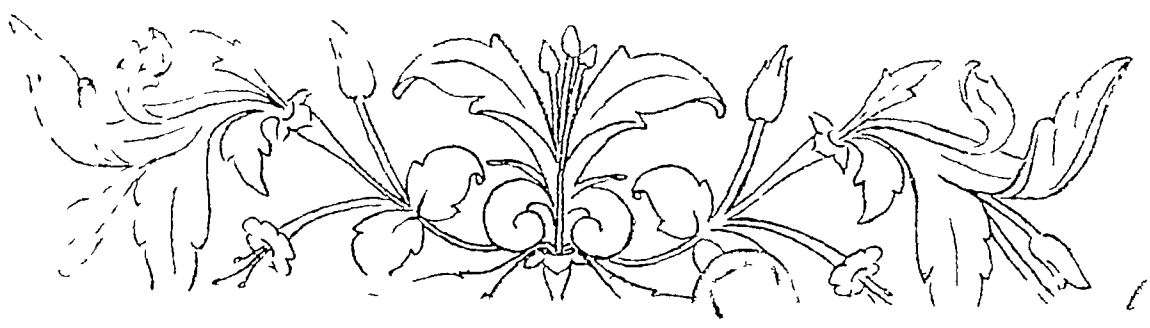
प्यार का ज़माना है।

सबसे करिये प्यार प्यार प्यार का ज़माना है।
शुद्ध प्रेम में दिव्य शक्ति जिसका कछु ना पार,
प्रेमी के वश में होता है सारा ही संसार
वीर का यह फ़र्माना है!
पशुओं में देखा जाता है प्रेमांकुर सुखकार
प्रेम नहीं है जिनके दिल में वे कैसे नरनार?
निन्द्य का जनम बिताना है!
द्वेष भाव न रखो किसी से द्वेष महा दुखकार,
बिना प्रेम के मिटे न हर्गिज़ भीषण पापाचार
बैर से बैर बढ़ाना है!
दूध और पानी से सीखो करना सच्चा प्यार
भेद-भाव रहा नहीं कुछ भी सहते सुख दुखकार
विपत में प्रेम निभाना है।
स्वार्थ रहित निष्पाप प्रेम ही कहलाता अविकार
'पृथ्वीचंद्र' चरण रज सेवी कहता वीर हि सार
प्रेम से चित्त लगाना है!

—o—

ताल—दादरा (द्रुतलय)

स्थायी—

×			•			×			•		
प	ध़	स	र	प	म	र	म	ग	र	स	र
स	ब	से	क	रि	ये	प्या	ऽ	र	प्या	ऽ	र
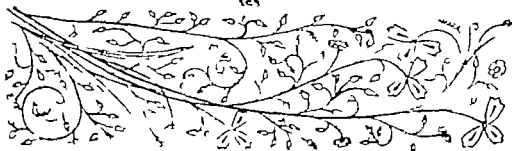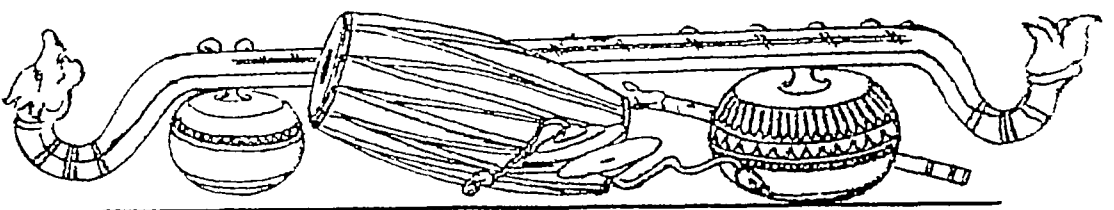
ग	–	र	स	र	स	ध	न	स	र	ग	म
प्या	ऽ	र	का	ऽ	ज	मा	ऽ	ना	ऽ	है	ऽ
ध	न	स	र	ग	म						
स	ब	से	क	रि	ये	प्यार		।			

अन्तरा—

ध	ध	ध	न	प	–	ध	न	ध	न	स	–
शु	द्ध	प्रे	म	में	ऽ	दि	व्य	ऽ	श	क्ति	ऽ
न-	र	स	न	स	न	प	ध	न	ध	न	स
जिस	का	क	छू	ऽ	ना	पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
गं	गं	–	र	स	र	न	ध	प	ध	स	स
प्रे	मी	ऽ·	के	व	श	में	हो	ऽ	ता	है	ऽ
न	र	स	न	प	ध	न	–	–	ध	–	–
सा	रा	ही	ऽ	स	ऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
न	ध	प	म	ग	म	र	म	ग	र	स	र
वी	र	का	ये	फ	र	मा	ना	ऽ	है	ऽ	ऽ
ध	न	स	र	ग	म						
स	ब	से	क	रि	ये	प्यार····		।			

(स्थायी की पक्तियों को फिर इसके बाद कहिए)

नोट—शेष अन्तरों में भी इसी प्रकार स्थाई और अन्तरे का समन्वय होगा।

कलयुगी मित्र !

ज़माने हाल ने कैसा भयंकर फेर खाया है
जहां में मित्रता के नाम पर अन्धेर छाया है।
जहां कौड़ी भवानी की कमाकर हो तिजोरी में
वहीं झट मित्र दल ने कूद दृढ़ आसन जमाया है।
पड़ी जब आफ़तें भारी फँसा हत भाग्य गर्दिश में
कमी के पार सब भागे न ढूँढ़े खोज पाया है।
सुबह बाज़ार में घूमें परस्पर हाथ गल बाहें,
दुपहरी में जो बिगड़ी शाम को वारंट आया है।
ज़रा भी गुम कोई बात गर मित्र मित्र की परखे
करें बदनाम खुल्ला खेल गलियों में नचाया है।
भलाई ऐसे मित्रों से 'अमर' क्या लाभ होवेगी
बसा मन में कि जिनके रात्रि दिन सा भेद पाया है।

ताल—परतो

स्थायी—													मं
०		३		×			२		३				सं
मं	प	प	-	ध	नु	ध	मं	-	प	-	म	-	ग
मा	_	मे	ऽ	हा	ऽ	ल	न	ऽ	कै	ऽ	मा	ऽ	म

न	–	स	स	र	–	र	मं	–	मं	–	प	–	प
य	ऽ	क	र	फे	ऽ	र	खा	ऽ	या	ऽ	है	ऽ	ज
ध	नु	ध	प	मं	–	प	म	–	र	–	न	–	स
हां	ऽ	में	ऽ	मि	ऽ	त्र	ता	ऽ	के	ऽ	ना	ऽ	म
स	स	स	–	र	–	र	मं	–	मं	–	प	–	मं
प	र	श्र	ऽ	धे	ऽ	र	छा	ऽ	या	ऽ	है	ऽ	ज

माने हाल ने कैसा ...... ।

अन्तरा—

	प
	ज

मं	प	प	–	ध	–	स	स	–	स	–	र	म	र
हा	ऽ	चा	ऽ	दी	ऽ	भ	वा	ऽ	नी	ऽ	की	ऽ	छ
स	–	रं	र	र	–	स	ध	–	ध	–	प	–	प
ना	ऽ	छ	न	हो	ऽ	ति	जो	ऽ	री	ऽ	में	ऽ	व
मं	–	प	प	ध	नु	ध	मं	मं	प	–	म	–	र
हा	ऽ	झ	ट	मि	ऽ	त्र	द	ल	ने	ऽ	कु	ऽ	द
न	न	स	–	र	र	र	मं	–	मं	–	प	–	मं
ह	ढ़	श्रा	ऽ	स	न	ज	मा	ऽ	या	ऽ	है	ऽ	ज

माने हाल ने कैसा ...... ।

भक्त कैसा हो ?

जन जन सूरज यों भगत भगवान का
कर, कर सूरज यों करम कल्याण का ।
मत ना जुलम से पैसा कमावे पैसा कमावे पैसा कमावे
प्रभु कीर्ति का काम, नहीं धनवान का ॥
मत ना किसी को दुख पहुँचावे दुख पहुँचावे दुख पहुँचावे
सबको समझ समान भक्त न हो कृपाण का ।
पर दुख को दुख अपना समझ ले अपना समझ ले अपना समझ ले
निज दुख को सुख मान, हितकार हो जहान का ॥
गुणी जनों का कर तू हमेशा कर तू हमेशा कर तू हमेशा
शुद्ध मन से गुण गान भूखा न हो तू मान का ।
भोगों से भिन्न चित्त हटाकर, चित्त हटाकर चित्त हटाकर
निज आतम पहिचान पुजारी बन ज्ञान का ॥
'अमर' अमर हो पक्का भगत बन पक्का भगत बन पक्का भगत बन
निकसा निराली शान वासी हो प्रभु स्थान का ।
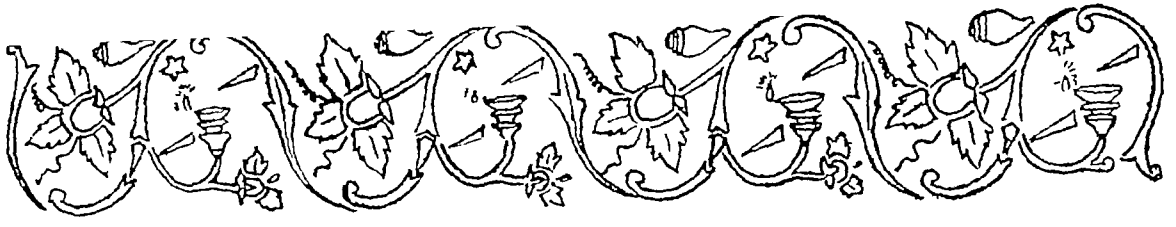
बन, बन मूरख यों भगत भगवान का

स्थायी (कहरवा)

+				o				+				o			
र	र	र	र	र	स	र	ग	स	–	–	ग	र	स	न	ध
व	न	व	न	मू	ऽ	र	ख	यों	ऽ	ऽ	भ	ग	त	भ	
न	–र	स	–	र	र	र	र	र	स	र	ग	स	–	–	ग
वा	ऽन	का	ऽ	क	र	क	र	मू	ऽ	र	ख	यों	ऽ	ऽ	क
र	स	न	ध	न	–र	स	–								
र	म	क	ऽ	ल्या	ऽण	का	ऽ								

अन्तरा—

*	ग	प	प	धन	नध	न	स	*	न	ध	प	पन	धन	प	मं
*	मत	ना	जु	लऽ	मऽ	से	ऽ	*	पै	सा	क	माऽ	ऽऽ	वे	ऽ
ग	ग	प	प	धन	नध	न	स	*	न	ध	प	पन	धन	प	–
ऽ	पै	सा	क	माऽ	ऽऽ	वे	ऽ	*	पै	सा	क	माऽ	ऽऽ	वे	ऽ
*	ग	ग	ग	ग	र	ग	म	र	–	–	न	स	गर	न	ध
*	प्रभु	दी	ऽ	नों	ऽ	का	ऽ	जा	ऽ	न	न	हीं	ऽऽ	ध	न
न	–र	स	–												
वा	ऽन	का	ऽ												

बन, बन मूरख यों भगत भगवान का।
कर, कर मूरख यों करम कल्याण का॥
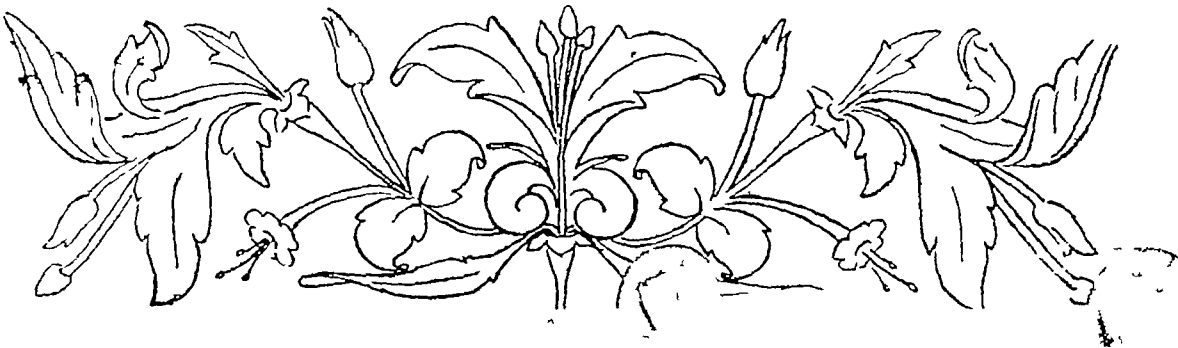
दिन दश का मेला !

जगत में धरा क्या है दिन दश का मेला
समझ ले ये मान है झूठा झमेला।
किये पाप लाखों न शर्माया बिलकुल
चलेगा कहाँ पाप का भार ठेला ?
घना क्यों है माया का घेरा भिखारी
न परलोक में साथ जावे अधेला।
जुटा है यहाँ सुख में परिवार प्रेमी
घिरा गर दुखों से तो होगा अकेला।
कहा किसने दुनियाँ में आराम पाया
जिसे देखा उसने सदा दुख ही झेला।
भलाई 'अमर' करले बन से भला तू
न खो जन्म नर का यह है स्वर्ण बेला।

—•—

जगत में धरा क्या है ++++ ++ + !

(राग यमन कल्याण मिश्र) ताल झपताल

स्थायी—									स
x		२			०		३		ज
म	र	ग	–	र	म	र	स	–	स
ग	त	में	ऽ	ध	रा	ऽ	क्या	ऽ	है

न	ध	न	न	र	ग	म	ग	र	स
दि	न	द्	श	का	मे	ऽ	ला	ऽ	स
ग	मं	प	–	प	ध	–	प	–	प
म	झ	ले	ऽ	ये	मा	ऽ	रा	ऽ	है
न	–	प	–	र	ग	म	ग	र	स
भ्रू	ऽ	ठा	ऽ	भ	मे	ऽ	ला	ऽ	ज

गत में ।

अन्तरा--									प
									कि
प	ग	मं	–	ध	स	–	स	–	स
ये	ऽ	पा	ऽ	प	ला	ऽ	खों	ऽ	न
न	र	ग	–	र	न	र	स	स	ग
श	ऽ	र्मा	ऽ	या	वि	ल	कु	ल	च
ग	र	स	–	र	न	ध	प	–	प
ले	ऽ	गा	ऽ	क	हा	ऽ	पा	ऽ	प
न	–	प	–	र	ग	म	ग	र	स
का	ऽ	ला	ऽ	द	टे	ऽ	ला	ऽ	ज

गत में ।

धरम बिन बावरे !

धरम बिन बावरे रे तूने नर भव व्यर्थ गमाया !

जोर जुल्म करके जो तूने यह धन नीच कमाया
यम गढ़े में ले डारेगा सोच समझ न माया ।

जिन्ह खान पान से आ तें पुष्ट करी यह काया
सबसे पहिले उत्तर देगी बन बादल की छाया ।

रावण से बलशाली होगये जिनका डर जग छाया
लेकिन काल बली ने उनको पल में मार गिराया ।

तू फिर किस बल में है किसन तुझे मूर्ख बहकाया ?
दुखियों को दुखिया कर तूने पाप का कुम्भ भराया ।

यह संसार असार सार नहिं इसमें कुछ भी पाया
इस बिध से संग्रह करके धर्म ही सार बताया ।

धर्म बिना निस्तार नहीं होता यह प्रभु ने फर्माया
'पृथ्वीचन्द्र' गुरु कहैं समझ क्यों विषयों बिच भुमाया ?
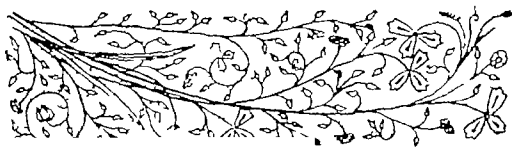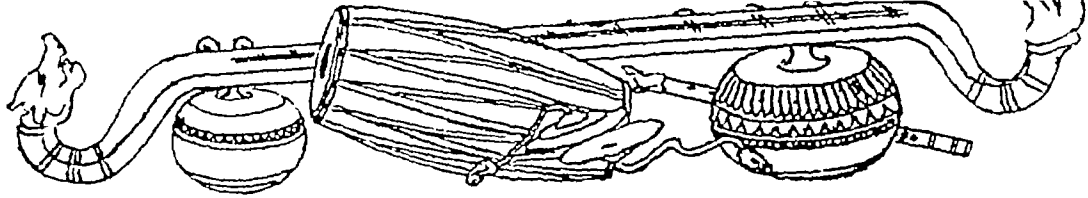
धरम बिन बावरे

(राग—आसावरी, भैरव, कालिंगडा मिश्र)

स्थायी, त्रिताल (मध्यलय)

०				३				×				२			
म	म	प	स	धु	प	धु	म	प	—	—	—	—	—	ध	म
ध	र	म	बि	न	बा	ऽ	व	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	तै	ने
र	म	धु	प	गु	—	र	स	र	नु	स	—	—	—	—	—
न	र	भ	व	व्य	ऽ	र्थ	गॅ	वा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
							अन्तरा—								
धु	—	धु	धु	प	धु	म	प	ग	—	म	ग	रे	—	स	—
जो	ऽ	र	जु	ल	म	क	र	के	ऽ	जो	ऽ	तू	ऽ	ने	ऽ
स	र	म	म	प	—	प	स	धु	—	प	—	—	—	—	—
य	ह	ध	न	नी	ऽ	च	क	मा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	धु	प	धु	न	न	स	—	स	रे	स	रे	न	—	स	—
अ	ऽ	न्त	न	र	क	में	ऽ	ले	ऽ	डा	ऽ	रे	ऽ	गा	ऽ
धु	—	धु	धु	धु	धु	प	धु	म	धु	प	—	—	—	धु	म
सो	ऽ	च	स	म	झ	ले	ऽ	भा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	तै	ने
र	म	धु	प	गु	—	र	स	र	नु	स	—	—	—	—	—
न	र	भ	व	व्य	ऽ	र्थ	गॅ	वा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अन्तरे पहले अन्तरे के समान ही हैं।

पाप का फल !

पाप-फल हर्गिज़ न खाली जायगा
वक्त आने पर गज़ब रँग लायगा।

क्या जवानी के नशे में भूलता
चाम के मृदु रंग पर क्या फूलता।
फूल सा सौन्दर्य सब मुरझायगा॥

स्वार्थ वश परिवार का मेला लगा
कष्ट में साथी सभी देंगे दगा।
आके फिर कोई न मुख दिखलायगा॥

मौत सर पर एक दिन मँडरायगी
ताकृत दुनियाँ की सब चकरायगी।
ताकृता तन खाक में मिल जायगा॥

दैत्य पति रावण तड़प कर मर गया
अपने पापों का मज़ा वह चख गया।
बाग बदफ़ेली का ना सरसायगा॥

पाप की बदबू कभी छिपती नहीं
आग रूई में कभी दबती नहीं।
ढोल अपयश का खुला पिट जायगा॥

धर्म ही जग में 'अमर' इक सार है
ज़िन्दगी इसके बिना निस्सार है।
साथ परभव में यही बस जायगा॥

स्थायी (ताल दीपा) मध्यलय

×	२	३	×	२	३
सं - ग	रें रें	सं मं	ग ग ध	प ध	म -
पा ऽ प	फ ल	ह र	गि ज़ न	खा ऽ	ली ऽ

प	–	न॒	ध॒	–	प	–	स	–	र	ग॒	–	प	–
जा	ऽ	य	गा	ऽ	ऽ	ऽ	व	ऽ	क्त	आ	ऽ	ने	ऽ
ध॒	ध॒	प	म	म	ग॒	ग॒	र	–	ग॒	म	–	स	–
प	र	ग	ज	व	ॅ	ग	ला	ऽ	य	गा	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

ग	–	प	ग	स	प	–	न	–	र	न	ध	म	–
क्या	ऽ	ज	वा	ऽ	नी	ऽ	क	ऽ	न	शे	ऽ	में	ऽ
प	–	न॒	ध	–	प	–	प	–	ध	न॒	र	र	र
फू	ऽ	ल	ता	ऽ	ऽ	ऽ	चा	ऽ	म	के	ऽ	मृ	दु
स	–	न॒	ध	प	ग॒	–	र	–	ग॒	म	–	स	–
र	ऽ	ग	प	र	क्या	ऽ	फ़	ऽ	ल	ता	ऽ	ऽ	ऽ
स	–	न॒	र	र	स	–	न॒	–	ध	प	ध	म	म
फ़	ऽ	ल	सा	ऽ	साँ	ऽ	द	ऽ	र्थ	भ	ट	मु	र
प	–	न॒	ध॒	–	प	–	स	–	र	ग॒	–	प	प
भा	ऽ	य	गा	ऽ	ऽ	ऽ	पा	ऽ	प	कृ	त	ह	र

गिज न खाली जायगा।

पतन !

सदा के हँसने वाले अब सतत आँसू बहाते हैं
पशु से भी गया बीता अधम जीवन बिताते हैं।
तरसते थे कभी सुर भी कि लेवें जन्म भारत में
यहाँ आने से अब तो नारकी भी जी चुराते हैं।
हमारे शिष्य बन बन के विदेशी सभ्यता सीखे
हमें वे आज बर्बर अर्ध सभ्यों में गिनाते हैं।
कभी दिग अन्त गूँजे थे हमारे युद्ध नादों से
अँधेरे में खिसकते गीदड़ों से थर-थराते हैं।
दुखी को देख रो पड़ते हृदय से थे लगा लेते
अकारण आज दुखियों को हमीं हँस-हँस सताते हैं।
हमारे ज्ञान सूरज की जगत में ज्योति फैली थी
हमें अब गैर वाली अ-आ इ-ई पढ़ाते हैं।
वसन भोजन हमारे से कभी संसार पाता था
बुभुक्षित नग्न अब तो रात-दिन रोते बिताते हैं।
सदाचारी तपस्वी थे कि मात इन्द्र दधीच को
'अमर' अब तो अहर्निश पाप-पथ की ओर जाते हैं।

—•—

सदा के हँसने वाले··· ·· ··· !

राग—खमाज

					स्थायी—										ध
•				×				•				×			स
न	सं	सं	-	•	ध	म	ग	ध	-	प	-	•	म	ध	प
वा	ऽ	के	ऽ	•	हँ	स	ने	वा	ऽ	ले	ऽ	•	अ	ब	स

म	म	ग	-	*	म	–	ध	न	न	स	रे	स	–	–	न
त	न	आ	ऽ	*	स	ऽ	र	हा	ऽ	ते	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	प
ध	स	स	–	*	ध	स	न	ध	-	प	–	म	–	–	ध
शू	ऽ	से	ऽ	*	भाँ	ऽ	ग	या	ऽ	थी	ऽ	ता	ऽ	ऽ	अ
प	म	ग	–	*	म	म	ध	न	-	स	रे	स	–	–	न
व	म	जी	ऽ		व	न	नि	ता	ऽ	ने	ऽ	है	ऽ	ऽ	स

दा ऽ के ऽ हँसने वाले ।

अन्तरा——

न	स	स	गु	–	सर	गुंग	स	स	न	ध	प	*	म	–	प
															न
															त
र	स	ने	ऽ	ऽ	थेऽ	ऽऽ	क	की	ऽ	सु	र	*	भी	*	कि
म	–	ग	–	*	म	–	ध	न	न	स	रे	स	–	–	स
ले	ऽ	वें	ऽ	*	ज	ऽ	न्म	भा	ऽ	र	त	में	ऽ	ऽ	व
ध	स	स	-	*	ध	स	न	ध	ध	प	–	*	म	–	ध
हा	ऽ	आ	ऽ	*	ने	ऽ	से	अ	व	नो	ऽ	*	ना	ऽ	र
प	म	ग	–	*	म	–	ध	न	न	स	रे	स	–	–	न
की	ऽ	भी	ऽ	*	जी	ऽ	चु	रा	ऽ	ते	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	स

दा ऽ के ऽ ।

* ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	प	ध॒	न॒	न॒	ध॒	प	–	मं	–	प	–	
* औ	र	म	नो	ऽ	ह	र	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	
* प	प	ध॒	न॒	न॒	स	स	न॒	र	स	न॒	स	न॒	ध॒	प	
* प्या	र	क	रँ	ऽ	स	व	स्वा	ऽ	र्थ	पू	ऽ	र्ति	से	ऽ	
न॒	न॒	ध॒	प	म	ग॒	र	–	स	–	–	–	(र)	–	(ग॒)	–
वि	न	म	त	ल	व	खूँ	ऽ	खा	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	गप	म	ग॒	र	र	र	ग॒	म	स	–	–	–	–	–	–
ऽ	विन	म	त	ल	व	खूँ	ऽ	खा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ

अन्तरा—

* ध॒	ध॒	म	ध॒	ध॒	न॒	न॒	स	स	–	न॒	स	स	स	–
* सु	ख	में	स	ध	ज	न	क	रं	ऽ	प्रे	ऽ	म	से	ऽ
* रे॒	रे॒	रे	स	न	स	रे॒	स	–	–	–	–	–	–	–
* हा	ऽ	हां	जी	ऽ	जी	ऽ	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ
* ग॒	गं॒	गं॒	स	गं॒	रे॒	स	न॒	रे॒	न॒	–	प	न॒	ध॒	प
* क	प्र	प	ड़े	ऽ	स	व	हो	ऽ	ते	ऽ	न्या	ऽ	रे	ऽ

न॒	न॒	ध॒	प	म	ग॒	र	र	स	–	–	स	(र)	–	(ग॒)	–
दे	ऽ	क	र	व	हु	अ	धि	का	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	ग॒	प	म	ग॒	र	र	ग॒	म	स	–	–	–	–	–	–
ऽ	दे	क	र	व	हु	अ	धि	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ

नोट—शेष अन्तरे इसी प्रकार बजेंगे।

क्षण भंगुरता !

भीम जैसे बली फेंके नभ में गजेन्द्र वृन्द
पार्थ जैसे तपस्वी कीर्ति जग जानी है।
राम कृष्ण जैसे नर पुरुष जगत पति
रावण की दैत्यता भी किसी से न छानी है।
काल के न आगे चली कुछ भी बहाना बाजी
छिनक में क्षार हुए रह गयी कहानी है॥
तेरे जैसे कीटाकार मनुज की बिसात क्या है
करले सुकृत चार दिन की जिन्दगानी है।

१

—•—

भीम जैसे बली फेंकें · ···· ··।

राग—खमाज, ताल—दादरा (मध्यलय)

स्थायी—

+			•			+					
स	स	स	ग	–	म	म	म	–	प	–	प
भी	ऽ	म	ज	ऽ	से	ब	ली	ऽ	फें	ऽ	के

स	स	न॒	ध	ध	म	प	ध	म	ग	–	ग
न	भ	में	ऽ	ग	ऽ	गे	ऽ	न्द्र	वृ	ऽ	न्द
न	–	न	स	–	न	स	–	स	प	–	ध
पा	ऽ	र्थे	जै	ऽ	से	स	ऽ	च्च	वे	ऽ	धी
पध	स	न॒	ध	–	म	गम	पध	म	ग	–	–
कीऽ	ऽ	र्ति	ज	ऽ	ग	जाऽ	ऽऽ	नी	है	ऽ	ऽ

अन्तरा—

म	ग	म	न॒	ध	न	स	–	न	स	–	स
रा	ऽ	म	कृ	ऽ	ष्ण	जै	ऽ	से	न	ऽ	र
प	–	न	न	स	स	स	(स)	स	न॒	ध	–
पु	ऽ	ग	व	ऽ	ज	ग	ऽ	त	प	ति	ऽ
स	–	स	ग	–	ग	म	–	म	प	–	ध
रा	ऽ	व	ण	ऽ	की	दै	ऽ	त्य	ता	ऽ	भी
स	स	न॒	ध	–	म	प	ध	म	ग	–	–
कि	सी	ऽ	से	ऽ	न	छा	ऽ	नी	है	ऽ	ऽ

ज़ुल्म !
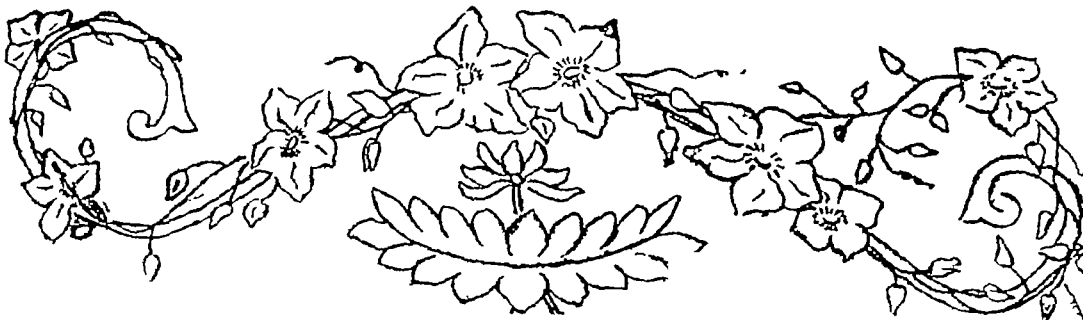
ज़ुल्मगर ! मत ज़ुल्म पर बाँधे कमर
आखिरी अच्छा नहीं होगा समर ।
बेकसों का दिल दुखाना है गुनाह
रख प्राणी मात्र की दिल में क़दर ॥
एक डंडे से सभी को हाँक मत
न्याय और अन्याय की कुछ रख खबर ।
भूखों मरना है भला नहीं ज़ुल्म से
माल ताज़ा खा-खा भर लेना उदर ॥
कौरवों का देख कितना ज़ोर था
आज ढूँढे भी नहीं आते नज़र ।
कर भलाई तज बुराई सर्वथा
गर 'अमर' होना तुझे जग में अमर ॥

जुल्मगार ! मत जुल्म कर.....!
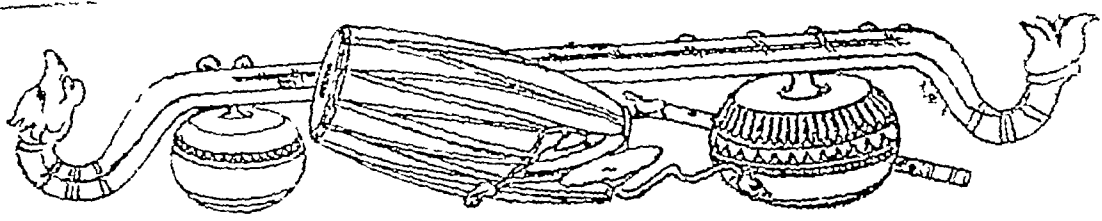
स्थायी (कहरवा)

×				०				×				०			
*	मं	–	मं	मं	मंध	प	प	*	म	–	ग	र	ग	स	–
*	जु	ऽ	ल्म	गा	रऽ	म	त	*	जु	ऽ	ल्म	प	र	बां	ऽ
*	न	–	स	रग	मंप	गम	रग	*	मं	–	मं	मं	मंध	प	–
*	बे	ऽ	क	मऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽर	*	आ	ऽ	खि	री	ऽऽ	अ	ऽ
*	म	–	ग	र	ग	स	–	*	न	–	स	रग	मंप	गम	रग
*	च्छा	ऽ	न	हीं	ऽ	हो	ऽ	*	गा	ऽ	स	मऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽर

अन्तरा—

*	ध	–	ध	ध	–	ध	न	पध	नस	–	न	ध	न	ध प	–
*	बे	ऽ	क	सों	ऽ	का	ऽ	दिल	ऽऽ	ऽ	दु	खा	ऽ	ना	ऽ
*	ग	–	म	पध	नस	धन	पध	*	मं	–	मं	मं	मंध	प	–
*	है	ऽ	गु	नाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽह	*	रा	ऽ	ख	प्रा	ऽऽ	णी	ऽ
*	म	–	ग	र	ग	स	–	*	न	–	स	रग	मंप	गम	रग
*	मा	ऽ	त्र	की	ऽ	दिल	ऽ	*	में	ऽ	क	दऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽर

आज की दशा !

बह रही, बह रही चल रही हो
पछवा बह रही आज जगत में।
धर्म कर्म घटता जाता है
स्वार्थ दम्भ बढ़ता जाता है।
पाप में दुनियां बस रही हो!
प्रेम स्नेह का नाम फ़ना है
घर घर में कुरु-युद्ध ठना है।
द्वेष की अग्नी जल रही हो!
भीमार्जुन से वीर कहां हैं
मात्र शिखंडी सभी यहां हैं।
मोह में काया गल रही हो!
साधु मंडली निज पथ भूली
संसारी स्वार्थों में झूली।
मोही जनता छल रही हो!
'अमर' सर्वथा तंग हुए हैं
सुख साधन सब भंग हुए हैं।
पाप की खेती फल रही हो!

ताल कहरवा (द्रुत)

स्थायी—

×								×				०			
र	र	स	स	र	र	स	स	ग	ग	म	म	प	–	–	–
ब	ह	र	ही	ब	ह	र	ही	च	ल	र	ही	हो	ऽ	ऽ	ऽ

-, मंध प -	मं मं ग ग	* गम ,ग र	न र स स
ऽ, पछु वा ऽ	च ल र ही	* आऽ ,ज ज	ग तं में ऽ
ससं सग -ग मंमं	प- मं- पप प-	प- पन -घ पप	पप घघ पमं पप
घऽ मंक ऽमं घट	ताऽ जाऽ ताऽ हैऽ	स्वाऽ र्थंद ऽभ घढ	ताऽ जाऽ ताऽ हैऽ
* न न न	धन नंध पमं पप	* पध धप मंग	गमं पप मंध प-
* पा प में	दुऽ निऽ याऽ ऽऽ	* ढल ऽर हीऽ	होऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
- गम -ग र	न र स -		
ऽ ढल ऽर ही	हो ऽ ऽ ऽ	चल रही · · ··· ।	

अन्तरा—

पप पप नन नन	स- सस सस -स	सस गग रर संस	नन नध मंध प-
प्रेम ऽऽ स्नेह काऽ	नाऽ मफ़ नाऽ हैऽ	घर घर मेंऽ कुरु	युऽ द्धठ नाऽ हैऽ
* न न न			
* द्वे ष की	अग्नी जल रही हो " (इस पक्ति को 'पाप में दुनियां "हो'		

इस प्रकार पूरी तरह बजाइये)

आज की दशा!

चल रही, चल रही चल रही हो
पछुवा चल रही आज जगत में।
धर्म कर्म घटता जाता है
स्वार्थ दम्भ बढ़ता जाता है।
पाप में दुनियाँ ढल रही हो!
प्रेम स्नेह का नाम फ़ना है
घर घर में दुख-दुख घना है।
द्वेष की अग्नी जल रही हो!
भीमार्जुन से वीर कहाँ हैं
मात्र शिखंडी सभी यहाँ हैं।
मोम में काया गल रही हो!
साधु महन्त निज पथ भूले
संसारी झगड़ों में झूले।
मोही जनता छल रही हो!
'अमर' सर्वथा तंग हुए हैं
सुख साधन सब भंग हुए हैं।
पाप की खेती फल रही हो!

—•—

ताल कहरवा (द्रुत)

स्थायी—

×				•				×				•			
रे	रे	स	म	रे	रे	स	स	प	ग	मं	मं	प	–	–	–
च	ल	र	ही	च	ल	र	ही	च	ल	र	ही	हो	ऽ	ऽ	ऽ

स	ग	–	म	प	–	प	म	प	नु	ध	प	म	ग	र	स
न	हीं	ऽ	ध	रा	ऽ	फू	ऽ	ल	न	में	ऽ	मू	ऽ	र	ख
र	प	प	ध	म	ग	र	स	र	र	स	–	–	–	–	–
क्या	ऽ	फू	ऽ	ले	ऽ	नि	ज	म	न	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

स	–	स	स	–	स	स	रें	न	–	न	स	न	ध	प	ध
अ	ऽ	ट	स	ऽ	ट	खा	ऽ	पी	ऽ	क	र	क्या	ऽ	क्या	ऽ
ध	र	स	र	न	ध	प	ध	म	ध	प	–	–	–	–	–
श	ऽ	कि	व	ढ़ा	ऽ	वे	ऽ	त	न	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नु	–	नु	नु	नु	–	नु	ध	प	ध	ध	ध	प	–	म	–
आ	ऽ	खि	र	पा	ऽ	नी	ऽ	का	ऽ	प	र	पो	ऽ	टा	ऽ
र	प	प	ध	म	ग	र	स	र	र	स	–	–	–	–	–
वि	न	स	जा	ऽ	य	प	ल	छि	न	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अन्तरे भी इसी प्रकार हैं।

स	ग	–	म	प	–	प	म,	प	नु	ध	प	म	ग	र	स
न	हीं	ऽ	घ	रा	ऽ	फू	ऽ	ल	न	में	ऽ	मू	ऽ	र	ख
र	प	प	ध	म	ग	र	स	र	र	स	–	–	–	–	–
क्या	ऽ	फू	ऽ	ले	ऽ	नि	ज	म	न	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा—

स	–	स	स	–	स	स	रें	न	–	न	स	न	ध	प	ध
अ	ऽ	ट	स	ऽ	ट	खा	ऽ	पी	ऽ	क	र	क्या	ऽ	क्या	ऽ
ध	र	स	र	न	ध	प	ध	म	ध	प	–	–	–	–	–
श	ऽ	कि	ब	ढ़ा	ऽ	वे	ऽ	त	न	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नु	–	नु	नु	नु	–	नु	ध	प	ध	ध	ध	प	–	म	–
आ	ऽ	खि	र	पा	ऽ	नी	ऽ	का	ऽ	प	र	पो	ऽ	टा	ऽ
र	प	प	ध	म	ग	र	स	र	र	स	–	–	–	–	–
बि	न	स	जा	ऽ	य	प	ल	छि	न	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अन्तरे भी इसी प्रकार हैं।

ग	-	म	प	-	ध	न	-	र	स	-	प
ध	ऽ	र्म	औ	ऽ	र	कौ	ऽ	न	है	ऽ	भ
प	र	र	र	-	र	र	गुं	र	स	र	स
ला	ऽ	सु	मे	ऽ	रु	से	ऽ	व	ड़ा	ऽ	म
न	स	न	ध	न	ध	न	-	र	स	-	प
ही	ऽ	इ	औ	ऽ	र	कौ	ऽ	न	है	ऽ	प

मा समान श्रेष्ठ ज्येष्ठ.... ।

अन्तरा—

										स	र
										प	ऽ
ध	स	नु	ध	प	ध	ग	प	म	ग	-	स
मा	ऽ	वि	ना	ऽ	स	म	ऽ	ग्र	उ	ऽ	ग्र
स	म	म	म	ग	म	प	स	नु	ध	-	नु
क	ऽ	र्म	कां	ऽ	ड	व्य	ऽ	र्थ	है	ऽ	ऽ
प	ध	प	म	ग	म	प	स	नु	ध	-	प
क	ऽ	र्म	कां	ऽ	ड	व्य	ऽ	र्थ	है	ऽ	अ
प	गुं	र	र	-	र	र	गुं	रं	स	र	स
भी	ऽ	ष्ट	स्व	ऽ	र्ग	मो	ऽ	च	सौ	ऽ	ख्य
न	स	न	ध	न	ध	न	-	र	स	-	प
दा	ऽ	य	ही	ऽ	स	म	ऽ	र्थ	है	ऽ	प

मा समान श्रेष्ठ ज्येष्ठ ...... ।

ज़रा देखो चेतनवा !

ज़रा देखो चेतनवा विचारी रे।

स्वारथ के सब मित्र तुम्हारे,
मात पिता सुत नारी रे।

यह धन किंचित साथ न जावे
जिसपै धर्म बिसारी रे।

काल बली जब प्राण हरावे
जाना हो लाचारी रे।

किते मनु न किते भीष्म भयंकर,
कहाँ भीम बलकारी रे।

जिनके बल की कथनी अब तक
ठौर-ठौर है जारी रे।

तू फिर कह है किस गिनती में
जावे हाथ पसारी रे।

यह संसार असार जानकर
करो धर्म सुखकारी रे।

धर्म 'अमर' है सब सुखदाता
आगे मरजी तुम्हारी रे।

देखो चेतनवा विचारी रे······।

स्थाई—कहरवा

×				×				×				×			
*	म	म	म	ग–	र	–	र	स	न	नस	र	–	–	स	नृ
*	दे	खो	चे	तन	वा	ऽ	वि	चा	री	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज़	रा
स	र	–	र	र	ग	स	–	*	म	म	म	ग–	र	–	र
दे	खो	ऽ	चे	त	न	वा	ऽ	*	दे	खो	चे	तन	वा	ऽ	वि
स	न	नस	र	–	–	स	नृ	स	र	–	र	र	ग	स	–
चा	री	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज़	रा	दे	खो	ऽ	चे	त	न	वा	ऽ

अन्तरा—

*	र	म	म	प	–	प	प	*	म	प	प	मध	पध	मग	र
*	स्वा	र	थ	के	ऽ	स	ब	*	मिं	त्र	तु	म्हाऽ	ऽऽ	रेऽ	ऽ
*	म	म	म	ग	–	र	र	स	नृ	नस	र	–	–	स	नृ
*	मा	त	पि	ता	ऽ	सु	त	ना	री	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज़	रा

देखो चेतनवा·· ········ ···।

पापों में मनवा घूम रहा…!

पापों में मनुआ घूम रहा तेरा मोक्ष-गमन कैसे होय ?

पामर पीड़ित दीन जनों को सता-सता खुश होय ।
करता तो मधु मास भी रे मन कभी ना आवे तोष ॥

बोले झूँठ सदा बढ़-चढ़ कर खुश हो एक विशेष ।
निकले ना मुख से मन तेरे सत्य वचन कहीं कोय ॥

सब ही कामों में चोरी का करता काम कुयोग ।
झूँठे शासन से क्यों मनवा निज आत्मा दुखोय ॥

दूषित निज मानस अति करता सुन्दर नारी जोय ।
ब्रह्मचर्य व्रत खोयके रे मन सब ही व्रत दिये खोय ॥

कौड़ी-कौड़ी को भी जोड़े धरती दाबे-सोय ।
दान पुण्य करने से क्यों दूर भागे वश रोय ॥

खोटी संगत बैठ बढ़ावे राग-द्वेष नित होय ।
सत्संगति में कभी न बैठे भावे कड़ा लोय ॥

फल अच्छा जो चाहा चाहे बीज भी अच्छा बोय ।
मोक्ष 'अमर' को तभी मिलेगी जब होगा दिल पोष ॥

(कहरवा) मध्यलय

स्थाई—

														प	म
×				०				×				०		पा	ऽ
प	ध	ध	–	प	प	म	–	ग	–	ग	म	र	–	स	स
पों	ऽ	में	ऽ	म	नु	वा	ऽ	घू	ऽ	म	र	हा	ऽ	ते	रा
र	–	म	प	प	प	ध	न॒	प	–	–	–	–	–	प	म
मो	ऽ	क्ष	ग	म	न	कै	से	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य	पा	ऽ

पों में मनुवा घूम रहा, तेरा मोक्ष गमन कैसे होय ।

अन्तरा—

*	ग	ग	ग	ग	–	ग	र	स	र	र	ग	र	–	स	–
*	पा	म	र	पी	ऽ	ड़ि	त	दी	ऽ	न	ज	नों	ऽ	को	ऽ
न	सं	न	ध	प	न॒	ध	प	म	प	–	–	–	–	–	–
	ता	ऽ	स	ता	ऽ	खु	श	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य
न॒	न॒	न॒	–	न॒	–	न॒	ध	प	ध	ध	न॒	प	–	म	–
क	रु	णा	ऽ	तो	ऽ	अ	णु	मा	ऽ	त्र	भी	रे	ऽ	म	न
र	र	म	म	प	म	प	न॒	ध	प	–	–	–	–	प	म
क	भी	ऽ	न	आ	ऽ	वे	ऽ	तो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य	पा	ऽ

पों में मनुवा घूम रहा तेरा मोक्ष गमन कैसे होय ?
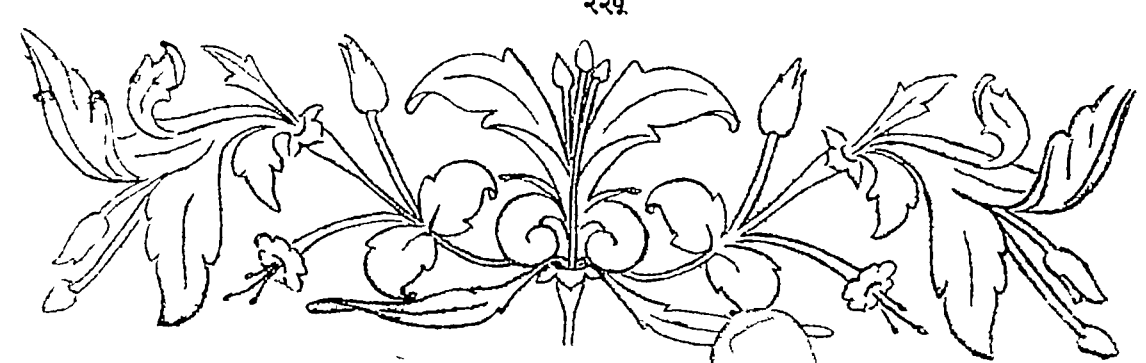
दिव्य जीवन !

प्रतिक्षण क्षीण जीवन में अमर सुख को बना देना
भविष्यत की प्रभा को अपने पद-चिन्हों बना देना।
दुखी-दलितों की सेवा में विनय के साथ जुट जाना
अखिल वैभव दिया जिसने दिया-जिसके लुटा देना॥

असत्पथ भूल करके भी कभी स्वीकार मत करना
प्रलोभन में न फँसकर सत्य-पथ पर धर कदम देना।
क्रमागत कुप्रथाओं का भ्रमों का मूढ़ताओं का
अपघाती निर्दय मानव जगत में से मिटा देना॥

जिनेश्वर बुद्ध हरिहर हो मुहम्मद हो या ईसा हो
सभी सत्य-व्रतों के आगे निज मस्तक झुका देना।
साहसाधिक प्रयत्नों से मृतक-सम देश वालों में
नया जीवन नया उत्साह नवयुग ला दिखा देना॥

अधिक क्या जन्म लेने का यह अन्तिम सार लेलेना
'अमर' निज मृत्यु के दिन शत्रुओं को भी रुला देना।

प्रतिक्षण क्षीण जीवन में………!

ताल कहरवा—

				स्थायी—												स
×				×				×				×				प
स	र	मृ	स	र	—	—	र	र	म	पधु	मप	ग	—	—	म	
ती	ऽ	क्ष	ण	क्षी	ऽ	ऽ	ण	जी	ऽ	वऽ	नऽ	मैं	ऽ	ऽ	अ	
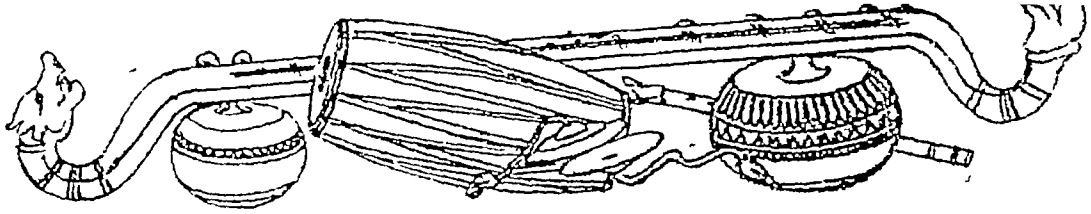
र	स	नृ	स	र	–	–	र	रग़	मग़	र	ग़	स	–	–	स
म	र	खु	द	को	ऽ	ऽ	व	नाऽ	ऽऽ	दे	ऽ	ना	ऽ	ऽ	भ

विऽप्यत की प्रजा''' (इस पक्ति को भी पहली पक्ति के समान गाइये)

					अन्तरा—										प दु
प	–	ध	नु	स	–	–	नु	ध	प	ध	नु	स	–	–	स
खी	ऽ	द	लि	तों	ऽ	ऽ	की	से	ऽ	वा	ऽ	में	ऽ	ऽ	वि
नु	नु	ध	ध	*	ध	–	नु	(स)	–	नु	ध	प	–	–	प
न	य	के	ऽ	*	गी	ऽ	त	गा	ऽ	लें	ऽ	ना	ऽ	ऽ	वि
म	गु	र	र	*	र	–	गु	(म)	–	गु	र	स	–	–	स
न	य	के	ऽ	*	गी	ऽ	त	गा	ऽ	लें	ऽ	ना	ऽ	ऽ	अ

खिल वैऽभव ' 'लुटा देना । यह पक्ति भी "प्रतीक्षण क्षीण " ' ''''' बना देना" की तरह कही जायगी । शेष अन्तरे भी इसी प्रकार कहिये ।
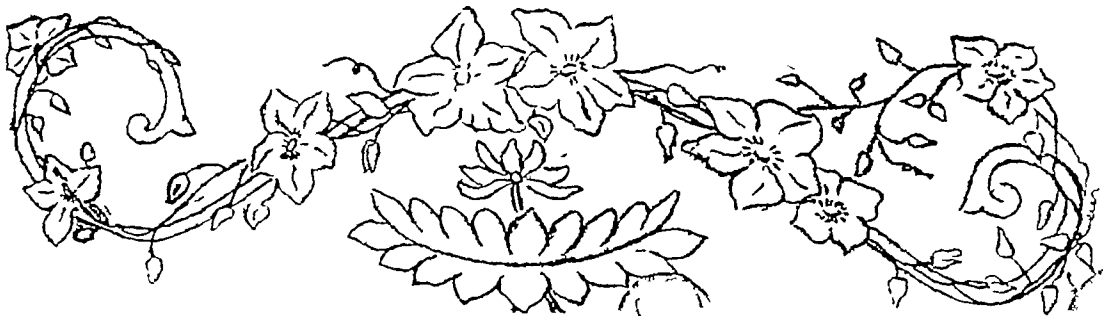
वृक्षों से शिक्षा !

क्या-क्या सत्यता जीवन में वृक्ष तुम्हें सिखलाते !

अपने-अपने मौसम पर जब वृक्ष खूब फल लाते
छोड़ अकड़पन नम्र-भाव से नीचे को झुक जाते।
मार मार जब ढेले मानव चोट उन्हें पहुँचाते
तो भी वृक्ष हो प्रेम-भाव से मीठे फल बरसाते।
गर्मी सर्दी वर्षा सब कुछ हो सहिष्णु सह जाते
पर निज आश्रित जीवों को तो हरदम सुख पहुँचाते।
सदा दूसरों को फल देते स्वयं कभी नहीं खाते
दानवीरता और कृपणता साथ-साथ सिखलाते।
मित्रो! यदि तुम दुनियाँ में कुछ गौरव रखना चाहते
तो वृक्षों से शिक्षा ले लो 'अमर' सत्य बतलाते।

राग बिन्द्राबनी सारंग, ताल कहरवा

स्थाई—

														स	र
x				•				x				•		क्या	ऽ
(प)	–	–	–	–	–	–	–	•	र	म	र	स	–	स	र
क्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	•	स	ऽ	त्य	ता	ऽ	जी	ऽ

न	स	स	–	–	–	–	–	प	–	ऩ	न	स	–	र	र
व	न	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वृ	ऽ	न्द	तु	म्हैं	ऽ	सि	ख
न	स	र	म	प	न॒	म	प								
ला	ऽ	ते	ऽ	ऽ	ऽ	क्या	ऽ	क्या सत्य ..।							

अन्तरा—

म	म	प	–	न॒	प	न	–	स	–	स	स	न	स	स	स
अ	प	ने	ऽ	अ	प	ने	ऽ	मो	ऽ	स	म	प	र	ज	व
न	–	स	स	–	स	स	स	न	स	र	स	न॒	न॒	प	प
वृ	ऽ	न्द	खू	ऽ	व	फ	ल	जा	ऽ	ते	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	प	स	स	न॒	प	म	न॒	प	म	र	–	स	न	स
छो	ऽ	ड़	क	ड़ा	ऽ	प	न	न	ऽ	प्र	भा	ऽ	व	से	ऽ
प	–	न	–	स	–	र	र	न	स	र	म	प	न॒	म	प
नी	ऽ	चे	ऽ	को	ऽ	झु	क	जा	ऽ	ते	ऽ	ऽ	ऽ	क्या	ऽ

नोट—शेष अन्तरे भी इसी प्रकार बजेंगे।

——